रमलनवरत्न

॥ श्रीः ॥

१७

रमलनवरत्न

सीतारामसूनुपरमसुखोपाध्याय रचित, श्रीरंगलाल विशदीकृत, टीहरीगढवालनिवासीज्योतिर्वित्पण्डित महीधरशर्मा दानाधिकारी कृत-

भाषाटीकासहित ।

रमलदानियाल भाषा.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

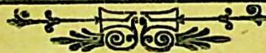
मालिक-" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " स्टीम् प्रेस,

कल्याण-मुंबई.

संवत् १९८९, शके १८९०



मुद्रक और प्रकाशक–
गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
मालिक–"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्–प्रेस, कल्याण–मुंबई.



श्रीः ।

अथ रमलनवरत्न विषयानुक्रमणिका ।

इतिरमलनवरत्नानुक्रमणिका।

रमलप्रश्नावली–अनुक्रमणिका।

इतिरमलप्रश्नावल्यनुक्रमणिकासमाप्ता ।

अथ रमलदानियाल.

इति रमलदानिथालअनुक्रमणिका समाप्ता ।

श्रीगणेशाय नमः ।

रमलनवरत्न ।

भाषाटीकासमेत ।



यस्य प्रसादमधिगम्य सुराः समस्तास्तिष्ठन्ति सद्मसु निजेषु गतारिशंकाः । ध्यायन्ति यं मुनिगणाः प्रणमामि शश्वल्लंबोदरं सकलविघ्नविनाशहेतुम् ॥ १ ॥

यस्याङ्घ्रिश्रीः सुश्रियं संतनोति तं श्रीनाथं श्रीगणेशं च नत्वा ।
भाषां कुर्वे खेमराजाज्ञयाङ्करत्नस्य प्रीत्या धरांतो मही सन् ।

जिस (श्रीनाथ) लक्ष्मीपति विष्णु यद्वा निज गुरुकी (चरणलक्ष्मी) पादपद्मशोभा संसारमें मङ्गल यद्वा ऐश्वर्य शोभा भलेप्रकार विस्तारित करती है ऐसे निजेष्टको तथा विघ्नविनाशक गणेशजीको भी नमस्कार करके (सन्) साधु मैं महीधर नामा "टीहरीगढवाल निवासी" श्रीसेठ खेमराजजीकी आज्ञासे रमलके नवरत्नग्रंथकी भाषाटीका करताहूँ—

टीका—ग्रंथकर्ता निर्विघ्नतापूर्वक ग्रंथसमाप्त्यर्थ अपने इष्ट देवताको प्रणाम करता है कि, जिसके प्रसाद पायके समस्त देवता दानवादि शत्रुओंका भय दूर करके अपने २ (स्थान) अधिकार वा लोकोंमें स्थित रहते हैं और मुनिजन अपने तपसिद्ध्यर्थ जिसका ध्यान करते हैं ऐसे (लंबोदर) गणेशको मैं ग्रंथकर्त्ता ग्रंथरचनामें विघ्नविघातार्थ वारंवार प्रणाम करताहूँ ॥ १ ॥

वाराणसीनृपतिगौतमवंशमुख्यबलवंतसिंहसचिवादवसानासिंहात् ॥ लब्धात्मवृत्तिपरमाद्यसुखः सनाढ्योरम्लङ्करत्नमकरोन्निवसन्नवन्त्याम् ॥ २ ॥

टीका—श्रीकाशिराजबलवंतसिंह (जो गौतमऋषिके वंशमें मुख्य हैं) का मंत्री तिन अवसानसिंहसे पाई है आजीविका जिसने

ऐसा अवंतिदेशमें वसताहुआ सनाढयकुलोद्भव परमसुखनामा पण्डितने नवरत्ननामा रमलग्रन्थ बनाया ॥ २ ॥

तदस्त्यशुद्धं नितरां समंतान्नतत्रविद्वज्जनचित्त मोदः ॥ विज्ञार्थितः संप्रति तस्य शुद्धचैतद्रङ्ग लालो विशदीकरोति ॥ ३ ॥

टीका--वह ग्रन्थ सब जगह अत्यर्थ अशुद्ध है उसमें विद्वानोंका चित्त प्रसन्न नहीं होता तब इस समय विद्वज्जनोंने उसके शुद्ध करनेके हेतु प्रार्थित किया गया ऐसा रंगलालनामा उस नवरत्नको प्रगट करता है ॥ ३ ॥

अथ तावन्निर्मितनवरत्नानां नामानि क्रमं चाह ।

संज्ञाबलाबलदलोपकराणिमूकप्रश्नोतराऽवधि कमुष्टिहराख्यबंधाः॥४ संवत्फलंचनवरत्नमिदं मनोज्ञंस्वान्तेचमत्कृतिकरं भुविसज्जनानाम् ॥ ५ ॥

टीका--अब ग्रंथकर्ताके बनाये नवरत्नोंके नाम एवं क्रमभी कहतेहैं कि (यहां रत्नसंज्ञक अध्याय हैं) प्रथम संज्ञा रत्न है, दूसरा बलाबल, तीसरा प्रश्नोपकरण "प्रश्नके साधन बतानेवाला" चौथा प्रश्नकहना, पाँचवाँ (अवधि) मियाद बताना, छठा मुष्टिगतद्रव्य बताना, सातवाँ (मूकप्रश्न) बेप्रकट किये प्रश्न बताना, आठवाँ चोरका नाम बताना, नवम वर्षपत्र बनाना, इन नौरत्नोंसे यह ग्रंथ मनोज्ञ तथा संसारमें सज्जनोंके मनमें चमत्कार करनेवाला है॥४।५

कृत्वास्वकंठगमसुंनवरत्नसंघंप्रोतंस्वबुद्धिव्रतती प्रसरप्रतानैः ॥ संप्राप्तभूरिमहिमामलकीर्तिछत्रो विद्वान्विभातुबुधराजसभास्वभीक्ष्णम् ॥ ६ ॥

टीका--इस नवरत्नके समूहको अपनी बुद्धिलताके विस्तारित

सूत्रमें ग्रथित करके अपने कंठमें धारणकरके अर्थात् बुद्धिसे विचारपूर्वक कंठोपस्थित करके विद्वान् बडी महिमा पायके निर्मल कीर्तिरूपी छत्र धारण करके पंडित राजसभामें वारंवार शोभायमान होवै ॥ ६ ॥

नवरत्नमदोतिगोपनीयं नहि देयं कुहचित् सुदुर्जनेभ्यः ॥ न गुरुद्विजदेवनिंदकाय नाहिनष्टाय वदेदिदंसुगोप्यम् ॥ ७ ॥

टीका—यह नवरत्न अतिगुप्त रखनेयोग्य यद्वा अतिरक्षा करनेयोग्यहै दुर्जनोंको कदाचित् भी न देना, तथा गुरु ब्राह्मण और देवता की निंदा करनेवालेको तथा, नष्टबुद्धि, नास्तिक, नष्टधर्म कर्मवालेकोभी सुगोप्य यह नवरत्न न कहना ॥ ७ ॥

अथास्मिन् शास्त्रे पाशकप्राधान्यात् प्रथमं पाशकनिर्माणविधिरुच्यते ।

चरस्वक्षंगुरुसायनेसुललितंस्निग्धंरवौमेषगेकृत्वो र्ध्वेश्रुतिशून्यलक्षितमधः शून्यद्वयाङ्काङ्कितम् । पार्श्वद्येकखचिह्नितंव्ययनभानौत्वचतुष्केश्लथंप्रा स्तलोहशलाकयोरथचतुरस्त्रात्मिकेभावयेत् ॥ ८ ॥

टीका—अब इस रमलशास्त्रमें पाशेकी प्रधानता होनेसे पहिले पाशा बनानेकी विधि कही जातीहै कि, सायन सूर्य मेष राशि पर जिसदिन आवै अर्थात् रा० अं० क० वि० स्पष्टसूर्य उस दिन होताहै जिस दिन दिनरात्रि चैत्रके महीनेमें बराबर हों उस दिन पाशा बनावै. किसीग्रंथमें अष्टधातुका बनाना लिखाहै, चतुरस्र चौपहल ८ टुकडे भारी और सुहावने चिकने बनायके ऊपरके तर्फ ४ बिंदु नीचेके ओर २ बिंदु और बगलोंमें ३–३ बिन्दु बनावै ऐसे आठों

ऐसा अवंतिदेशमें वसताहुआ सनाढ्यकुलोद्भव परमसुखनामा पण्डितने नवरत्ननामा रमलग्रन्थ बनाया ॥ २ ॥

तदस्त्यशुद्धं नितरां समंतान्नतत्रविद्वज्जनचित्त मोदः ॥ विज्ञार्थितः संप्रति तस्य शुद्ध्यैतद्रङ्ग लालो विशदीकरोति ॥ ३ ॥

टीका--वह ग्रन्थ सब जगह अत्यर्थ अशुद्ध है उसमें विद्वानोंका चित्त प्रसन्न नहीं होता तब इस समय विद्वज्जनोंने उसके शुद्ध करनेके हेतु प्रार्थित किया गया ऐसा रंगलालनामा उस नवरत्नको प्रगट करता है ॥ ३ ॥

अथ तावन्निर्मितनवरत्नानां नामानि क्रमं चाह ।

संज्ञाबलाबलदलोपकराणिमूकप्रश्नोतराऽवधि कमुष्टिहराख्यबंधाः॥४ संवत्फलंचनवरत्नमिदं मनोज्ञंस्वान्तेचमत्कृतिकरं भुविसज्जनानाम् ॥ ५ ॥

टीका--अब ग्रंथकर्ताके बनाये नवरत्नोंके नाम एवं क्रमभी कहतेहैं कि (यहां रत्नसंज्ञक अध्याय हैं) प्रथम संज्ञा रत्न है, दूसरा बलाबल, तीसरा प्रश्नोपकरण " प्रश्नके साधन बतानेवाला " चौथा प्रश्नकहना, पाँचवाँ (अवधि) मियाद बताना, छठा मुष्टिगतद्रव्य बताना, सातवाँ (मूकप्रश्न) बेप्रकट किये प्रश्न बताना, आठवाँ चोरका नाम बताना, नवम वर्षपत्र बनाना, इन नौरत्नोंसे यह ग्रंथ मनोज्ञ तथा संसारमें सज्जनोंके मनमें चमत्कार करनेवाला है॥४।५

कृत्वास्वकंठगममुंनवरत्नसंघंप्रोतंस्वबुद्धिव्रतती प्रसरप्रतानैः ॥ संप्राप्तभूरिमहिमामलकीर्तिछत्रो विद्वान्विभातुबुधराजसभास्वभीक्ष्णम् ॥ ६ ॥

टीका--इस नवरत्नके समूहको अपनी बुद्धिलताके विस्तारित

सूत्रमें ग्रथित करके अपने कंठमें धारणकरके अर्थात् बुद्धिसे विचारपूर्वक कंठोपस्थित करके विद्वान् बडी महिमा पायके निर्मल कीर्तिरूपी छत्र धारण करके पंडित राजसभामें वारंवार शोभायमान होवै ॥ ६ ॥

नवरत्नमदोतिगोपनीयं नहि देयं कुहचित् सु
दुर्जनेभ्यः ॥ न गुरुद्विजदेवानिंदकाय नहिनष्टाय
वदेदिदंसुगोप्यम् ॥ ७ ॥

टीका—यह नवरत्न अतिगुप्त रखनेयोग्य यद्वा अतिरक्षा करनेयोग्यहै दुर्जनोंको कदाचित् भी न देना, तथा गुरु ब्राह्मण और देवता की निंदा करनेवालेको तथा, नष्टबुद्धि, नास्तिक, नष्टधर्म कर्मवालेकोभी सुगोप्य यह नवरत्न न कहना ॥ ७ ॥

अथास्मिन् शास्त्रे पाशकप्राधान्यात् प्रथमं पाशकनिर्माणविधिरुच्यते ।

अस्त्रक्षंगुरुसायनेसुललितंस्निग्धंरवौमेषगेकृत्वो
र्ध्वेश्रुतिशून्यलक्षितमधः शून्यद्वयाङ्काङ्कितम् ।
पार्श्वद्येकखचिह्नितंव्ययनभानौत्वचतुष्केश्चथंप्रा
स्तालोहशलाकयोरथचतुस्तस्त्रात्मिकेभावयेत् ॥ ८ ॥

टीका—अब इस रमलशास्त्रमें पाशेकी प्रधानता होनेसे पहिले पाशा बनानेकी विधि कही जातीहै कि, सायन सूर्य मेष राशि पर जिसदिन आवै अर्थात् रा० अं० क० वि० स्पष्टसूर्य उस दिन होताहै जिस दिन दिनरात्रि चैत्रके महीनेमें बराबर हों उस दिन पाशा बनावै. किसीग्रंथमें अष्टधातुका बनाना लिखाहै, चतुरस्र चौपहल ८ टुकडे भारी और सुहावने चिकने बनायके ऊपरके तर्फ ४ बिंदु नीचेके ओर २ बिंदु और बगलोंमें ३–३ बिन्दु बनावै ऐसे आठों

खण्डोंको बनायके दो शलाका लोहेकी बनायकै एक एकमें चार चार टुकड़े ऐसे पिरोवै कि, निकलें नहीं परंतु परस्पर घूमते चलते अर्थात् ढीलेरहें ऐसा पाशा बनायके प्रथम हाथमें लह्यान शकल बनायके पाशा फेंकनेका नियम है ॥ ८ ॥

पाशकस्वरूपम् ।								
o	o	oo	o	लह्यान	oo	o	o	o
o	oo	oo	oo		oo	oo	o	oo

अथ पाशक्षेपणकालमाह ।

चंद्रोदयाद्दहनिवह्निशराष्टविश्वेशक्रेधृतिप्रकृति वेदकराष्टितत्त्वे ॥ भौमेभृगौरविसुतेऽथचसार्द्ध यामादूर्ध्वंदिवानिशिचपाशयुगंक्षिपेज्ज्ञः ॥ ९॥

टीका-प्रथम पाशा फेंकनेका समय कहते हैं कि, हिजरीसन् (मुसलमानी तारीख) चाँदकी गिनती की ३। ५। ८। १३। १४। । १८ । २१ । २४ । १६ । २५ । इन तारीखोंमें तथा मंगल, शुक्र, शनि वारमें डेढपहर दिनसे ऊपर और रात्रिमें भी विद्वान् प्रथम पाशा फेंके ॥ ९ ॥

अथ पाशकक्षेपणविधिः ।

प्रातः स्नात्वा शुद्धवस्त्रावृतोज्ञः स्वेष्टं ध्यात्वा संस्मरन् गौरवांघ्री ॥ लह्यानं प्राक् पाशयुग्मे निधाय मंत्रं जप्त्वा सप्तवारांक्षिपेद्वै ॥ १० ॥

टीका-अब पाशा फेंकनेकी विधि कहतेहैं कि, प्रातःकाल स्नानकरके शुद्ध वस्त्र पहनके विद्वान् अपने इष्टदेवताका ध्यान करके तथा गुरुके चरणकमलोंका स्मरण करता हुआ दोनों

पाशकोंमें प्रथम अपने हाथमें ध्यान शकल ☰ बनायके सातवार मंत्र जपके पाशा पट्टीमें फेंकै ॥ १० ॥

तत्रजपनीयमंत्रमाह ।

ॐ नमोभगवतिकूष्माण्डिनिसर्वकार्यप्रसाधिनिस र्वनिमित्तप्रकाशिनिएहि २ त्वर२वरंदेहिहिलि२ मा तङ्गिनिसत्यं ब्रूहि२स्वाहा ॥

यहमंत्रपाशामंत्रनेका है ॥

अथ प्रस्तार प्रकारमाह ।

पतितपाशकयुग्मयुतौ पुरः स्थितसुधांशुखतोविलि खाशुखम् ॥ खयुगतस्तुतिरोगतरेखिकां पुनरमुं विधिमूर्ध्वमुखात्कुरु ॥ ११ ॥ खण्डमेकं विधाया दावेकंकृत्वाचतुष्टयम् । तिर्यक्क्रमेणतेभ्यश्चपंच माद्वेदसंख्यकम् ॥ १२ ॥ रेखयोः शून्ययोर्योगे रेखांकुर्यात्खरेखयोः । शून्यमेवं भवेद्योगः सर्व त्रैवंयुतिं करु॥ १३ ॥ आद्यद्वितीययोरङ्कंदशमांत्रि चतुर्थयोः ॥ पंचमेद्विषतोलाभ व्ययंचनगनागयोः ॥ १४ ॥ नवांशयोर्विश्वमथायरिष्कयोर्योगेनचैन्द्रं च तिथिस्तयोर्भवेत् ॥ तन्निघ्नमाद्येनचषोडशंदलं प्रस्तारएवंयवनैः पुरोदितः ॥ १५ ॥

टीका–अब (प्रस्तार) जायचा बनानेकी विधि कहतेहैं जब पट्टीमें पाशा फेंक दिया तब दोनोंको बराबर मिलायके रक्खे तब अपने दाहिने ओरके प्रथमखण्डके ऊपरका बिन्दु लिखे तब नीचेका लिखे ऐसेही आठों खण्डोंके बिन्दुओंको लिखे इसमें इतना विशेष है कि, एक बिन्दुका बिन्दु और दो बिन्दुकी एक

आडी(–)रेखा लिखे ॥ ११ ॥ प्रथम खण्डका ऐसा चिह्न करके अन्य ३ खण्डोंके भी ऐसेही करे ऐसे ४ खण्ड होगये जैसे प्रथम पाशा ऐसा पड़ा तो प्रथम खंडमें ऊपरके २ बिंदुकी रेखा दूसरे पाशेमें प्रथम खंडके ऊपर २ बिंदुकी रेखा नीचे एक बिन्दुका बिंदु भया तब चार मिलके एक सकल ≡ अंकीशहुई ऐसेही चारों खंडोंके रूप बनायेते ऐसा स्वरूप भया अब चारोंके ऊपर ऊपरके पहिले लेके पंचम ⁝ अतबेशः दूसरे दूसरे लेके छटा ≡ अंकीश तीसरा तीसरा लेके ≡ अंकीश और चौथा २ लेके ⁝ फरहा ऐसे ४ शकल और भये ये सब ८ हुए ॥ १२ ॥ १३ ॥ इनकानियमहैकि, जहाँ रेखा रेखामिलाई जावे वहाँरेखा और बिंदु बिंदुसे भी रेखा होतीहै बिंदु रेखाके मेलसे, बिंदु होताहै ऐसा सर्वत्र योगकरना ॥ १४॥ अब १ । २ शकल ≡ ⁝ मिलायके ≡ लह्यान नवम शकल हुई ऐसेही ३ । ४ शकल ≡ ⁝ मिलायके ⁝ अतबे दाखिल दशम शकल भई ५।६ ⁝ ≡ से ⁝ इज्जतमा ग्याहर्वी ७।८ ≡ ⁝ के योगसे ⁝ नस्रुत-खारिज बारहवीं ९।१० ≡ ⁝ के मेलसे ⁝ तारीखतेरहवीं ११ । १२ ⁝ ⁝ से ⁝ कब्जुल खारिज चौदहवीं १३ १४ ⁝ ⁝ से ⁝ कब्जुल दाखिल पंद्रहवीं ऐसेही १५।१ ⁝ ≡ से ⁝ हुम्रा सोलहवीं शकल हुई इस प्रकार प्रस्तार यवनोंने पहिले कहा है क्रम चक्रमें देखो ॥ १५ ॥

उदाहरण.

४	३	२	१
० ०	० ००	० ००	०० ००
० ०	०० ००	०० ०	०० ०

सकलरूपम्.

४	३	२	१
....	≡	⁝	≡
तरकि	लह्या	उक्क	अंक

प्रस्तारोदाहरणम् ।

८	७	६	५	४	३	२	१
⁝	≡	≡	⁝	⁝	≡	⁝	≡
१२ ⁝		११ ⁝			१० ⁝		९ ≡
१४ ⁝		(१५ ⁝)			१३ ⁝		१६ ≡

अथगृहखंडसंख्यानियमानाह ।

अग्निवातांविलाऊर्ध्वादधः क्रमगताः क्रमात् ।
व्युत्क्रमाच्चापितद्भेदाः षोडशैवगृहार्द्धकम् ॥ १६ ॥

टीका–अब १६ घरोंके खंड संख्यानियम कहतेहैं कि, खंडोंके ऊपर चिह्न अग्नितत्त्व दूसरा वायुतत्त्व तीसरा जलतत्त्व चौथा पृथ्वीतत्त्व होतेहैं इन्हीको पारशीमें आतशी, खाकी, आबी, बादी भी कहते हैं ऊर्ध्वाधःक्रम कहा है परंतु उनके कभी उलटे क्रमसेभी गणना होतीहै जिससे १६ भेद और कभी २ भेद भी होतेहैं ॥ १६ ॥

अथ खंडानां नामानि शकुनक्रमश्च ।

लह्यान्कञ्जुलदाखिलाख्यकञ्जुल् खारिज्जमाता हयाः फर्हाक्लांकिशहुम्रिकाश्चशकुनेचाग्रेवयाजा ह्वयम् ॥ नुस्रत्खारिजदाखिलाख्यअतवेखारिज् नकीचातवेदाखिलखण्डमिहेज्तमाश्चतारिखाः प्रोक्ताः क्रमेहेतुके ॥ १७ ॥

टीका– अब खंडोंके नाम और शकुनक्रम कहते हैं कि, प्रथम शकल लह्यान ☰ दूसरी कञ्जुल दाखिल ☰ तीसरी कञ्जुल खारिज ☰ चौथी जमात ☰ पंचमफरहा ☰ छठी उकला ☰ सातवीं अंकीश ☰ अष्टम हुम्रा ☰ नवम बयाज ☰ दशम नुस्रुतखारिज ☰ ग्यारहवीं नुस्रुदाखिल ☰ बारहवीं अतबेखारिज ☰ तेरहवीं नकी ☰ चौदहवीं अतबे दाखिल ☰ पंद्रहवीं इज्जतमा ☰ सोलहवींतारीख ☰ ये सोलह शकल हैं यह क्रमोंमसे मुख्य शकुनक्रम है अन्य क्रम आगे चक्रमें लिखेंगे ॥ १७ ॥

अथ शकलरूपाणि ।

लह्या ☰ नमुच्चैर्गतखंत्रिरेखंव्यस्तांकि ☰ शं कञ्जुलदाखिलंस्यात् । रेखाखयुग्मं ☰च तथा

विलोमंतत्खारिजं ⚍ रेखयुगं जमातं ☰ ॥ १८॥
व्यस्तंतरीका ⁝ अयुगंचरेखाशून्यं ⚎ चफर्हान
कि ⚎ तद्विलोमम् । उक्तांखमध्यास्थितरेखयुग्मं
⚌ व्यस्तेऽज्तमा ⚍ रेखनभोद्विरेखं ⚍ ॥ १९ ॥
हुम्रिकाप्यस्तमेतद्बयाज ☰ द्विखंरेखिका ⚌
युङ्नुस्रत्खारिजं नुस्रुद्दाखिलं ⚎ व्यस्तमुच्चै
स्त्रिखा ⚍ प्रांत्यरेखातवेखारिजाख्यंभवेत् ॥ २०॥
अतबतुद्दाखिलं ⚎ व्यस्तमेतन्मतंरूपमुक्तंमया
पूर्वधीरोदितम् ॥ २१ ॥

टीका-ऊपर शून्य नीचे तीन रेखा ☰ लह्यान शकल इसका विपरीत ☰ अंकीश रेखा शून्य रेखा शून्य ⚎ कब्जुल दाखिल इसका विपरीत ⚍ कब्जुलखारिज चाररेखाओंकी जमात ☰ चार शून्योंकी तरीख ⁝ दो शून्यरेखाशून्य ⚎ फरहा इससे विपरीत ⚍ नकी दो रेखा शून्योंके बीच उकला ⚌ इससे विपरीत ⚍ इज्जतमा रेखा शून्य दो रेखा हुम्रा ⚍ इससे विपरीत बयाज ☰ दो शून्य दो रेखानुस्रत्खारिज ⚌ इससे विपरीत नुस्रुतदाखिल ⚎ तीन शून्य एक रेखा अतवेखारिज ⚍ विपरीत अतवेदाखिल ⚎ इस प्रकार १६ शकलोंके रूप पूर्वपंडितोंके बताये मैंने कहे हैं ॥ १८-२१ ॥

अथ शकलानां खारिजादिसंज्ञा ।

यस्य चोर्ध्वाधरौशून्यरेखान्वितौ खारिजं दाखिलं तद्विलोमाद्भवेत् ॥ रेखयासंयुतौतौयदासावितंतद्वि लोमान्वितौमुन्कलीवं भवेत् ॥ २२ ॥

टीका–जिनके ऊपर बिन्दु नीचे रेखाहैं वे खारिज ऊपररेखा नीचे बिन्दुवाले दाखिल ऊपर नीचे रेखावाले सावित ऊपर नीचे बिन्दु-वाले मुन्कलीव संज्ञक होते हैं ॥ २२ ॥

लह्यानातवखारीजनुस्रुत्कञ्जुलखारिजाः पुंखारि
जाद्युवीर्याश्चक्रमतः स्युःशुभाशुभाः ॥२३॥ क
ञ्जुद्दाखिलअङ्कीशावतबेनुस्रुदाखिलौ ॥ योषिन्नि
शाबलाशेषाविनांकीशंशुभास्त्रयः ॥ २४ ॥ जमा
तेज्जत्तमाहुम्रावयाजासाविताह्वयाः ॥ क्लीबाः सं
ध्याबलामध्याबशुभश्च शुभस्तथा ॥ २५ ॥
पुंक्लीबःस्याद्धुम्रा स्त्रीक्लीबंस्याद्यस्तम् ॥२६॥
नकीतरीकफरहोक्कामुन्क्लीबसंज्ञकाः ॥ संध्यावे
लामध्यसंतः पुमान् फर्हाऽपरास्त्रियः ॥ २७ ॥

टीका--लह्यान, अतवंखारिज, नुस्रुतखारिज, कञ्जुलखारिज, पुरुषसंज्ञक हैं तथा खारिजहैं दिनमें बलवान् हैं और क्रमसे एक शुभ एक अशुभ है ॥२३॥ कञ्जुलदाखिल, अंकीश, अतवेदाखिल, नुस्रुतदाखिल स्त्रीसंज्ञक, रात्रि बली बाकी अंकीशको छोडके तीनों शुभ हैं ॥ २४ ॥ जमात, इज्जत्तमा, हुम्रा, वयाज, सावित संज्ञक, नपुंसक संध्यामें बली, मध्यमबली और क्रमसे शुभाशुभहैं ॥२५॥ हुम्रा पुरुष तथा नपुंसक है इसका विपरीत वयाज स्त्री और नपुं-सकहै ॥ २६ ॥ नकीतरीक, फरहा, उक्का, ये मुन्कलीव हैं तथा संध्या बली शुभ अशुभ कुछ नहीं मध्यम हैं इनमें फरहा पुरुष अन्य स्त्रीसंज्ञकहैं ॥ २७ ॥

लह्यानातवखारीजनुस्मुतकब्जुलखारिजाः ॥ आग्ने-
यांदिशिपूर्वस्यांबलाढ्याःपीतवर्णकाः ॥ २८ ॥ हु
म्राफरहेज्तमाआतवेदाखिलंतथा ॥ वायवीयाश्च
वारुण्यांबलाढ्यारक्तवर्णकाः ॥ २९ ॥ वयाजाख्यु
नकीनुस्रुद्दाखिलंतरीखाभिधम् ॥ आप्यं च बल
संयुक्तमुत्तरे श्वेतवर्णकम् ॥ ३० ॥ कब्जुद्दाखिल
अङ्कीशोकलाख्याश्चजमातकम् ॥ पार्थिवं दक्षिणा
शायांबलाढ्यंश्यामवर्णकम् ॥ ३१ ॥

टीका--लह्यान, अतवेखारिज, नुस्रुत्खारिज, कब्जुलखारिज, आग्नितत्व पूर्व दिशामें बली पीले रंगके हैं. ॥२८॥ हुम्रा, फरहा, इज्जत्तमा, अतवेदाखिल, वायु तत्व पश्चिम दिशा बली लालरंगके हैं॥२९॥ बयाज, नकी, नुस्रुद्दाखिल, तरीक, जलतत्व उत्तर दिशा बली श्वेतरंगके हैं ॥३०॥कब्जुलदाखिल, अंकीश, उक्ला, जमात, पृथ्वीतत्ववाले दक्षिणदिशा बली श्याम रंगके हैं ॥ ३१ ॥

नुस्रुद्दाखिललह्यानौचापमीनौचगौरवौ॥ नुस्रत्खारि
जंकब्जुद्दाखिलंचहरीरवौ ॥ ३२ ॥ जमातेज्जतमेयु
ग्मंकन्यज्ञेयेबुधस्यच ॥ तरीकाख्यवयाजाख्यौकु
लीरौचंद्रदैवतौ ॥ ३३ ॥ फर्हातवेदाखिलंचतुलागा
वौचभार्गवौ ॥ हुमराचनकीशेयोभौमेयौमेषवृश्चि
कौ॥३४॥उक्लांकीशनकीनक्रकुंभौज्ञेयौतथाशनिः॥
कब्जुलातवखोरीजौराहुकेत्वोर्घटेणकौ ॥ ३५ ॥
मुन्कीवंचरसंज्ञंस्यात्स्थिरंस्यात्साबितंदलम्॥द्विस्व
भावंद्धिधैवंस्यात् खारिजंचापिदाखिलम् ॥ ३६ ॥

टीका–नुक्कुदाखिल ब्यानकी ९।१२ राशि बृहस्पति स्वामी है तथा नुक्कुत्खारिज, कब्जुलदाखिल ५ राशि सूर्यस्वामी ॥३२॥ जमात इज्जतमा ३।६ राशि बुध स्वामी तरीक वयाजके ४ राशि चंद्र स्वामी ॥ ३३ ॥ फरहा, अतवेदाखिल ७।२ राशि शुक्रस्वामी हुम्रा, नकी, १।८ राशि भौम स्वामी ॥३४॥ उक्ला, अंकीश, नकी १०। ११ राशि शनिस्वामी, कब्जुलखारिज, अतवेखारिज १०। ११ राशि राहु केतु स्वामी हैं ॥३५॥जो शकल मुन्कीब है उनकी चरसंज्ञा हैं साबित स्थिर दल होते हैं द्विस्वभाव दोनहूँ प्रकारके खारिज आर दाखिलभी होते हैं ॥ ३६ ॥

अथ शकलानांजातिवर्णस्वभावाकृत्यादिस्वरूपाणि ।

मुखजगौरसुधर्मकृतीष्टवाङ्मधुरभुक्तनुकण्ठसुनलिहृक् ॥ अमरपाठतपः स्थितिमाणिकंतनुसुगंधिमवेहिदलादिमम् ⸗ ॥ ३७ ॥ क्षत्रः कब्जुलदाखिलोमधुरगीर्गोधूमभाः श्यामदृक्दक्षोविक्रयशिल्पकर्मसुसुरागारः सुरथ्यापणः ॥ मध्योच्चोमधुराशनश्चधनपोद्रव्यालयः स्यात्सुधीः माणिक्य धनकमठोतिचतुरः सौगन्धिकश्चाकृतिः ⸗ ॥ ३८ ॥ म्लेच्छोऽव्रणोऽतिनयनोऽतिरवोऽनयींचर्पीतासितोतिपिशुनोऽशुभतुंगदंतः ॥ तिक्तप्रियोतिमलिनालयदेहवासाः निंद्योश्मयुग्मवनिकब्जुलखारिजार्धम् ⸗ ॥३९॥गोधूमभाः संधि सुवर्णचित्रोशूद्रोगुणीकृष्णदृगास्यदीर्घः ॥

मिष्टाशीहिंस्रव्ययिवैद्यवंद्यो गारुत्मकं पाठगृहं जमातम् ☰ ॥ ४० ॥

टीका–अब शकलोंके जाति, रंग, स्वभाव, आकार आदिस्वरूप कहते हैं ॥ लह्यान ☰ शकल, ब्राह्मण, गौरवर्ण, धर्म करनेवाला, मीठीवाणी, मीठाभोजन कंठवाला, नीलेनेत्र, देवताओंका पाठ तपस्या करनेवाला, स्थिर कार्यकर्त्ता, सुगंधि प्रिय है ॥३७॥ क० दा० ☰ क्षत्रिय मीठीवाणी, गेहूँकासा रंग, श्याम नेत्र, चतुर, सौदा बेचनेवाला, शिल्पविद्या जाननेवाला देवतामंदिर बाजार दुकानोंमें रहनेवाला मध्यम ऊँचा मीठाभोजन, धनपति, खजानची, बुद्धिमान् माणिक्य धातु धनके कामोंमें निपुण अति चतुर सुगंधिवाला, कुत्तेका आकार ॥ ३८ ॥ कब्जुलखारिज ☰ म्लेच्छ दागरहित, गहरे नेत्र बडाशङ्कवाला, न्यायवान् नहीं, पीत कृष्णरंग, चोर, अशुभ, ऊँचेदाँत, कटुभोजी, देह, घर, वस्त्र, मलिन, निंद्य, पत्थर सहित पृथ्वी तत्त्व, अर्द्धभाग ॥ ३९ ॥ जमात ☰ गेहूँकासा रंग, संध्याबली, सुवर्णधातु चित्रकारी, शूद्र, गुणवान्, कृष्णनेत्र, बडा मुख, मीठा खानेवाला, हिंसक, खर्च करनेवाला, वैद्यश्रेष्ठोंसे भी वंदनीय, गारुत्मक धातु पाठशालामें वास ॥ ४० ॥

फरहाख्यः सुभगोतिदीर्घदेहोगौराभोलिपिहास्यचित्तवृत्तिः ॥ भिन्नभ्रूः शुभलोचनोल्पकोष्ठोमुक्ताढ्यः शुभभूः सुमिष्टभुक्स्यात् ☰ ॥ ४१ ॥ कृष्णाङ्गः कृषिकारकोतिमलिनोव्यादीर्घदेहः श्रमी स्वल्पाक्षस्तमसावृतांबुपरिखाकारगृहः पैशुनः ॥ उक्लाख्यः ☰ कुशलश्चशाकविपणकृष्णात्मवाणात्मकः सालस्यः परिखागृहोगतमतिर्भारंवहश्चांत्यजः ॥ ४२ ॥

टीका-फरहा =: सुन्दर बडा लम्बा शरीर गौरवर्ण, लिखने तथा (ठट्टा) मसखरी करनेमें चित्तवृत्ति रहे भ्रुकुटि अलग २ हों, नेत्र सुहाउने, पेट छोटा, मोतियोंसे युक्त अच्छी भूमिमें रहे मीठा भोजनकरे॥४१॥ उक्ला =: श्याहरंग खेती करनेवाला अति मलिन लम्बाशरीर परिश्रम करनेवाला छोटेनेत्र तमोगुणसे युक्त जलकी शहरपनाह तथा कैदखानेमें रहनेवाला चोर शागभाजीकी दुकान करनेवाला काला शरीर बाणके समान आकार आलस्य युक्त सहर पनाहमें रहनेवाला बुद्धिहीन भार ढोनेवाला और चाण्डाल भी४२॥

म्लेच्छोंकीशो =: ऽतिकृष्णः कृषिकरणंतः कृष्णदृ ग्ग्रामवासोमिथ्याभाष्यल्पनेत्रः सुदृढनखरदश्चा म्लभुक्सालसः स्यात् ॥ दीर्घास्योगेहसेवी सुवि पुलनिनदो भीषणोनिर्दयश्च कृष्णाश्मायोतिदीर्घो विभतनुवदनोदास्यकृत्येतिदक्षः ॥ ४३॥ हुम्रा =: हरोनापितलोहकारकः क्षत्रौवृर्णीहेतिभिषक् समो च्चकः ॥ पीताल्पनेत्रः कलिकृद्विहिंसकोऽरण्यादि गस्तिक्तरसोबृहच्छिरः ॥ ४४ ॥ श्वेतोगौरः समुच्चा कृतिगमनमतिः सिद्धियुग्वर्तुलास्यः श्यामाक्षः प्रष्ठ भाषीसजलतरुलतास्थानवासः सुगंधिः ॥ मुक्ता ढ्यः स्फाटिकाढ्यः शुभललितरुचिर्दुग्धमिष्टान्न भुक्चदेवार्चासक्तचित्तो व्यवहृतिविभवः सौख्ययु क्तोबयाजः =: ॥ ४५ ॥ राजकीयः शुभोदीर्घच क्षुस्तनुः क्षत्रधर्मान्वितोगौरभाः स्वर्णहृत् ॥ माणि कस्वर्णरत्नापणी मिष्टभुक्सुस्वरः काश्यदोनुष्ठतुल

खारिजः ⚍ ॥४६॥ मुखजासिततपस्वीस्वर्णघृत्ता स्यदीर्घः प्रविततततनुनेत्रः सिंधुसेवी सुवासाः ॥ स्फटिकरजतकांतिः सद्भुजिः श्रेष्ठगंधिः श्रुतिविल सितचेतानुस्रुतुद्दाखिलं ⚎ स्यात्॥४७॥ विपिनागि रिसकूपोच्चाश्रितोदुर्गसद्मकृषिविवलसपीतः कृष्ण देहोव्रणांकः ॥ कपिलनयनरोमाम्लेच्छदीर्घः कुगं धिर्भवतिवसनमूर्णाचाऽतवेखारिज ⚏ स्य ॥ ४८॥

टीका–अंकीश ⚎ म्लेच्छ, अतिस्याहरंग, खेतीके काममें तत्पर, स्याहनेत्र, ग्रामवासी, झूठ बोलनेवाला, छोटेनेत्र, नखून तथा दांत मजबूत, थोडा भोजन करे, आलसी, बडामुख, घरका सेवन करनेवाला, बडा शब्द कहे, भयानक रूप, निर्दयी; काले पत्थर एवं लोहा धातु, बडा लम्बा शरीर और मुख कांतिहीन दस कर्म करनमें चतुर॥४३॥ हुम्रा ⚌ चोर;हजाम, लुहार,क्षत्रिय, शरीर, दागरहित, डंडा हाथमें, वैद्यविद्या जाननेवाला, सम तथा ऊंचा शरीर पीलारंग, छोटेनेत्र, कलह करनेवाला, जीवघाती, वन पर्वतादिकोंमें जानवाला, कडुआ रसखानेवाला, बडाशिर ॥ ४४ ॥ वयाज ⚎ श्वेतवर्ण, गौररंग, ऊंची आकृति, चलनेमें बुद्धिरहे, सिद्धिवाला, गोलमुख, कालेनत्र, मनोनुकूल वचन कहनेवाला, जलयुक्तस्थान, वृक्षलताओंके स्थानमें निवास करनेवाला, सुगंधि द्रव्य,मोती, स्फटिकसे युक्त,सुन्दर रमणीय कांति दूध तथा मिष्टान्न खानेवालाभी, देवताके पूजनमें आसक्तचित्त, व्यापरसे ऐश्वर्य पावे और सुखसे युक्त ॥ ४५ ॥ नुसुत्खारिज ⚍ राजाका आदमी शुभ, दीर्घनेत्र, दीर्घशरीर, क्षत्रियोंके धर्मसे युक्त, गौरवर्ण, सुवर्ण झारी, माणिक्य सुवर्ण रत्नोंकी दुकान करनेवाला, मीठा खाने-

वाला, धनमें श्रेष्ठ, और कांसी धातु देनेवाला ॥ ४६ ॥ नुसुदाखिल :- ब्राह्मण, श्वेतवर्ण, तपस्वी, सुवर्णधातु गोल और बडा मुख, शरीर और नेत्र बडे, समुद्रसेवी, अच्छे वस्त्रवाला, स्फटिक यद्वा चांदीके समान कांति, अच्छे पदार्थ खानेवाला, उत्तम सुगन्धधारी, वेदसे विराजमान चित्त ॥४७॥ अतबे खारिज :- वन पर्वत कूंआं ऊंची जगोंमें रहनेवाला, किलामें घर कृषिसे निर्बल, पीतरंग काला दद्द (खोट) दागयुक्त, नेत्ररोम भूरेरंग, म्लेच्छ, दीर्घ शरीर, दुर्गंधि, ऊन वस्त्र पहिने ॥ ४८ ॥

नकी :- गौरः क्षत्रःकृशतनुसुपीताल्पनयनःस
शास्त्रो मांसाशी हरितवसनोलोहितकचः॥भटः
स्थूलग्रीवःसातिमिरजलप्रांत्यवसतिः पराधीनो
हिंस्रोविततदशनोबालभृतकः ॥ ४९ ॥ सुदीर्घः
क्लिष्टांगः सुमुखभ्रकुटीभिन्नतिलयुक्सुवस्तूद्यत्प्रे
मातवदखिलमाकुंतिकगृहः॥सनीरेवृक्षौघेस्याकि
लवसातिः कांतनयनःसुगोधूमात्वासःसुललितत
नुर्भाग्यविभवः ॥ ५० ॥ नरेन्द्रलेखीगणकोगुण
स्पृहः सुलोचनः श्मश्रुमुखोऽद्रिधातुकः॥विचि
त्रवस्त्वंशुकपाठभूषितः शूद्रोमृदुर्लाजवृतीज्त
मा :- भवेत् ॥ ५१ ॥ वैश्यःसितासक्ततनुर्महा
द्यों दीर्घांगनेत्रश्चरराजगेहः ॥ मागींसहाम्ब्वद्रि
गइष्टभुक्स्यात् सुचारुवासास्तारिखंदलं च ॥५२॥

इति शकलस्वरूपस्वभावजात्यादयः ॥

टीका-- :- गौरवर्ण क्षत्रियजाति, कृशशरीर, पीले और छोटे नेत्र, शास्त्रसहित, मांसभक्षी, सबज रंगके वस्त्र, सुर्खकेश, योधा,

मोटीगर्दन अंधेरा, जलाशय और नगरके अंतमें वसनेवाला, पराया तावेदार जीवहिंसक बडे दांतवाला बालकोंके पालनेवाला ॥ ४९ ॥ लंबाशरीर कडे अंग, सुन्दर मुख और सजीली भ्रुकुटी अलग होरहा अंगजिससे ऐसे तिल चिह्नसे युक्त, अच्छीवस्तुवाला, प्रेममें तय्यार लुहार वा शस्त्रागारमें रहनेवाला अतवेदाखिल ⁝ शकल ॥ ५० ॥ इज्जतमा ⁝ राजाका लेखक; ज्योतिषी, गुणचाहनेवाला सुहाउने नेत्र दाढीवाला पर्वत धातु, अनेक रंगके वस्तु एवं वस्त्रधारी, पाठशालामें रहनेवाला, शूद्रवर्ण, कोमलस्वभाव लज्जायुक्त॥५१॥ तारीख वैश्यजाति, श्वेतवर्ण, शिथिल शरीर, बढपनवाला, प्रत्येक अंगोंमें विशेषता, नेत्र बडे, राजभवनमें रहनेवाला, चर, रास्ताचलने जलपर्वत चारी, उत्तम वस्तु भोगनेवाला, रमणीय वस्त्रपहिने द्विस्वभावभी है ॥ ५२ ॥

अथउम्महांतादिसंज्ञामाह ।

आद्यंमहान्तंचततोवनांतंमुन्नुल्लदातंचतथातृती
यम ॥ तुरीयमेषांचजवायदातंचतुश्चतुष्केष्वि
तिनामसंज्ञा ॥ ५३ ॥ आद्यंतुर्यसप्तमंदिग्मितंच
स्यादवतादंकेंद्रसंज्ञंतदेव ॥ द्विपंचनागेशमितं
चमायलं ज्ञेयंबुधैस्तत्खलुपणफराख्यम् ॥ ५४ ॥
तृतीयषष्ठांकदिवेशतुल्यमापोक्लिमंजायलसंज्ञ
कं च ॥ विश्वादिकस्यापि चतुष्टयस्य सदल्युतं
स्यादवतादसंज्ञम् ॥ ५५ ॥

टीका-अब उम्महांतादि संज्ञा कहते हैं, पहिला उम्महांत-दूसरा वनांत, तीसरा मुनुल्लदात चौथा जवायदात ये ४।४ घरोंकी संज्ञा

॥५३॥ प्रथम चौथा सप्तम दशम १।४।७।१० घर केन्द्र हैं इन्हीं को अवताद कहते हैं तथा २।५।८।११ पणफर एवं मायल संज्ञक पण्डितोंने जानने ॥ ५४ ॥ ऐसेही ३।६।९।१२ आपोक्लिम एवं मायल संज्ञक हैं अब शेष १३। १४। १५। १६ स्थानोंकी सदल एवं अवताद संज्ञाहै ॥ ५५ ॥

विश्वाष्टकंतनोरस्तशक्रंचधनसद्मनः ॥ सहजस्ये षुषट्कंचसुखस्यनृपसंख्यकम् ॥ ५६ ॥ पुत्रस्य नंददशमंरिपोश्च मदस्यलाभंव्ययभंचमृत्योः॥ शरेन्दुनन्दस्य रिपुः खभस्य लाभस्यकामोपिगजो व्ययस्य ॥५७॥ विश्वस्याद्यंशक्रगेहस्यवित्तंपंचेन्दोर्वानंदसंख्यंनृपस्य ॥ तुर्यं ज्ञेय साक्षिगेहं गृहाणां सर्वेषां स्यात्साक्षिगेहंशरेन्दुः ॥ ५८ ॥

इति श्रीरमलनवरत्ने संज्ञारत्नं प्रथमम् ॥ १ ॥

टीका--अब साक्षिस्थान कहते हैं कि १३।८।१।७।१४।२।३।५।६।४।१०।५।९।१०।६।७।११॥८।१२॥९।१५॥१०।६॥११।७।१२।८॥१३।१॥१४।२।१५।९॥१०।४॥ अर्थात् तेरहवेंका साक्षिगृह अष्टम है प्रथमका सप्तमहै इत्यादि लिखत अंकोंसे जानना इस प्रकार सभी घरोंके साक्षि घर हैं और पंद्रहवां घर तो सभी घरोंका साक्षिस्थानहैं ॥ ५६-५८ ॥

इति महीधरकृतायां रमलनवरत्नभाषायां प्रथमं रत्नम् ॥१॥

भाषाकारसंमतिः ।

रमल शास्त्रमें ११ प्रकारके क्रम अलग अलग कामोंके देखनेके लिये कहेहैं यहां छोटा ग्रंथ होनेसे सात क्रम कहेहैं उनमेंभी सर्वोपयोगी शकुन क्रमही लिखाहै, यद्यपि यही क्रम मुख्य है तथापि

औरके जो मुख्य कार्यहैं वे उन्हीसे जैसे सधेंगे ऐसे अन्यसे नहीं इसलिये मै अन्य ग्रन्थोंका मत लेकर ग्यारह क्रम उनके मुख्य कार्यभी लिखताहूँ-

(१) शकुनक्रम॥स्वभाव सिद्धिहै सभीकार्य प्रथम इससेदेखेजाते हैं।
(२) अब्दहक्रम ॥-चोरका स्वरूप और संतानके निर्णयमें विशेष काम आताहै ।
(३) बिजदहक्रम ॥ कार्यकी (अवधि) मियाद बतानेमें ।
(४) अब्जदहक्रम ॥ वस्तुकानाम तथा अंग बतानेमें ।
(५) मिजाजक्रम ॥ कार्य सिद्धिके काममें ।
(६) हर्फाक्रम ॥ खंडोंकी पुष्टता बलाबल विचारमें ।
(७) असहक्रम ॥ न सुनी न देखी बात बतानेमें ।
(८) हुम्रा क्रम ॥ हुक्म लेना, आर्यलब्धि बिनापारिश्रम कार्य सिद्धिके काममें ।
(९) अर्जक्रम ॥ बिनाश्रम लाभ और आर्यलब्धि ।
(१०) माआदक्रम ॥ बिना परिश्रम कार्य सिद्धि जंग फतअ ।
(११) मुसल्लसक्रम ॥ त्याग विसर्जन आदि कार्य सिद्धि निर्णय.

ये ग्यारह क्रम हैं इनके रूप आगे--पाठकोंके सुगमताके हेतु चक्राकारमें लिखे हैं। और संज्ञारत्नमें जो संज्ञा शकलोंकी कही हैं वेभी पाठकोंके सुगमताके हेतु आगे चक्राकारमें लिखी जाती हैं इसमेंभी ग्रंथकर्ताने छोटे ग्रंथ होनेसे थोडी थोडी मुख्य संज्ञा कही हैं इसमेंभी मैं पाठकोंके हितार्थ अन्य बृहत् ग्रन्थोंसे उद्धृतकरके और भी विशेष संज्ञायें लिखताहूँः-

एकादशक्रम।

श्रीः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
१ शकुनक्रम	0|| लह्यान	0|0 कनजुद्दाखिल.	.|. कब्जुलखारिज.	|||| जमान	00|0 फरहा	0||0 उक्क.	||0 अंकीश	|0|| हुम्रा	||0| बयाज	..|| नस्रुत्खारिज.	||.. नसुद्दाखिल	.. अतबे खारिज	0|00 नकी	|.. अतबेदाखिल	|00| इज्जतमा	0000 तरीक
२ नवदहक्रम	0||	|0||	00||	||0|	0|0|	|00|	000|	||0	0||0	|0|0	00|0	||00	0|00	|000	0000	|||
३ विजरहक्र.	00|0	0||	|000	||0|	0000	0|0|	|0||	|||0	00||	0||0	|00|	||00	000|	0|00	|0|0	|||
४ पंचगदक्र.	0||	|0||	||0|	|||0	0||0	|0|0	00|0	0|00	|000	0000	00||	0|0|	|00|	000|	||00	|||
५ मिजाजक्र.	|0|0	0.0	|||	||0|	0||0	0||	|0||	0|0|	00|0	00|0	|00|	0000	|000	||00	0|00	000
६ इर्फाक्रम	0||	|||0	|0||	||0|	||00	00||	|000	000|	00|0	0|00	|0|0	0|0|	|||	0||0	|00|	0000
७ असदक्रम	0||	|000	000|	||||	00|0	|0||	0|00	0||0	00||	||00	|0|0	0|0|	||0|	|||0	|00|	0000
८ दुकमाक्रम	0|00	||00	00|0	|0|0	0||0	||0	000|	|00|	0|0|	||0|	00||	|0||	0||	||	0000	|000
९ अर्जक्रम	||00	00|0	|0|0	0||0	||0	000|	|00|	0|0|	||0|	00||	0||	0||	|||	0000	|000	0|00
१० माआदक्र.	|000	0|00	||00	00|0	|0|0	0||0	||0	000|	|00|	0|0|	||0|	00||	|0||	0||	||	0000
११ मखलसक्र.	00|0	|00|	0||	||00	000|	|0||	0|00	||0	00||	|00	0||	||0	0000	|0|0	0|0|	|||

अथ शकलानां संज्ञाचक्रम् ।

१	संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
२	शकल नामानि	लह्यान.	क.दा.	क.खा.	जमात	फरहा	उज्जा	अंकीश	हुमा	बयाज	न.खा.	न.दा.	अ.खा.	नकी.	अ.दा.	जुज्ञा.	तरीख
३	स्वरूप	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४	राशयः	धन.	सिंह	कुंभ	कन्या	तुला	मकर	कुंभ	वृश्चिक	कर्क	सिंह	मीन	मकर	मेष	वृष.	मिथुन	कर्क
५	स्वामिनः	गुरु	सूर्य	केतु	बुध	शुक्र	शनि	शनि	मंगल	चंद्र	सूर्य	गुरु	राहु	मंगल	शुक्र	बुध.	चंद्रमा
६	शुभाशुभ मध्यम	शुभ	शुभ	अशु	मध्यम.	शुभ	अशु.	अशु.	अशु.	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	अशु.	शुभ	मध्यम	शुभ
७	दिग्बल	पू०	द.	पू०	द०	प.	प०	द.	प०	उ.	पू.	उ.	पू.	उ.	प.	द.	उ.
८	वर्णाः	पीत	धूसर	श्याम	पाण्डु	विचि.	श्याम	कर्बुर	रक्तश्याम	श्वेत	धूसर	बहुवर्ण	श्याम	रक्त.	श्वेत	शुक्ल.	श्यामश्वे
९	खारिजादि	खारिज	दाखिल	खारि.	सावित	मुन्कली	मुन्कली.	दाखि	सावित	सावित	खारिज	दाखि.	खारिज	मुन्कली	दाखिल	सावित	मुन्कली
१०	चरादि	द्विस्व०	द्विस्व.	द्विस्व.	स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	स्थिर	द्विस्व.	द्विस्व.	चर.	द्विस्व.	स्थिर	स्थिर	चर
११	पुंस्त्री.	पुरुष	स्त्री.	पुं.	नपुंसक	नपुं.	नपुं.	स्त्री.	नपुं.	नपुंसक	पु.	स्त्री.	पु.	नपुं.	स्त्री.	नपुं.	नपुं.
१२	तत्स्थानि	अ.	भू.	अ०	भू०	वा.	भू०	भू.	वा.	ज.	अ.	ज.	अ.	ज.	वा.	वा.	ज.
१३	साक्षिस्थान	१।३।८ मातृ	१।४।७ मातृ	५।६ मातृ.	१६ मातृ	८ दुहित्र	१० दुहित्र	११ दुहित्र	१२ दुहित्र	१५ दौहित्र	६ दौहित्र	७ दौहित्र	८ दौहित्र	१ साक्षी	२ साक्षी.	९ साक्षी	४ साक्षी
१४	रसाः	कटु	कटुम्ल	कटु	कटुम्ल	मधुर	कटुम्ल	कटुम्ल	मधुर	क्षारमिष्ट	कटुक	क्षारामम्र	कटुक	क्षारामिष्ट	मधुर	मधुर	क्षाराम.
१५	भूतभविष्य वर्तमान	वर्त्तमान	आकस्मिक	वर्त्तमान	आकस्मि	भविष्य	आकस्मिक	आकस्मिक	भविष्य	भूत	वर्त्त.	भूत	वर्त्तमान	भूत	भविष्य	भविष्य	भूत
१६	विजदशाकाः	१	२	६	१०	१५	२१	२८	३६	४५	५५	६६	७८	९१	१०५	११०	१३६
१७	धातुमूल जीव	धातु.	मूल	धातु,	मूल	जीव	मूल	मूल	जीव	मूल	धातु.	मूल	धातु.	मूल	जीव	जीव.	मूल
१८	दिनरात्री बली	दिवाबली.	रा.ब.	दि ब.	उभयब	उ.ब.	उ. ब.	रा.ब	उ.ब.	उ.ब.	दि.ब.	रा.ब.	दि.ब.	उ.ब.	रा.ब.	उ.ब.	उ.ब.

	संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
१९	मृदुकाठिन्यादि	मृदु	काठिन्य	मिश्र.	का.	मृ.	मृ.	मि.	का.	मृ.	का.	मृ.	का.	का.	मृ.	मृ.	मि.
२०	आकृति.	दीर्घ	वर्तुल	दीर्घ	चतुरस्र	वर्तुल	वर्तुल	चतुर.	वर्तुल	दीर्घवि स्तृत	दीर्घ.	दीर्घ.	दीर्घवि स्तृत	वर्तु.	वर्तु.	दी. वि.	वर्तुल
२१	तंत्रमते.	वर्तु.	चतुर.	चतु.	त्रिकोण	सम	चतु.	वर्तु.	त्रि.	त्रि.	व.	च.	वर्तु.	सम	वर्तु.	त्रि.	व.
२२	हेतु	पोषणे	पुष्टिके	पोष.	पु.	पु.	पु.	पु.	पु.	पु.	पो.	पु.	पो.	पु.	पु.	पु.	पु.
२३	एकायुता	एका.	युता	युता	एका	एका	युता.	एका.	युता.	एका.	युता.	एका.	एका	एका.	एका	एका	युता
२४	पूर्णखंडित	खं.	पूर्ण.	खं.	पू.	खं.	पू.	खं.	खं.	खं.	खं.	पू.	खं.	खं.	खं.	पू.	खं.
२५	वय:प्रमाण	अतिवृद्ध	वृद्ध	अतिवृद्ध	वृद्ध	कौमार.	वृद्ध	वृद्ध.	कौमा.	तरुण	अतिवा	तरुण	अतिवा	तारुण्य	कौमा.	कौमा.	तारुण्य
२६	वासस्थान	नगरारण्ये	स्वर्णरूप्ये हट्टे	नपर्वते	स्व.रू.हट्टे.	नृपारामे	अंधकारे.	चित्रहट्टे	हिंसागारे.	क्षेत्रारामे	नगरारण्ये	पाठशालोद्याने	नगरारण्ये	वनग्रामे.	वनवृक्षे	चित्रहट्टे	क्रांषमार्गे.
२७	मूल्यप्रमा.	अतिमौल्य	समभौल्य	मौल्यहीन	मौल्पहीन	स्वल्पमौल्य	सममौल्य	मौल्यहीन.	स्वल्पमूल्य.	मध्यमूल्य	अतिमौल्य	अतिमौल्य	मौल्यहीन	स्वल्पमौल्य	स्वल्पमूल्य.	स्वल्पमौ.	सममौल्य
२८	कार्यहेतु.	निर्माण.	भूमिशिल्प	शिल्पकार	भूमिशिल्प	शिल्पकार.	शि.का.	निर्माण	शि.का.	निर्माण	शि.का.	निर्माण	शि.का.	शिल्पका.	शिल्पकार.	शिल्पका.	शिल्पका.
२९	सादादि.	साद	साद	नेश	नेशमुमुजी	सादमु.	नेशमु	नेशमु	नेश.	साद.	साद.	साद.	नेश	नेशमु मुजीज	साद	नेश	सादमु.
३०	चिंतामणिमतेमु.	•	•	•	मुमुक्षोष	मु.	मु.	•	मु.	मु.	•	•	•	मु.	•	मु.	मु.
३१	काचित्क आसलास	•	असलास	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	अस.	अस.	•
३२	अनादि सादिस	•	•	•	सा	•	सा	•	•	•	•	•	•	•	•	सा.	सा.
३३	अवधी उच्चवर्ती	उ.	•	•	•	•	•	उ.	उ.	उ.	•	•	•	•	•	•	•

	संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
३४	आबीखाकी वादीअ त.	आतसी	खाकी	बा०	बा०	बादि	बा.	बा.	बादि.	आबि	आब.	आबी	आत	आबी	बादि	बादि	आब
३५	वर्षरवे.ना.	ल्वाहय	लाग	तस्वाल	मेहक	अहदा	खकाफ	मतकुश	मतरफ.	ताईक	अजाछि	अंशकीला.	खावीत	औजाग	कायमे	पारात	अतरांद
३६	अक्षातवे शना.	कमकह करबत २	सोग सालूक २	सलामत ४	कौसज. ५	तमकछ मनफछ ६	अवाबर	हुमरआस्तिक ८	अमानपवतय ९	लीम ४	हिंदफिला १०	अकल अतिपाति	•	अशकर फलसुर	अकार कायमे	अतव अ मतदुला	निकर
३७	चिन्हा.ना.	लहः	कद	कवः	जम	कर.	चक	मन.	हुम	पी.	नख	नद	खय	नकी	अह	इम	तर.
३८	एकवर्णना.	अ.	क.	ल.	म.	अ.	न.	प.	ज.	द.	प.	ह.	ह.	प.	ब.	स.	अ.
३९	संस्कृतना.	वाग्मी	तीक्ष्णांशु	पातः	सौम्य	दैत्यार्चिः	मंदगः	सौरि	लोहित	विधु	उष्णगुः	सूरि	पक्षः	आर	कवि	बोधन	शीतांशुः
४०	निर्गमादि संख्या	निर्गम	प्रवेशी	निर्गम.	यथा-स्थित.	मिश्र.	मिश्र	प्रवेशी	यथा-स्थित	यथा-स्थित	निर्गम	प्रवेशी	निर्गम	मिश्र	प्रवेशी	यथा स्थित	मिश्र
४१	बिंदुसंख्या	स्वल्पबिंदु	समबिन्दु	सम.	स्वल्प.	बहुबिन्दु	सं.बिं	स्वल्पबिं	स्व.	स्व.	सम	सम	बहु	बहु	बहु	सम.	बहु
४२	पंचसंख्या दिसंज्ञा	पंचशांत.	पं. क्री.	पंचक्रूर	सौम्य. क्रूर	सौम्यक्रूर	पं.क्रू	पं. क्रू.	पं. क्रू.	सौ. क्रू.	पं. शं.	पं. शं.	पं. क्रू.	सौ. क्रू.	पं. शं.	सौ. क्रू.	सौम्य क्रूर
४३	वस्तादिक मयना.	पुत्र १	द्वितीयपौत्र दामाद	द्वि.पौ.	नसीकुल्यमाता	तृतीयपुत्र	तृ पौ. दामाद	पुत्र ४	पुत्र २	तृतीय पुत्र	पौत्र	पौत्रदामाद	पुत्र ४	पुत्र २	पुत्र १	तृतीय पौत्र	अल्कीकुल्यपिता
४४	शस्त्राणि.	छुरिका	लताप्रहार	पाषाण	गुरज.	खंजर	गुरज	पाषाण	बाण	परशु	धनुर्बाण	धनुः	भल्ल	खड्ग	अदत	परशु	बाण
४५	सामान्यच खनिस्थान	धातु	रत्नखान	धातु	र.खा.	पशु.	र.खा.	र.खा.	पशु	वृक्ष	धातु	वृक्ष	धातु	वृक्ष	जीव	पशु	वृक्ष
४६	मासाः	रमजान	जमदीउल	सवाल	रबिला.	रबिलाखर	शाबान	रजब	सवाल	मोहरम्	सफर	जीकाद	रजब	जमा.खर	रबिला.	जिल्हिज	मेहरम
४७	अलफाथला	अलफ	कर्नु	वे.गे.	मी	तोबो	हुं	स्वाडफे	वावृाजि	दाळूरे	वा.दृते.	रेन्नीन	ऐ. से	ईऐज्वात	सेरे	सीन	तोये
४८	चन्महांला दिसं	उच्चात	अवकात	मुतल लब	बाय-दात	नापात	बाय-दात	उज्म-हात	उज्म.	उज्म.	ल्वाय	मुतल	नावात	नावात	अयां	बुत	बुत
४९	फैन्नादि संज्ञा	फैन्न अक्रात.	पणफर मायल	आपो वायल	कैं अ.	प. मा.	आ. बा	कैं अ.	प. मा.	आ. बा.	कें. अ.	पण. मा.	आ. बा.	जकीरात संधि	बा. सं.	आ. सं.	बाय. सं.

संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
५० अंधादिसं.	अंध	चिपिट	दिव्य चक्षु	काण	अंध	चिपिट	दिव्य चक्षु	काण	चिपिट	अंध	दिव्य चक्षु	चिपिट	काण	चिपिट	काण	○अंध
५१ अवस्था	अवलोकयति	वियोगी	अवलो	वियो.	वदति	वियो.	वियो.	मैलापा	अवलो.	मैलापी	वदति	मैलापी	अवलो.	वदति	वदति	मैला
५२ लघुवृ हत्वमोल्य	लघुभार	वृद्धभार	ल.	वृ.	मिश्र भार	वृ.	वृ.	मि.	मि.	ल.	मि.	ल.	मि.	मि.	मि.	मि.
५३ अर्वीनामा.	ल.	क.दा.	क.खा.	ज.	फ.	ब.	अं.	हु.	ब.	न. खा.	न.दा.	अ. खा.	नका	अ. दा.	इ.	त.
५४ पुनर्नि देशना	सेताम	अकी मस्	अम लाग.	आजाद	कौस जस्	नामक कत	अपका रस	म.काह	काह करान	इकाम	काइमी.	जकीर खारीजे	जकीर	औकजा जकोरदा	औकजा	अलह परंद.
५५ कंकर	मूल	लाल	माणिक	पत्थर	नगीना	पिरोजा	कंकर	चकीक	कंकर	हकीक	पिराजा	पाषाण	कादक	पिराजा	पत्थर	रेती.
५६ धातु	सोना	रूपा	शीसा	पंचधातु	सोना	लोहा	लोहा	तांबा	रूपा.	कांशा	सोना	शीशा	पीतल.	सोना	पचधातु	रूपा
५७ पदार्थ	शकरा	वेत्र	पान	अनार	लकडी लाल	धान्य	मेखखटी.	शुष्क लकडी	खेलक	पान	फावसा	सेप्पारी	मेवा.	मेवा	रेमता	दरखत वृक्ष.
५८ मेवा	खडभुजा	नारंगी	ककडी	नारंगी	खजूर	आलु	कन्द.	अलू	सहतूत	अंगूर	अमरूद	ककडी	कदलाल.	अंगूर	अनार	शाकनालु
५९ वास स्थान	आसमान	उच्च-स्थल	लसतां कोड	पद्मपुर	वाडेमें	गाममें	मोयरेमें	मलिन जगेमें	नदी ऊपर.	हव-लीमें	जमिन उपर	विलायत	खाडेमें	जमीनमें	बाजारमें	नदीकिनारेपर
६० जिन्स	मोती	कस्तूरी	आड कागा	वीलाव छल	रेशम	पसम	हस्त चर्म	गोवरी	घांटेक नख	मोती	किरमत	पसम	रेशम.	मोती	रेशम	चमडा
६१ जानवर	रांझ ऊंट	घोडा	घांडा गधा	हाथी गधा	खच्चर गधा	बकरा	भैंस गधा	रोझ मूढ	रोझ	घोडा	खच्चर मृग	खच्चर मिडो.	खच्चर घाडा.	गाय बकरी	गाय खचर	बकरा
६२ हेशन जानवर	व्याघ्र	गौ.	भैंस	रीछ	बकरा सपेद	जंबुक कुत्ता	स्वान	बकरा	जल मुर्गी	कुमरी	कुलिंन	कागडा	होला.	पोपट मैना	मुरगा	बगला.
६३ पक्षी	कुलिंग	तमरा	चाल्ही तोता	कुकड़ा चांचडी	कावर	तीतर बटक	वदक	काग	दिलाउ	घोडा	वानर	वानर	बाकर.	वांलाव	हरिण	हरिण.
६४ वनजीव	हरिण	सिंह	शशक	चीता	घुड	बंजीश	मयूर.	बज	सिंह	पोप	सर्प	काछवा	कनेणा	गादर	मंजार	हरिण.

अथ बलाबलरत्नं द्वितीयम् ।

शुभाशुभप्रदातारः सबलाःस्वफलप्रदाः॥निर्बला निष्फलाज्ञेयास्तस्माज्ज्ञेयं बलाबलम् ॥ १ ॥ आग्नेयंवायवंचाप्यंपार्थिवंचमुहुःक्रमात्॥प्रस्तारे स्युर्ग्रहाण्येतद्योगात्खण्डबलाबलम् ॥२॥ आग्नेयादीनिखण्डानित्वाग्नेयादिगृहेषुच ॥ गतानिसबलानिस्युर्मित्रगेहेतथैवच ॥ ३ ॥ उदासीनगृहस्थानांबलस्यसमताभवेत् ॥ शत्रुगेहेबलाभाव एवंज्ञात्वाफलंवदेत्॥४॥ अग्निवायूनीरभूमीमित्रशत्रूजलानलौ ॥ तथाभूम्यनलावन्यथोदासीनाः परस्परम्॥५॥ एवंतत्त्ववशाद्वीर्यंखण्डानांप्रथमं भवेत् ॥ पंक्तिसप्तक्रमेणाद्याद्वितीयंबलमुच्यते ॥६॥

टीका–अब दूसरे रत्नमें शकलोंका बलाबल कहते हैं कि,संपूर्ण खण्ड शुभ अशुभके देनेवाले सबल निर्बलताके अनुसार अपना फल खण्ड देते हैं बलवान् अपना पूर्ण फल देताही है निर्बल निष्फल होताहै इसलिये प्रथम बलाबल विचार जानना चाहिये॥१॥ सो ऐसा है कि अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी जिनको क्रमसे आतशी, बादी, आबी, खाकी कहते हैं. क्रमसे प्रत्येक घर इन तत्त्वोंके होते हैं इनके योगसे बलाबल विचारना॥२॥अग्नि खण्ड(अग्नि) आतशी घरमें वायु खण्ड वायुस्थानमें ऐसे जल जलमें पृथ्वी पृथ्वीमें सबल होते हैं और मित्रस्थानमें भी सबल होते हैं ॥३॥ समके स्थानमें बलभी सम और शत्रुस्थानमें निर्बल होता है इस प्रकार जानके फल कहना ॥ ४ ॥ अग्नि वायु तथा जल भूमि परस्पर मित्र हैं

जल अग्नि भूमि अग्नि शत्रु अन्य सम हैं प्रकट चक्रमें हैं ॥ ५ ॥ इस प्रकार शकलोंके तत्त्व वशसे प्रथम बलाबल होता है दूसरा बल सात पंक्ति क्रम कहा जाता है ॥ ६ ॥

मित्रामित्र चक्रम्.				
—:	अ	वा	ज	भू
सम	भू	ज	वा	अ
शत्रु	ज	भू	अ	वा
मित्र	वा	अ	भू	ज

शकुनाब्दहौविज्दहमब्जदाख्यामिजाजकौ ॥
हर्फासहेतिसप्तानांक्रमाणांस्थापनंब्रुवे ॥ ७ ॥
अहैतुको विनिर्दिष्टः पुरस्ताच्छकुनक्रमः ॥
इदानीमब्दहाख्यस्यस्थापनेकारणं ब्रुवे ॥ ८ ॥

टीका—शकुनक्रम १ अब्दहक्रम २ विज्दहक्रम ३ अब्जदक्रम ४ मिजाजक्रम ५ हर्फाक्रम ६ असहक्रम ७ इन सातों क्रमोंका स्थापन कहतेहैं॥७॥सबसे प्रथम शकुन क्रम विना कारणही सर्वोपयोगी है सभी कामोंमें मुख्यहै अन्य क्रम अपने २ कामोंमें प्रधानहैं इस समय अब्दहक्रमके स्थापन करनेका कारण कहतेहैं ॥८॥

खण्डैककेस्थितत्वानांवह्न्यादीनांचतुष्टयम् ॥
ऊर्ध्वादधः क्रमस्तेषांव्यक्तिगुप्तीखरेखयोः ॥९॥
अवदाहाश्ववेदार्णः कुद्व्यब्धिगजसंख्यकाः ॥
युक्ताव्यक्तिविभागेषुतदैक्यात्स्थितिरब्दहे ॥ १० ॥

टीका—सभी खंडोंमें अग्न्यादि ४ तत्त्वोंकी स्थिति होती है सो ऊपरसे नीचे तक क्रमसे जहां बिंदु तहां तत्व प्रकट जहां रेखा तहां तत्व गुप्त जानना ॥ ९ ॥ अब्दह क्रममें४वर्ण हैं इनके अंक ऐसे हैं कि अ० १ ब २ द ४ ह ८ इनके योग प्रकट तत्वका करके जितनी संख्या हो उतने स्थानमें उस खंडकी

स्थिति जाननी इसीसे यह अ० ब० द० ह० क्रम० हैं ॥ १०

यथालह्यानके वह्नितत्त्वेनाकारसंयुतिः ॥ तत्सं
ख्येचाब्दहेत्वाद्योलह्यानस्यास्थितिर्भवेत् ॥ ११ ॥
तरीखेवेदतत्त्वानां व्यक्तिस्तत्वाब्दहार्णजाः ॥ सं
ख्यायुक्तास्तदैक्येनाब्देहेत्तरिस्वास्थितौ ॥ १२ ॥
व्यक्तिर्नयत्रतत्त्वस्यतदंकं नैव लभ्यते॥ शेषंगेहे
चतत्खण्डं जमातं षोडशे यथा ॥ १३ ॥ स्तेय
रूपकृतेगर्भसंतत्योर्गणनेऽब्दहः ॥ ज्ञेयस्तथैव
विज्ञेयाविज्दहेखण्डसंस्थितिः ॥ १४ ॥

टीका–जैसे कि लह्यान खण्डमें ऊपर अग्नितत्व प्रकट अर्थात् बिंदु है और अब्दह प्रथमवर्ण अ १ है तो इसका १ एक अंकही होनेसे इस क्रममें प्रथम गृहमें लह्यान शकल आई ॥ ११ ॥ तथा तरीख शकलमें चारों तत्व प्रकट ⁝ हैं तब अ १ ब २ द ४ ह ८ सभी अंक पाये इनका योग १५ है इस कारण पंद्रहवें घरमें तरीख शकलको स्थान इस क्रममें मिला ॥ १२ ॥ जहां कोईभी तत्त्वप्रकट नहीं है तहां अंकभी नहीं मिलता इस कारण जमात ☰ शकलने सोलहवें घरमें स्थान पाया अर्थात् जहां तक अंक इस क्रममें मिलते हैं तहां योग १५ हीतक पहुँचता है जमात विना अंक होनेसे १६ वें घरमें गयी यह अब्दह क्रम है ॥ १३ ॥ यह क्रम चोरके रूप और गर्भ विचार सन्तान विचारमें गिना जाताहै ऐसेही विज दह क्रममेंभी खण्डोंकी स्थिति जाननी ॥ १४ ॥

जकारेतत्रशैलांकंशेषेस्वब्दहवर्णजाः ॥ पूर्वव
द्यातिसंख्यैक्योविज्दहेखण्डसंस्थितिः ॥ १५ ॥

यथा लह्यानकेवह्निर्बिंदौवस्याद्विसंख्यके ॥ युक्ते तत्रैवलह्यानास्थितिः स्याद्विज्दहेक्रमे ॥ १६ ॥ अत्यष्टिसंख्याफरहेनृपेनोर्वरितेतनौ ॥ फरहस्य स्थितिर्ज्ञेयातरीखेखिलवर्णजाः ॥ १७ ॥ प्रकृति नृपोनितेशेषेपंचमेतारिखास्थितिः ॥ अबदंक य विज्ञानमस्यचान्यत्प्रयोजनम् ॥ १८ ॥

टीका-विज्दह क्रममें जकारके ७ अंक अन्योंके पूर्ववत् अर्थात् व २ द ४ ह ८ हैं पाहिले अब्दहके तरह संख्या जोडनेसे इसमेंभी खण्डोंकी स्थिति है ॥ १५ ॥ जैसे लह्यान शकलमें अग्नि बिंदुके वकारके २ अंक होने दूसरे घरमें लह्यानकी स्थितिहै॥ १६॥ फरहा शकलमें अग्नि वायु पृथ्वीके ३ तत्त्व प्रकट हैं इन वके २ जके ७ हके ८ अंक लिये इनका योग १७ भया १६ से आधिक होनेसे १६ कम किंये १ बाकी रहा इससे प्रथम घरमें फरहाकी स्थिति जाननी तारीखमें सभी तत्त्व प्रकट होनेसे सभी अंक व २ ज ७ द ४ ह ८ लिये योग २१ इसमें १६ कम किंये ५ बाकी रहनेसे पंचम गृहमें तरीखकी स्थिति है यह इसका अंकक्रम कहा इसका अन्यप्रयोजन है ॥ १७ ॥ १८ ॥

अथाब्दहविज्दहयोः परिभाषे ।

लह्यानंहुम्रातथाचनुस्रुतखारिज्ब्याजाभिधाकब्जु लखारिज मिज्तिमाख्यमतवेखारिज्तथांकीशक म्॥ उल्काकब्जुलदाखिलंच फरहाख्यानुस्रुतुल्दा खिलं नक्याथोतवदाखिलंतरिखजामातेब्दहे षोड श॥ १९॥विज्दहेचाहंफहोथलह्यातवदं वयाजंतरी

खंचकञ्जुलखारजम ॥ हुम्राअंकीशंचनखंतथोक्तं
ज्तिमनदं चातवखंनकीच॥२०॥कदंजमातं किलवि
ज्दहेस्मिन् खंडानि वै षोडशकीर्तितानि ॥ २१ ॥

टीका--इन १९ । २० । २१ श्लोकोंमें अब्दह विज्दहक्रम कहे हैं इनका स्पष्ट अर्थ रूप संख्या सहित पूर्वोक्त चक्रमें है पाठक देख लेवें ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥

अथाब्जदपरिभाषा ।

रूपाक्षिरामाब्धिभिरब्जदस्यदशालयोत्पत्तिरिह
क्रमेण ॥ पूर्वं परस्ताच्छकुनालयाभ्यां पूर्वा
पराभ्यांतनुतोगृहाद्वा ॥ २२॥ अस्मिन्दशांका
तरिखास्थितिः खे नृपेजमातंयवनैः प्रदिष्टम् ॥
लह्यानहुम्रेवयजे नकीशावुक्काभिधं कब्जुलदा
खिलं च ॥ २३ ॥ फर्हानकीचातवदं तरीखं जुस्नु
त्लकं कब्जुलखारिजोस्तिमा ॥ अतवेखनुखुह
खिलेजमातमख्याणसंख्येत्वमुनाविधेये ॥२४॥

टीका—अब्जदक्रमकी परिभाषा कहते हैं कि, अ १ व २ ज ३ द ४ ये अंक इस क्रममह इनका योग १० होनेसे क्रम करके १० गृहोंमें इन अंकोंके क्रमसे लिखेहैं इससे ऊपर १६ पर्यंत शकुन क्रमके पूर्वापर देखके घरसे स्थापनहोते हैं ॥ २२ ॥ इसमें १० अंक होनेसे दशवें घरमें तरीखकी स्थिति है और इससे ऊपर ९ छोडके एकसे गिनती करनी ११ घरकेवास्ते ३ अंकसंख्या ९ छोडके ३ घरमें सरेंती बयाज है यहाँ ३ संख्या जुस्नुत्खारिजकी भी है परन्तु शकुन पंक्तिमें पहिले बयाजहै इसलिये यहाँ ३ घरमें बयाजही

आया ऐसे सब जानना इस क्रममें १६ घरमें जमात यवनोंने कही है और लह्यान हुम्रा बयाज अंकीश उक्का कब्जुलदाखिल ॥२३॥ फरहा नकी अतवेदाखिल, तरीख, १० जुम्तुत्खारिज, कब्जुल खारिज, इस्तिमा अतवेखारिज, जुम्हुदाखिल जमात, १६ ऐसेनाम इस क्रममें जानने ॥ २४ ॥

अथ मीजानक्रममाह ।

सूर्यतः षष्ठषष्ठग्रहाणां क्रमाच्छाकुनेयादिमात्रा हुखंडान्तिमान् ॥ भूयएवंपुरोनन्दतः संलिखेत् केतुखण्डान्तिमान्स्यान्मिजाजक्रमः ॥ २५ ॥ कब्जुद्दाखिलफरहौ जमातवयजौ कलाश्चलह्यानम् ॥ हुम्राकब्जुलखारिजजुम्तुत्खारिजात् वेदाखिलाः ॥ २६॥ इस्त्यातरीखेकीशाजुम्हुदाखिल नकीतथातवेखारिजम् ॥ अस्यान्योर्थोज्ञेयोवार ज्ञानेविधौतुकार्याणाम् ॥ २७ ॥

टीका--मिजाज व मिजान क्रममें सूर्यसे ६ । ६ ग्रहोंके क्रमसे स्थापन हैं जिनके आदिमें शकुनऔर अंत्यमें राहु खण्ड हैं ये सब ८ स्थान हुए पीछे ९ सेऊपर भी ऐसेही ८ लिखे जाते हैं जिनके अंत्यमें केतु खण्ड होता है इसको मिजाजक्रम कहते हैं ॥ २५ ॥ इनका न्यास ऐसा है कि कब्जुल दाखिल, फरहा, जमात, वयाज. उक्का, लह्यान, हुम्रा, कब्जुलखारिज, जुम्तुत्खारिज, अतवेदाखिल, ॥ २६ ॥ इस्तिमा, तरीख, अंकीश, जुम्हुदाखिल, नकी, अतवेखारिज १६ इस क्रमका और प्रयोजन है कि वार जानने तथा कार्यका समय जाननेमें काम आता है ॥ २७ ॥

अथ फरहाक्रमपरिभाषा ।

ये चाब्दजाद्याः किल या वर्जाणअष्टाधिका विंशति रत्रतेषाम् ॥ लह्यानमंकी हुमराबयाजौ नुस्रुहाखि लनुस्नुतखारिजौच ॥ २८ ॥ तथातवेदाखिलखा रिजौ च फर्हानकीकब्जुलदाखिलं स्यात् ॥ कब्जुल खरीजंच जमातमुक्काज्तमातरीखा फरहक्रमस्युः ॥ २९ ॥ फाद्यांकवर्णप्रभवोपिभूयो लह्यानतोद्वाद शखण्डकानि ॥ दृष्टिर्गिराद्यर्णचतुष्कखण्डैः प्रस्ता रमक्षेसति पूर्ववत्स्यात् ॥ ३० ॥

टीका—अब फरहाक्रम कहते हैं कि, जो अब्जद् क्रममें पारसीय अक्षर हैं उनकी संख्या यहां २८ होती हैं तब प्रथम तत्वमें शून्य आद्यवर्ण अकार होनेसे पहिले घरमें लह्यान है दूसरेमें इसका विरोधी अंकीश है तीसरेमें वकारका वायुबिंदु होनेसे हुम्रा, चौथेमें उसका विरोधी बयाज है ऐसे क्रमसे लह्यान, हुम्रा, अंकीश, बयाज, नुस्रुहा-खिल, नुस्रुतखारिज ॥ २८ ॥ अतवेदाखिल, अतवेखारिज, फरहा, नकी, कब्जुलदाखिल, कब्जुलखारिज, जमात, उक्का, इजतमा, तरीख यह फरहा क्रम है ॥ २९ ॥ फकारके १२ अंक होनेसे बा-रह घरोंमें लह्यानआदिहैं अपने अपने तत्वोंके अंकक्रमसे स्थापन-पाते हैं पीछे ४ गिर अक्षरोंसे हैं प्रस्तार पूर्ववत् जानना ॥ ३० ॥

अथास्सहपरिभाषा ।

अदृष्टिखण्डस्थितिबीजकोसौक्रमोस्सहाख्योलि खितः पुराणैः ॥ यथातथैवाहममुंविधास्येवयो धिकाध्यानुगतौविशंकः ॥ ३१ ॥ लह्यानातबदा तवेखारिजकाजामातफर्हाभिधौ हुम्रानक्युकलाह्व

याश्चनुसुत्खारिजदाखीलकौ ॥ कम्बुलदाखिल खारिजौचवयजोंकीशाह्वयौचाग्रतः इज्जतमा तरिखातथैवयवनैरुक्ता क्रमेणास्सहे ॥ ३२ ॥

टीका--अस्सह क्रममें खण्डोंकी स्थितिका कारण न देखा गया इसलिये पहिले आचार्योंके लिखेके अनुसार जैसेका तैसा यहां लिखा जाता है इसमें उमरकी अधिकता मार्गका विचार निःशंक ताका विचार होताहै क्रम इसका ऐसा है कि, लह्यान अ० दा० अ० खा जमात, फरहा, इुम्रा, नकी, उकला, नु० खा० नु० दा० क० दा० क० खा वयाज, अंकीश, इज्जतमा, तरीखा ऐसे अस्सह क्रममें यवनोंने कहे हैं ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

एवं पंक्तिक्रमाः सप्त सार्थाः प्रोक्ता मया पृथक् ॥ पंक्तिगेहैक्यभेदेन द्वितीयं बलमुच्यते ॥ ३३ ॥ खण्डप्रस्तारगेहानि पंक्तिगेहसमानि चेत् ॥ बल प्रदानिद्वित्र्याद्येगेहैक्येबलवत्तरम् ॥ ३४ ॥ अभा वेपंक्तिगेहानां प्रश्नार्द्धं निर्बलं भवेत् ॥ ३५ ॥

टीका--इस प्रकार मैंने यहां सात क्रम पंक्तियोंके अलग अलग कहे हैं पंक्ति एवं स्थानके ऐक्यताके भेद करके दूसरा बल कहा जाताहै ॥३३॥ शकल, प्रस्तार और घर तीनों तुल्य हों तो बल- वान् होतेहैं दोतीन आदि घरोंकी ऐक्यता होनेमें विशेषबलवान् होता है ॥३४॥ यदि पंक्ति तथा घरके ऐक्यतामें भेद होतो प्रश्न खण्ड निर्बल होजाता है ॥ ३५ ॥

अथ दृग्बलम् ।

मिथः पश्यंति खण्डानि सप्तमं रविसद्मसु ॥ नाग्रेषु दृग्भवंवीर्यं तृतीयं प्रोच्यतेधुना ॥ ३६ ॥

दृष्टं यच्छुभमित्राभ्यां खण्डं तद्बलसंयुतम् ॥
निर्बलं पापशत्रुभ्यामुदासीनेन मध्यमम् ॥ ३७ ॥
एवंहिपृच्छालयखण्डतत्सुहृत् साक्ष्यर्द्धकानां
बलमाशु चिन्त्यम् ॥ कार्यस्य सिद्धिस्सबलैर्न
हीनैर्वीर्य्यान्विते शत्रुदलेन तद्वत् ॥ ३८ ॥

इति रमलनवरत्ने बलाबलनिरूपणं द्वितीयं रत्नम् ॥ २ ॥

अब दृष्टिबल कहते हैं, बारह खण्डपर्यंत सप्तमस्थानमें पूर्ण दृष्टि होती है १२ से ऊपर दृष्टिबल नहीं होता यहाँभी ताजिकोक्त दृष्टि ली जातीहै अब तीसरा बल कहतेहैं ॥ ३६ ॥ जो शकल शुभ तथा मित्रसे दृष्टहो वह बलवान् पाप तथा शत्रुसे निर्बल और समसे सम मध्यमबली होता है ॥ ३७ ॥ इस पृच्छा प्रश्नखण्डसे उसका मित्र साक्षिखंडोंका बल प्रथम विचारना बलवा-न्से कार्यसिद्धि होतीहै हीनबलीसे नहीं होती शत्रुखंडमें बलवान् भी हो तो भी वैसी कार्यसिद्धि नही होती सुगमताको मित्र शत्रु सम चक्रमें लिखे हैं ॥ ३८ ॥

शकलानांमित्रादिचक्रं			
अ	वा	ज भू	संज्ञा
भू	ज	वा अ	सम
ज	भू	अ वा	शत्रु
वा	अ	भू ज	मित्र

इतिरमलनवरत्नेमाहीधरीभाषाटीकायां बलाबलनिरूपणंनाम द्वितीयं रत्नम् ॥ २ ॥

अथ प्रश्नोपकरणं तृतीयम् ।

प्रश्नोपकारेण विनात्र सिद्धिःप्रश्नस्यनस्याद्गुरुवाक्यतोऽपि ॥ तस्मात्प्रवक्ष्येखिलसिद्धिहेतुं प्रश्नोपकारंलघुषट्प्रकारम् ॥ १ ॥ आदौन्किलावंचबलाबलंद्वयंतृतीयमत्रास्तिमरातिवाहयम् ॥ तूर्य्यंम्तियाजंनिगमंतसीरकंशरोन्मितंस्यात्तकरारमात्तवम् ॥ २ ॥

टीका–अब तीसरे रत्नमें प्रश्नके उपकरण कहते हैं विना उपकरणोंके यहां गुरुके शिक्षा कियेमेंभी सिद्धि नहीं होती. तस्मात् समस्त प्रश्नसिद्धिके हेतु सूक्ष्म छः प्रकार प्रश्नोपयोगी कहताहूँ॥ १॥ इमतिषाज पांचवां निगमतासीर छठा तकरार आर्तव है ॥ २ ॥

मूलीभूतेतुसर्वत्रपाशकेतदसंभवे ॥ यवनोक्तविधिं वक्ष्येशकुनोत्पादनेऽधुना ॥ ३ ॥ श्वासंनियम्या स्तरवर्तुलाकृतिंरेखास्तदुच्चैर्विगणय्य ताः पुनः ॥ तदंकतुल्यंशकुनं तनुस्थितं नृपाधिकाश्चेन्नृपपा तितेर्द्धकम् ॥ ४ ॥ तस्मान्नगयुग्मगृहेविधायत न्नच्छैलमग्रंतुदगंतुरीयम् ॥एवं विधायार्द्धचतुष्टयं वाप्रस्तारमाद्युक्तविधेः प्रसाध्यम् ॥ ५ ॥

टीका--प्रस्तारका प्रथम मूल कारण पूर्वोक्तपाशा है कदाचित् पाशा न होतो शकुल उत्पन्न करनेमें इस समय यवनोक्त विधि कहताहूं ॥ ३ ॥ प्रश्नकर्त्ता अपना श्वासा बंदकरके गोल आकार एक वृत्तमें जितने बिन्दु श्वासा छूटनेतक होसके उतने लिखने तब गिनने १६ से अधिक हों तो १६ का भागदेकर शेष जो अंक १६के भीतरका बचे उतनेही शकल शकुन क्रमकी प्रथम लेनी ॥ ४ ॥ उससे सातवीं दूसरीमें इससेभी सातवीं तीसरी और तीसरीके भी सातवीं चौथे घरमें लेनी पंचम आदि शकल पूर्वोक्त रीतिसे तयार करनी तौ प्रस्तार होजाता है ॥ ५ ॥

कृत्वा कथंचित्प्रस्तावमिन्किलावमनन्तरम् ॥ कुर्वीतताक्रियांवक्ष्येतनुपंचमयोस्तथा ॥६॥ द्यङ्ग योस्त्रिसप्तयोस्तुर्यनागयोर्योगतोदलान् ॥ चतुरो विनिधायादौतेभ्यःप्रस्तारमाचरेत् ॥ ७ ॥ इन्कि

लावोथप्रस्तारेतिथिगेहेसदैवहि ॥ जमातमेवाहि भवेत्तन्मूलेचविलोकयेत् ॥ ८ ॥ तलान्निगदतां प्रश्नस्तथातामुपयातिहि ॥ इन्किलावाह्वयादद्या द्गणवर्णाइतोन्यथा ॥ ९ ॥

टीका--प्रथम किसीप्रकार प्रस्तार बनायके तब इन्किलाव करना उसकी विधि कहताहूँ कि पहिले पांचवेंका ॥ ६ ॥ दूसरे छठेका तीसरे सातवेंका और चौथे आठवेंका योग पूर्वोक्त रीतिसे करके ४ शकल तयार करनी तब उन चारोंसे प्रस्तार बनाना ॥७॥ इस संस्कारका नाम इन्किलाव कहते हैं इसके पंद्रहवें घरमें सर्वदा जमात आतीहै उसका मूल देखना॥८॥ उसके (तल) मूलसे प्रश्न कहनेवालोंकी सत्यता होती है इन्किलाव नाम संस्कारसे गण वर्ण व्यवस्था देनी इससे सिवाय औरसे ऐसा नहीं होता॥९॥

बलाबलविचारस्स्यादुपकरणंद्वितीयकम् ॥ मरातिवं पञ्चविधं संज्ञया तत्क्षणेन च ॥ १० ॥ रुवाईखुमासी सुदासी सवाई समानीतिसंज्ञाः पुरोक्ताः पुराणैः ॥ द्वियुग्माभ्रतोष्टांतखानांक्रमेणा त्रपूर्वेषुनेत्राब्धिकं स्यात्सुवैरम् ॥ ११ ॥ स्वल्पं तुजिह्वति तथा लोके कार्यं च विघ्नदम् ॥ निर्वैरं त्रितयं त्वत्र विज्ञेयं सुविचक्षणैः ॥ १२ ॥ प्रस्तारसर्वखण्डानि स्थितानि जिह्वके गृहे ॥ ज्ञेयानि विघ्नकर्तॄणि शकुनक्रमतस्त्विह ॥ १३ ॥

टीका--बलाबल विवेक दूसरा उपकरण पूर्वोक्त है तीसरेकी मरातिब संज्ञा है पाँच प्रकारकी संज्ञासे तत्काल प्रस्तारसे भी

जानना ॥ १० ॥ चार बिन्दुका रुवाई पांचका खुमासी छःका सुदासी सातका सवाई और आठ बिन्दुका समानी ये संज्ञा पूर्वाचार्योंने चार बिन्दुसे आठ बिन्दुतक कही हैं पहिले पाँचवें तथा दूसरे चौथेका जिद संज्ञक स्वल्पवैर होता है ॥ ११ ॥ यद्यपि यहाँ (जिद) स्वल्पवैर है तथापि संसारके कार्यावसरमें विघ्नही देते हैं इनमें तीसरा निर्वैर है यह शुभ होता है ऐसा बुद्धिमानोंने जानना ॥ १२ ॥ प्रस्तारमें सभी खंड (जिद) शत्रु घरमें हों तो विघ्नकरनेवाले जानने यह विधि शकुन क्रममें देखनी ॥ १३ ॥

अथेम्तियाजम्।

इम्तियाजंतुरीयंयद्द्विखंडोत्थंदलंभवेत् ॥ तत्सिद्धिदंशुभाभ्याश्चाशुभाभ्यामतिविघ्नदम् ॥ १४ ॥
शुभाशुभाभ्यां तज्जातमादौ शुभमसत्परम् ॥
असच्छुभाभ्यांतज्जातमसदादौशुभंपरम् ॥ १५ ॥

टीका-अब इम्तियाज चौथा उपकरण कहते हैं, यह दो शकलोंसे मिलके जो शकल हो उसकी संज्ञा है इसमें इतना विचार है कि जो दोनहूँ शुभ शकलोंके मेलसे बनी हो वह कार्य सिद्धि देती है जो अशुभोंसे बनी हो वह कार्यमें अति विघ्न करती है ॥ १४ ॥ जो एक शुभ दूसरी अशुभसे बनी हो वह प्रथम शुभ पीछे अशुभ देती है जो अशुभ और शुभसे निकली हो वह प्रथम अशुभ पीछे शुभ देती है ॥ १५ ॥

अथ सीरम्।

संबन्धाद्गृहविज्ञानंतसीरंप्रोच्यतेऽधुना ॥ प्रष्टुराद्यंगृहंतत्संबन्धादपराणिच ॥ १६ ॥ ममात्मजस्याकवित्तलाभः कदेति प्रष्टुः प्रथमंगृहंस्यात् ॥

तस्माच्च पुत्रं चततोङ्गनाख्यंलाभंत्वतोवह्निमितं तनुःस्यात् ॥ १७ ॥ तनोर्द्वितीयंधनमुक्तमेवमाद्या द्धनाद्धातनुवित्तसौख्यम् ॥ तसीरमेतच्छरसंख्य मुक्तमनेन पृच्छालयभिन्नकोशः ॥ १८ ॥

टीका--संबंधवश स्थान जाननेको तसीर कहतेहैं सो कहा-जाताहै कि प्रश्न करनेवालेको प्रथम घरहै उसके सम्बन्धसे अन्य घर जानने ॥ १६ ॥ जैसे कोई पूछे कि मेरे बेटेके शालेको धनलाभ कब होगा तो पूछनेवालेका तो प्रथमही घर ठहरा उससे पांचवीं शकल उसके पुत्रकी उससे सप्तम पुत्रवधूकी उससेभी तीसरा घर प्रश्न कर्ताके पुत्रके शालेका ठहरा उस घरसे दूसरे घरमें उसका धनलाभ देखना अथवा उस शालेके घरसे देखना यह तीसरा नाम पंचम उपकरणहै इस विधिसे प्रश्नका स्थान अलग निकाला जाताहै ॥ १७ ॥ १८ ॥

अथ तकरारम् ।

खण्डंयत्पुनरुक्तं स्यात्तकरारंतदुच्यते॥ प्रश्नगेह स्थितंखण्डं पुनरुक्तंयदाभवेत् ॥ १९ ॥ तद्वशेन फलंवाच्यं पूर्वोक्तेनैववर्त्मना ॥ शुभस्थानेशुभंज्ञे यमशुभेचाशुभंवदेत् ॥ २० ॥ जिहस्थानेऽशुभं प्रोक्तंमरातिबवशादिदम् ॥ ज्ञात्वैवंप्रवदेद्विद्वान् नैवंप्रश्नोवृथाभवेत् ॥ २१ ॥

इति श्रीरमलनवरत्ने प्रश्नोपकरणं तृतीयरत्नम् ।

टीका--जो एक सकल पुनरुक्तिसे हो उसे तकरार कहतेहैं प्रश्न घरमें स्थित खण्ड जो किसी दूसरे घरमें भी हो तो इसके वशसे पूर्वोक्त प्रकारसे फल कहना. जैसे धनभावमें लह्यान है धनका

प्रश्न है और दशम भावमें भी लह्यानहो तो राजपक्ष संबंधि धन प्राप्ति जाननी परंतु इसमें इतना विशेष विचारहैं कि, जो वह शकल शुभ स्थानमें होतो शुभफल अशुभमें होतो अशुभ फल कहना ॥ १९ ॥ २० ॥ यदि जिह्वस्थानमें होतो अशुभ अन्योंमें शुभ मरातिवके वशसे जानना इस प्रकार तकरार संज्ञक अनुकरणसे जो विद्वान् प्रश्न कहे उसका व्यर्थ नहीं जाता ॥ २१ ॥

इति रमलनवरत्ने माहीधरीभाषाटीकायां तृतीयं रत्नम् ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थरत्नम् ।

मूलीभूतानिसर्वत्रप्रश्नप्रश्नालयानिहि॥ तेनतन्वादिभावानांप्रश्नभेदान्ब्रुवेऽधुना ॥ १ ॥ तनोःसुखजनिष्फलावयवजीव्यजीवायुषां प्रयत्नबलकार्यकंनृपतिनीतिशान्तिस्तनोः ॥ वराकधनिवित्तदा गमनसाह्यपार्श्वस्थिताः क्रयेतरधनोद्यमाः कृपणदातृजीव्याधनात् ॥ २ ॥

टीका- प्रश्नोंके मूलभूत प्रश्नालयहै इसलिये तनु आदि भावोंके भेद यहाँ कहे जातेहैं ॥ १ ॥ प्रथम घरमें शरीर सुख दुःख जन्म स्थान, शरीरके अंगुलि आदि अवयव, आयु,मृत्यु, उद्यम (यत्न) बल, कार्यबल, राजनिति, शांति इतने प्रश्न प्रथम घरसे विचारने तथा कंगाल, धनवान्, धन देनेवाला, धनागमन, सहायक पार्श्वमें बैठे मनुष्यका, पडोसीका, खरिदसे सिवाय धनके उद्यम मूंजीका दाताका, और आजीविका इतने विचार दूसरे घरसे करने ॥ २ ॥

तार्तीयकेस्वजनसेवकबन्धुमित्रसंतोषसोदरभगिन्युरुचेष्टितानि ॥ विद्यापराक्रमविनोदसमी

पयात्रास्वप्रेक्षितानि च मिलंति विलोकितानि ॥ ३ ॥ तुर्यगृहस्थितिकृषीः पितृमातृवित्तपाताल भूगततरुस्वपरप्रदेशाः ॥ कार्यावधौपरिणातिमृतिभूमिचिंताक्षेत्रागदेतरणिवाहजलाश्रयाणि ॥ ४ ॥ बुद्धिप्रसादसुतमोदसुहृत्सुशिल्पमांगल्यमादककुतूहलपैतृकाणि ॥ दूतागमप्रमदपात्रशुभांशुकानिस्युःपंचमेकुशलपत्रिकगर्भचेष्टा॥५॥ दासर्णपाचनहरापहृतार्थरोगदोषाल्पदेहपशुप--क्षिगणार्थचिंता ॥ संतोषचेटकशुचोरिपुगर्भचेष्टेप्रच्छन्नदोषकृपणावगतीरिपौस्युः ॥ ६ ॥

टीका—तृतीय घरमें अपने आदमी, दास, बंधु, मित्र, संतोषिता भाई, बहिन, विशेष चेष्टा, कार्यारंभ, विद्या, पराक्रम, विनोद, नजदीक यात्रा, स्वप्न, देखनेके कर्म, इतनी बात तृतीयभाव देखनेसे मिलतीहैं ॥ ३ ॥ चौथे घरमें, गृहकी स्थिति, खेतीका काम पिता, माता, धन, खत्ता आदि भूमिगतकर्म, वृक्ष स्वदशे परदेश कार्यकी अवधि, कार्यका परिणाम, मृत्युविचार, भूमिविचार, खेती फसल नैरुज्य, सुखवान्, जलकृत्य, जलश्राय वाहन इतने विचार देखना ॥ ४॥ पंचममें बुद्धिका प्रसाद, पुत्रविचार, प्रसन्नता, मित्र, शिल्पकर्म, मंगलकर्म, मादककर्म, खेल, पिताका द्रव्य, वा ताऊ चाचा दूतका आगमन, प्रमाद, पात्र, शुभवस्त्र, कुशलवार्ता, चिट्ठीपत्री और गर्भसंबंधि चेष्टावोंका विचार करना ॥ ५ ॥ छठे घरमें दास ऋण, परिपाक, आपत्हरणकरी वस्तु, दूसरेने हरणकरी वस्तु चोरागया धन, रोग, दोष, देहदुर्बलता, पशुपक्षिसमूह, धन, चिंता, संतोष, चेटक, शोक, शत्रु, गर्भचेष्टा, गुप्तदोष कृपणगति इतने विचारने ॥ ६ ॥

उद्वाहनष्टवनितोन्मुखशत्रुवादयुग्मोद्यमागमधवा रतिचौरभेदाः ॥ स्थानांतरास्थितिजयस्वपरप्रवेशावाणिज्यमार्गरणचिंतनमाद्रिगेहे ॥७॥ शोकर्ण दानभयमृत्युहराहृतार्थप्राग्जीव्यदुःस्थितिमृतार्थगतार्थदुःखम् ॥ दुर्नीतिकोटिगिरिशून्यविषाद चिन्तानिद्रालसप्रहरणानि तथाष्टमेऽपि ॥ ८ ॥ भाग्यार्द्धिधर्मव्यभिचारदानदूरेगतिस्वप्नयातित्वविद्याः ॥ पितृव्यवित्तेष्टरातिश्रमाणि भाग्येपि विश्वासकथा विलोक्याः ॥ ९ ॥

टीका-सप्तस्थानमें विवाह, खोयीगयी वस्तु, स्त्री आदिका विचार, शत्रुसे कलह, युद्ध आदि, संधि, उद्यम, प्रवासिका आगम, स्त्रीकापति, रति, चोरके भेद, अन्यस्थान गमन, स्थिति, युद्धमें जय, स्वचक्रपरचक्र, व्यापार, मार्गसफर, रणका विचारकरना॥७ अष्टमस्थानमें, शोक, ऋण, दान, भय, मृत्यु, गया आया द्रव्य पूर्वाजीविका, दुष्टास्थिति मृत्युसंबंधि कार्य, गयाधन, दुःख, दुष्टनीति, किला, पहाड, शून्यस्थान, विषाद, चिंता, निद्रा, आलस्य, चोट, इतने, विचारना ॥ ८ ॥ नवमभावमें भाग्य, वृद्धि, धर्म व्यभिचार, दान, यात्रा, स्वप्न, अज्ञान, चाचा ताऊका वित्त इष्ट राति, श्रम और विश्वासकी कथा विचारनी ॥ ९ ॥

राज्याधिकारजनकीर्तिबलप्रतापवृष्ट्युद्यमागदजनित्रिभिषग्गुरूणाम् ॥ स्वामिस्वजातिसलिलागममंत्रयंत्राः सेवेष्टपूर्तिविशदा दशमे विलोक्याः ॥ १० ॥ सुहृन्मतीसात्विकराजकोशौभाग्योद

यामात्यनिजेप्सितातिः॥ आशास्तुतीः सत्यवि तथ्यचिंतारौद्रेनृपन्यायकृतोर्नुतिश्च ॥ ११॥ करि वृषाद्यारिबंधविमुक्तयोर्निगडगेहमृणस्य विमोचनम् ॥ अलघुरुग्रिपुदंभभयाक्षितिव्यवहरप्रसरार विसद्मनि॥ १२॥ पृच्छकस्यगुणवर्णचिंतनंसाक्षिताग्निसदनत्रयस्यच ॥ उम्महम्मगृहसाक्षितांच केचिद्वदंतिभवनेत्रयोदशे ॥ १३ ॥

टीका—दशमस्थानमें राज्याधिकार, राजकीय मनुष्य, कीर्ति, बल, प्रताप, वर्षा, उद्यम, निरोगिता, माता, वैद्य, गुरु, स्वामी, स्वजाति, जलागम, मंत्र, यंत्र, सेवा, इष्टापूर्ति, विशदको विचारना ॥ १०॥ मित्र माति, सात्विकभाव, राजपक्ष, खजाना, भाग्योदय, मंत्री, अपनी इच्छाके कार्यकी प्राप्ति, अभिलाषा, स्तुति, सत्य झूंठकानिर्णय, राजपक्षाधिकारीन्याय करनेवालेका विचार, नम्रता ग्यारहवें भावमें विचारने ॥ ११ ॥ हाथी, बैल आदि, शत्रुके बंधनसे छूटना, कैदखानेका विचार, ऋणनिर्मुक्ति, बडारोग, शत्रु, दंभ, भय, पृथ्वी, व्यापार व्यय इतने विचर बारहवें घरसे देखना ॥ १२ ॥ प्रश्न पूछनेवालेके गुण रंगआदिकाविचारसाक्षिस्थान १३। १४। १५। में देखना, इसमें भी उम्महां घरकी साक्षि ताभी कोईक तेरहवें घरमें कहते हैं ॥ १३ ॥

प्रोच्यतेसदसतोर्द्वयोर्मिथः कार्यकारणमिदंच तुर्दशे ॥ आनिलालयवनातसाक्षिताऽऽदशएत दुपनामतः स्मृतम् ॥ १४ ॥ प्राड्विवाकसदने शुभाशुभंप्राणिकार्यमथानिश्चयोमतः ॥ यद्वदत्र

खलुपंचचन्द्रकेमुत्पलस्य सलिलस्य साक्षिणि ॥ १५ ॥ षोडशेतुसुखदुःखसमुत्थंचिंत्यमेवपरिणामफलंयत् ॥ विश्वविग्रहहराविव सर्वं भूगृहादिशकलैकसाक्षिणि ॥ १६ ॥

इतिगृहषोडशगृहविचार्य्यवस्तुभेदः ॥

टीका–कार्य्य एवं उसका कारण दो मुख्य विचार्य होते हैं चौदहवें घरसे इन दोनोंका परस्पर संबंधसे विचारकरके शुभाशुभकहा जाताहै अग्नितत्त्व स्थानके वश वनात क्रममें इस घरका साक्षिताहै इसीका उपनाम आदर्श भी कहाहै क्योंकि यह कार्य कारणको प्रतिबिंब सदृश दिखाय देताहै ॥ १४ ॥ पंद्रहवां घर सर्वसाक्षी है इसीसे इसको (प्राड्विवाक) सिरिस्तेदार वा न्याय विचार कहते हैं इस घरमें प्राणीके कार्य्यका शुभाशुभनिश्चय होताहै बुद्धिकाभी निश्चय इसीसे होता है निश्चय है कि जैसे फल एवं कमलकी साक्षिता है ऐसेही यह पंचदशम घर सभी स्थानोंका साक्षी है ॥ १५ ॥ सोलहवें घरमें सुख दुःखसे उत्पन्न जो परिणाम फल उसका विचार करना जैसे तेरहवेंसे मुख्य शकल और उसके गुणकसे साक्षीखण्ड निकालकर कार्य लियाजाता है ऐसेही भूमितत्त्व आदि करके साक्षितामें यह खण्डकाम देता है ॥ यह इन १६ शकलों विचारणीय वस्तुभेद कहा ॥ १६ ॥

प्रश्नार्थमिष्टदेवप्रार्थना ।

निधायहृदिमंजुलंगणपपादपंकेरुहं प्रमथ्यरमलांबुधिंसकलमत्रभूमीतले ॥ चमत्कृतिकरपरं विबुधमण्डलीमण्डनंप्रकारमधुनाब्रुवे सकलरम्लविद्योपितम् ॥ १७ ॥

टीका—अब ग्रंथकर्ता प्रश्नचमत्कार कहनेकेवास्ते प्रथम अपने इष्ट देवताको प्रणाम करते हैं कि अपने हृदयमें गणेशजीके रमणीय चरण कमलको धारण करके इस संसारमें संपूर्ण रमल रूपी समुद्रको मथन करके; परम चमत्कार करनेवाला विद्वानोंकी मण्डलीको भूषित करनेवाला प्रकार, जो समस्त रमलशास्त्र जानने वालोंसे गुप्त है, उसे प्रकट करके इस समय कहताहूँ ॥ १७ ॥

प्रागुत्थितो रमलवित्स्वगुरुं प्रणम्य ध्यात्वा पदाम्बुजयुगं सुशुचिर्मुरारेः ॥ प्रश्नार्थिनः कति ममांतिकमागमिष्यंतीत्थं विवित्सुरमलाक्षयुगं क्षिपेज्ज्ञः ॥ १८ ॥

टीका--प्रातःकाल रमल जाननेवाला, शयनसे उठके शौचादि नित्य कर्मसे पवित्र होके अपने गुरुको प्रणाम एवं श्रीविष्णु भगवान्के चरण कमल युगलोंका ध्यान करके आज मेरे पास कितने प्रश्न पूछनेवाले आवेंगे इसके जाननेके प्रथम पाशाओंकी जोडी पट्टीमें फेंके ॥ १८ ॥

प्रस्तारमाद्यवत्कुर्यादत्रचेद्द्विज्दहालये ॥ खण्डानि स्युस्तदाप्रष्टागंतानोचेन्नचाव्रजेत् ॥ १९ ॥ यावंति तानिखंडानि तावत्संख्यागमोनृणाम् ॥ पुंखंडैः स्त्रीदलैः स्त्रीणां क्लीबैः क्लीबागमो भवेत् ॥ २० ॥ अयमऽजदखण्डैर्बाह्यागमः प्रोक्तवद्दलैः ॥ आद्य विश्वौरुद्रशक्रौहत्वाद्वैत्वैकमेतयोः ॥ २१ ॥ कुर्यात्तत्प्रश्नगंचेत्स्यात्प्रष्टापूर्णकरोऽन्यथा ॥ रिक्त पाणिश्चतत्पाणौकिमस्तीतिविचिंतयेत् ॥ २२ ॥

प्रष्टः करगतोधातुस्तत्खण्डेत्वग्निखे भवेत् ॥
जीवोत्थं वायुजेम्भोजेमूलंभौमेमणिंवदेत् ॥ २३॥
इत्थमागामिसंख्याद्यं कृत्वाद्यात्क्रमतः पृथक् ॥
तत्तत्प्रस्तारकानादौकृत्वा प्रश्नं विलोकयेत्॥२४॥

टीका--पाशाके अनुसार प्रस्तार करना तहाँ यदि विज्दह घरमें वे खण्ड होंतो प्रश्न करनेवाले आवेंगे जानना उक्त घरमें न होतो नहीं आवेंगे जानना जैसे प्रस्तारमें जो शकल प्रथम घरमें हो वह विज्दह क्रममें भी प्रथम घरकी हो ऐसेही जो खण्ड जिस स्थानमें वह विज्दह क्रमके उतनेही घरकाहो ऐसे जितने खंड मिले उतने प्रष्टा आवैंगे कोई भी ठीक अपने स्थानमें न होतो कोई नहीं आवेगा ॥ १९ ॥ इसमें भी विशेष विचारहै कि जितने खण्ड मिलें उतने मनुष्य तो आवेंगे परंतु उन खण्डोंमें भी जितने पुरुष खण्डहैं उतने मर्द, जितने स्त्री खण्डहैं उतनी स्त्री और नपुंसकों तुल्य नपुंसक प्रश्न पूछनेवाले आवेंगे ॥ २० ॥ यह क्रम अथवा अबजद खण्डसे उक्त प्रकारसे देखना और पहिले तेरहवेंसे ग्यारह चौदहसे दो शकल निकालके फिर उनसे एक बनायक देखे कि वह खण्डप्रश्न प्रस्तारमें हैं तो पूछनेवाला हाथमें कुछ लेके आवेगा यदि वह सकल प्रस्तारमें न हो तो प्रष्टा खाली हाथ आवेगा जानना अब यह विचार करना कि प्रश्न कर्ताके हाथमें क्याहै॥२१॥२२॥जो वह एक खण्ड निकालाहै उसमें ऊपरके स्थानमें अग्नितत्त्व हो तो प्रष्टाके हाथमें धातु वस्तु है वायुतत्त्व होतो जीव है जलतत्त्व होतो मूलहै,भूमि तत्त्व होतो मणि है कहना॥२३॥ इस प्रकार आगामी संख्या आदि जानके क्रमसे पृथक् २ विचार करना जिसमें जैसा प्रस्तार कहाहै वैसा बनायके प्रश्न देखना॥२४

मनोगतं किंकिमुतत्रबीजं कोवास्तिभेदः किमु सिद्धयासिद्धिः॥ इत्थं विमर्शायततोद्यमानांतत्प्रा प्तये संप्रवदामि युक्तिम् ॥ २५ ॥

टीका-पूछनेवालेके मनमें क्याहै उसका बीज क्याहै प्रश्नका भेद क्याहै उसमें सिद्धि असिद्धि क्या होगी इस विचारके वास्ते और उद्यम तथा उसके प्राप्तिके वास्ते युक्ति कहताहूं ॥ २५ ॥

मनोगतं स्यात्प्रथमं द्वितीयं तत्कारणं भेदमथो तृतीयम् ॥ तुरीयमत्रास्ति च सिद्धयसिद्धिः स र्वेषु प्रश्नेषु चतुः प्रकाराः ॥२६॥तेषां क्रमाच्छा कुनकेन्द्रगार्द्धाविश्वान्नृपाताःकिलपाशकोत्थाः॥ तत्साक्षिणस्तैः क्रमतो विनिघ्नास्तज्जाब्धिखंडा स्तुपृथग्विधेयाः ॥ २७ ॥ प्रस्तारकेन्द्राणि तथा पराणि तत्पंचमाः साक्षिण एव तेषाम् ॥ मिथो विनिघ्नाश्च तदुत्थखण्डाश्चत्वारएवं पुनरत्रकार्याः ॥ २८ ॥ पूर्वागतस्तं क्रमतोविनिघ्नाश्चत्वारिचै भ्यः प्रकटीकृतानि ॥ प्रश्नोहृदुत्थाद्याखिलप्रभे दास्तेषां ग्रहैः स्युः शकुनाः क्रमेण ॥ २९ ॥

टीका-प्रश्नमें मुख्यकारण पहिला मनकी बात दूसरा उस प्रश्नका कारण तीसरा उसका भेद और चौथा कार्यकी सिद्धि वा असिद्धि हैं ये चार कारण चार प्रकारके सभी प्रश्नोंमें है ॥ २६॥ इनकी युक्ति कहतेहैं कि शकुन क्रमसे केन्द्र १।४।७।१० के शकल ⚌ ☰ ⚌ ⚍ इनके साक्षीप्रस्तारमें १३।१४।१५।१६ घरहैं इन घरोंमें जो शकल हों उनसे उक्त केन्द्र खंडोंको गुनके चार शकल

बनायके पृथक् रखनी ॥ २७ ॥ तब प्रस्तारमें जो केन्द्र १ । ४ । ७ । १० शकल हैं उनकी पंचमपञ्चम, अर्थात् ५ । ८ । ११ । १४ साक्षी हैं, इनमें स्थित शकलोंसे केन्द्र स्थित शकलोंको गुणके ४ शकल होती हैं तब पूर्वानीत पृथकस्थ खण्डोंसे; इन चार शकलोंका मेल करके चारही शकल तयार करनी ॥ २८ ॥ पूर्वगत ४ खण्डोंसे क्रमकरके पहिलेसे पहिली दूसरेसे दूसरी इत्यादि क्रमसे जब केवल ४ शकल प्रकट हो जावें तब इन चारोंसे पूर्वोक्त मनकी बात आदि कहना अर्थात् पहिली शकलसे मनकी बात जिसे पारसीमें जमीर कहते हैं दूसरीसे उस प्रश्नका कारण तीसरीसे उसका भेद ये तीनोंका हाल शकुन क्रमसे जानना और चौथी शकलके शुभाशुभादि विचारसे कार्यकी सिद्धि असिद्धि कहनी २९॥

अथैषामुदाहरणम् ।

केनाप्यथागत्य कृतेति पृच्छारम्लज्ञ मे मानसहेतु भेदात् ॥ प्रश्नेङ्ककेनैव हि सिद्ध्यसिद्धीर्वदाशुचित्रं यदिहास्ति सम्यक् ॥ ३० ॥ क्षितेक्षयुग्मेतनुगोत्र हुम्राधनेङ्क्शिवैत्रिचतुर्थयोश्च ॥ स्यात्कञ्जुतुलखारि जखंडमेभ्यः प्रस्तारमाद्युक्तविधेःस्फुटं स्यात्॥३१॥ शकुनादिमलह्यानप्रश्न विश्वकदाख्ययोः ॥ योगे फहांङ्गहुम्रातत्पंचमस्थानदाख्ययोः ॥३२ ॥ योगा दतबदं तस्य फर्हा तकरवं भवेत् ॥ तृतीयशकुने तस्य गृहं स्यान्मानसेक्षिते ॥ ३३ ॥

टीका--प्रश्नके ४ कारणोंका उदाहरण है कि किसीने आयके पूछा कि हे रम्माल ! मेरे मनके कारणके भेदोंको एकही प्रश्नमें सिद्धि असिद्धि सहित शीघ्र कहो यदि इसमें तात्पर्य अच्छा है तो॥३०॥

ऐसे प्रश्नहुयेमें पाशा डाला तो प्रथमस्थानमें हुम्रा दूसरेमें अंकीश तीसरे और चौथेमें भी कब्जुलखारिज आया इससे प्रस्तार बनाया ॥ ३१ ॥ शकुन क्रमम प्रथम घरमें लह्यान है तेरहवें प्रस्तारमें कबजुलदाखिल है इनका योग-कियातो फरहा भया, प्रथममें हुम्राहै इसका साक्षी पाँचवाँ नुस्रत्दाखिल है इनके योगसे भया तब पूर्वागत फरहासे इस अतवेदाखिलका योग कियातो कबजुल खारज भया. यह शकल शकुन क्रममें तीसरे घरकी है इससे तीसरे घर संबंधी प्रश्न प्रष्टाके मनमें कहना स्थानोंके विचार पूर्वोक्त हैं तीसरेमें भाई वा समीप गमनका प्रश्न कहना यह प्रथमकेन्द्र १ घरसे कार्य भया ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

प्रस्तार.							
						क.रा.	

शकुनाङ्घ्रौ जमातं तत्साक्षिप्रश्नेन्द्रगं नखम् ॥
तयोर्योगान्नखंजातं भूयःप्रश्नेङ्घिगंकखम् ॥ ३४ ॥
तत्पंचमेऽष्टमेहुम्राऽत्तवेखंस्यात्तयोर्युतेः ॥ नखा
तवेखयोर्योगावयाजंशकुनेङ्कक्रम् ॥ ३५ ॥ कारणं
नंदगेहस्थं वर्त्तते तत्र चिन्तनः ॥ ३६ ॥

टीका—अब दूसरा केन्द्र चौथा घर है शकुन क्रममें चौथे घर जमात है उसका साक्षी १४ वें में प्रस्तारमें नुस्रुतखरिज है इनके योगसे न० खा० हीभया, ॥ ३४ ॥ इस चौथेसे पंचम शकुनमें अष्टम हुम्रा है फिरभी प्रश्नमें चौथे केन्द्रमें क० खा० है इनके योगसे अतबेखारज भया नु० खा० और अ० खा० के

योगसे बयाज ☰ भया यह शकुन क्रममें नवमघरमें है इससे प्रश्नका कारण नवमघर संबंधी जानागया ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

शकुनेद्विगृहेङ्कीशांस्थितंप्रश्नेतिथौतथा ॥ उक्का तद्घातसंभूतंलह्यानंप्रश्नशैलगम् ॥ ३७ ॥ तदंत स्येषुरुद्रस्थनक्यालह्यानकंयुते ॥ तद्गृहं शकुने चाद्यं तद्भेदे तस्य चिंतने ॥ ३८ ॥

टीका--शकुन क्रमके सातवें घरमें अंकीश ☰ है ऐसेही प्रस्तारके पंद्रहवें घरम उक्काहै ☱ इनके घातसे लह्यान ☰ हुआ अब प्रश्नप्रस्तारके सप्तमकेन्द्रमें ☴ जुम्तुतदाखलहै इसस पंचम ग्यारहवें घरमें नकी ☳ है इनके योगसे लह्यान भया ☰ यह खण्ड शकुनके प्रथम घरमें है इससे प्रथम घर प्रश्नके भेदका है प्रथम गृह संबधी भेद प्रश्नका कहना ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

सिद्ध्यसिद्ध्योर्गृहंव्योमशकुने तत्र खान्वितम् ॥ तस्याःसाक्षीनृपेफर्हा ☳ प्रश्नेतद्घातजाङ्किशम् ☰ ॥३९॥ पुनः प्रश्नेजमातंस्याद्वयोम्नि ☰ तत्पंचमेन्द्रगम् । नखं ☱ तयोर्योगजातंनखंतन्निघ्नमंकिशम् ॥ ४० ॥ तत्रफर्हादलंसौम्यंजातंकार्यार्थसिद्धिकृत् ॥शकुनेपंचमेगेहेसिद्धिस्तस्यसहायतः ॥ ४१ ॥ भोपृच्छकत्वमिहवाञ्छासिसोदरस्यदेशांतरेऽत्रवसनात्सततंसुखाप्तिम् ॥ द्रव्योद्यमाद्यखिलकार्यविधानसिद्धिंतत्ते भविष्यति सुहृत्सुतसाहचर्यात् ॥ ४२ ॥

टी०-कार्यसिद्धि असिद्धिका दशम केन्द्र है शकुनक्रममें दशम स्थानगत नुसुत्खारिज ⚍ है इसका साक्षी सोलहवां घर प्रस्तारमें फरहा ⚍ है इनके घातसे अंकीश ☰ भया॥३९॥ फिर प्रस्तारमें दशम घरमें जमात ☰ है इसका साक्षी इससे पंचम प्रथमसे चौदहवाँ नुसुत्खारिज ⚍ है इनके योगसे ⚍ नु० खा० भया- अब अंकीश और नु० खा० के योगसे ⚍ फरहाभया यह खण्ड सौम्यहै. इससे कार्यसिद्धि होती है यह शकल शकुनक्रमके पंचम घरमें है इससे पंचमभाव संबंधी पुत्रकी सहायतासे कार्य होगा कहना ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ऐसे चारों भेद खोलके पृच्छकसे कहना कि, हे पूछने हारे तू इस वक्त देशांतरवासी अपने भाईके सुखके लिये पूछता है और द्रव्यके उद्यम आदि समस्त कार्य विधानोंकी सिद्धि मित्र एवं पुत्रकी सहायतासे होगी ॥ ४२ ॥

अथान्यत्।

आद्यविश्वोद्भवंखण्डंप्रस्तारेस्यात्तदाध्रुवम् ॥ स्वार्थंप्रश्नस्तदावाच्योनोचेत्प्रश्नः परार्थकः॥४३॥ प्रस्तारेतद्गृहेप्रश्नोनोचेत्तच्छकुनालये॥मूकप्रश्नेद्वितीऽयोयंप्रकारः परिकीर्तितः॥ ४४॥

टीका- और प्रकार कहते हैं कि, प्रथम और तेरहवाँ खण्ड जोडके जो शकल हो वह प्रस्तारके किसी घरमें होतो यह प्रश्न निश्चय अपने अर्थ है यदि वह शकल प्रस्तारमें कहीं भी न होतो दूसरेके वास्ते प्रश्न पूछता है कहना ॥ ४३ ॥ प्रस्तारके जिस घरमें वह शकल मिले वह शकुनक्रमसे जिस घरकी हो उस घरका प्रश्न जानना यह मूकप्रश्नमें दूसरा प्रकार कहा है ॥ ४४ ॥

मूकप्रश्नेतृतीयंतु प्रकारमधुनोच्यते ॥ कृत्वा प्रस्तारबिन्द्वैक्यंषोडशाशावशेषतः ॥ ४५ ॥

मूकप्रश्नालयंज्ञेयंविश्वाद्यैस्तनुतोऽङ्घ्रिषु ॥ अन्य
न्मतांतरंवक्ष्येमूकप्रश्नेतुरीयकम् ॥ ४६ ॥

टीका-अब मूकप्रश्नमें तीसरा प्रकार कहा जाता है कि, प्रस्तारमें जितने बिन्दुहैं सबको संख्या करके १६ से भागलेना जो शेष रहै ॥ ४५ ॥ वह १३ । १४ । १६ । और १ से ४ तक भावोंमें देखना जहाँ उतनी शकल शकुन क्रमकी मिले उसमें उसका साक्षी मिलायके जो हों वह शकुनमें जिस घरकी हो उसके संबंधी प्रश्न कहना अब चौथा प्रकार मूकप्रश्न बतानेका मतांतरसे कहते हैं ॥ ४६ ॥

तिथिविश्वनन्दचन्द्रप्रमितालयशकलभूमिभागे-
भ्यः ॥ आद्यद्वित्रितुरीयशकलस्थितिवह्निभा
गेभ्यः ॥ ४७ ॥ पञ्चमरससप्तमवसुगेहस्थित
शकलसलिलभागेभ्यः ॥ वस्वर्कालयशकलानि
लभागाभ्यां मनोश्च शकलस्य ॥ ४८ ॥ जलभा
गात्षोडशगृहशकलस्यवह्निभागाच्च ॥ आदाय
शून्यरेखाः क्रमतोऽङ्घ्रिखण्डकान्कुर्यात् ॥ ४९॥
चतुर्भ्योद्वेसमुत्पाद्य द्वाभ्यामेकं च साधयेत् ॥
तत्खण्डवशतः प्रश्नंविश्वादौ पूर्ववद्वदेत् ॥५०॥

टीका-कि १५ । १३ । ९ । १ इन स्थानोंके शकलोंके भूमि भागसे तथा १ । २ । ३ । ४ शकलोंमें स्थित अग्नि भागसे ॥ ४७ ॥ एवं ५ । ६ । ७ । ८ घरोंमें स्थित शकलोंके जलभागसे ८ । १२ शकलोंके वायु भागसे तथा १४ वीं शकलकेभी जलभागसे ॥ ४८ ॥ और १६ वें घरमें स्थित शकलके अग्निभागसे क्रमसे शून्य रेखा

लेके चार शकल तैयार करनी ॥ ४९ ॥ इन चार खण्डोंको मिलायके दो खण्ड करने इन दोसेभी एक करनी उसके अनुसार तेरहवें आदि साक्षीदेखके पूर्ववत् प्रश्न कहना ॥ ५० ॥

अन्यच्च ।

पुनरन्यंविधिंवक्ष्येमूकप्रश्नेतु पञ्चमम् ॥ नवाश्चारुद्रसूर्याणांखण्डानांवह्निभागतः ॥ ५१ ॥ पूर्वक्रमेणैकखण्डंरचयेद्दैवचिंतकः ॥ तस्याब्दहगृहाद्वाच्यः प्रश्नोरमलकोविदैः ॥ ५२ ॥

टीका-अन्ययुक्ति मूकप्रश्न बतलानेकी पुनः पंचम प्रकार कहते हैं कि ९।१०।११।१२ वें खण्डोंके अग्नि भागसे पूर्वोक्त विधिसे दैवज्ञने एक शकल तैयार करनी वह शकल अब्दह क्रमके जिस घरमें हो उस घरसंबंधि प्रश्न रमलज्ञने कहना ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

अथतिथिगृहाच्छून्यचालनद्वाराखिलमूकाशिरोमणिंमूकप्रकारमाह ।

विषमशून्यदलंनतिथौभवेद्यदिभवेत् कुहाचिभ्रमदर्शकम् ॥ निगमरेखवियद्दलमत्रतत्कुरुतदोद्घटनंखयुगाप्तये ॥ ५३ ॥ पंचेन्दुगेहांबरयुग्ममंतरानमूकासिद्धिर्नफलोद्गमोपिच ॥ तस्मात्तिथौ शून्ययुगंप्रसाधयेदुद्घाटनेज्ञानविधानतत्परः ॥ ५४ ॥

टीका-अब पंद्रहवें घरसे शून्य चालन करके संपूर्ण मूकप्रश्नोंका शिरोमणि प्रकार कहतेहैं कि जो पंद्रहवें घरमें विषम शून्य खण्ड न होतो भ्रम दिखाताहै अर्थात् जमात शकल १५वें में होतो बद्धप्रस्तार (जायचाबंद) कहतेहैं इससे प्रश्न नहीं हो सकता। रेखाबिंदु होनेमें बिंदुचालन होता है इसवास्ते उसके उद्घाटन (खोलने) के निमित्त युक्ति करो॥५३॥ पंद्रहवें घरमें दोशून्य न हों

तो मूकप्रश्न नहीं कहा जासकता न उसका फलही मिलता तस्मात् १५ वें घरमें दो शून्योंका साधन उद्घाटन ज्ञान विधिमें तत्पर ज्योतिषी उद्घाटन करे ॥ ५४ ॥

अथोद्घाटनम् ।

आद्यविश्वेतुर्य्यंशक्रेसप्तपंचदशे तथा ॥ खनृपेच मिथोहन्यात्क्रमात्कृत्वाऽब्धिखण्डकान् ॥ ५५ ॥
तेभ्यः प्रस्तारमुत्पाद्यतस्माच्छून्येप्रचालयेत् ॥
पुनस्तत्रजमातंचेत्तदाकुर्य्यादमुंविधिम् ॥ ५६ ॥
लह्यानहुम्राबयजांकीशानांतुचतुष्टयम् ॥ क्रमेणोद्घाटितस्याद्यैः शकलैर्योजयेत्सुधीः ॥ ५७ ॥ चत्वार्य्युत्पाद्यखण्डानितेभ्यः प्रस्तारमाचरेत् ॥ शून्यलाभोभवत्येव तस्मात्तत्तुप्रचालयेत् ॥ ५८ ॥

टीका-अब बद्धप्रस्तार (बंदजायचा) का उद्घाटन (खोलना) कहतेहैं कि प्रथम शकलमें तेरहवीं चौथीमें १४ वीं सातवीमें १५वीं दशवीमें १६ वीं शकल गुणके क्रमसे ४ खण्ड तैयार करने ॥५५॥ इन ४ से प्रस्तार बनायके तब बिन्दु चालन करना यदि फिरभी १५ वें घरमें जमात आजावे तो तब यह विधि करनी ॥ ५६ ॥ कि लह्यान, हुम्रा, बयाज, अंकीश, इन ४ को पहिले जो खोला हुआ जायचा है उसके प्रथमके ४ शकलें क्रमसे जोडदेना ॥५७॥ ऐसे ४ शकल करके इनसे प्रस्तार बनाना इस विधिसे अवश्य १५ वें घरमें शून्य मिलैंगी तब बिन्दु चालन करना ॥ ५८ ॥

अथशून्यचालनम् ॥

गमागमाभ्यांवियतोर्गतीस्तः स्वजन्मखण्डस्थ निजाभ्रयुक्तिम् ॥ शरेन्दुगेहादिहवामदक्षेतन्नष्ट

खंडांतरगेक्रमेण ॥ ५९ ॥ आद्यद्वितीयाभ्रगता लयाभ्यां प्रश्नोत्तरेप्रष्टरथोविचिंत्य ॥ तात्काल साक्ष्यर्द्धबलंतथाद्यज्ञेयंद्वये साक्षिचतुष्कवीर्यम् ॥ ६० ॥ आद्यशून्यस्थितेखण्डात्प्रश्नोवाच्यो ब्दहक्रमात् ॥ प्रश्नावधिश्चतत्सिद्धिर्द्वितीयेभ्रे समुच्यते ॥ ६१ ॥

इतिरमलनवरत्नेमूकप्रश्ननिरूपणश्चतुर्थरत्नम् ॥ ४ ॥

टीका-बिन्दुचलाना कहते हैं कि पंद्रहवें घरमें जो शून्य वायु आदि तत्त्वके स्थानोंमें स्थित हैं उनका उत्पत्तिस्थान देखना कि किस किस घरसे ये आये हैं जहाँसे उसकी पैदायश है वहाँ वह स्थिति जाननी १५ घरसे बाँयें वा दाहिने जहाँ चले पहिले घरसे ऊपर आठवेंके भीतर उसकी स्थिति मिलनी चाहिये जैसे १५ वें घरमें वायु आदि तत्त्वकी जगह जहाँ शून्य हो उसी स्थानमें १३ १४ मेंसे किसीमें वह शून्य चलीजावै वह वहाँही स्थित जाननी यदि तेरहवें घरमें जावैगी तो नवें वा दशवें घरमें उसी तत्त्वकी जगह शून्य जावैगी जो चौदहवें घरमें जावै तो ११वें घरमें तत्त्वकी शून्य जावैगी यदि ११ वें भावमें स्थित हो तो पांचमें तथा छठेमें शून्य जावैगी वहाँ जिसघरमें इस शून्यके स्थानमें शून्य हो उसी जगह स्थित जाननी यदि शून्य १२ वें घरमें जावे तो ७ वें आठवेंमें उसी तत्त्वके स्थानमें जो शून्य जाव वह उसके स्थानमें स्थित जाननी यह विधि शून्य चालनकी है ऐसेही दूसर शून्यको चलावै वह १ से ८ भीतर जिस घरमें ठहरे वही घर प्रश्नोंमें साक्षी जानना ॥ ५९ ॥ पहिले और दूसरे बिन्दु १५ वें घरके चलायवेमें जो घर स्थितिके मिलें उन्हींसे प्रश्नका उत्तर विचा-

रना उसवक्त जो साक्षिखण्ड है और जो पाहिला बिन्दु चालनसे पाया घर है इनके बलाबलसे ४ प्रकारके प्रश्न कहने ॥ ६० ॥ आद्य शून्य स्थित शकलसे तो प्रश्न अन्देह क्रमसे कहना और दूसरे शून्य चालनसे जो स्थिति घर पाया इससे प्रश्नकी अवधि कार्यकी मियाद कहनी सभी प्रश्नोंमें ४ काल ऐसे होते हैं कि भूत १ भविष्य २ वर्तमान ३ और आकस्मिक ४ आकस्मिक वह है जो कुछ स्वतः सिद्ध हो परंतु अचानक कुछ उसमें और मिलाहो इसका प्रयोजन है कि वह साक्षीखण्ड उन्महांत पंक्तिमें जिस पंक्तिमें जिस घरमें हो उसी घरकी पूर्व पंक्तिमें हो तो आकस्मिक यदि अपनी पंक्तिमें पिछली पंक्तिमें होतो भूतकाल जो अपने आगे हो तो वर्त्तमानकाल और जो अपनी पंक्तिके नीचे अपनेही घरमें हो तो भविष्यकालका फल कहना यहाँ औरभी स्मरण रखना चाहिये कि यही पंक्तिका आकस्मिककाल बतानेवाली शकल चौथी पंक्तिमें जाननी अर्थात् इसके पूर्व भागमें नीचेकी पंक्तिको समझे और चौथी पंक्तिका भविष्यकाल पहिली पंक्तिसे कहना पंक्तिके आदिमें भूतकाल ८ वीं शकलसे कहना ८ वींका वर्तमान काल पहिली शकलसे कहना अर्थात् इनके जिस भागमें आगे कोई शकल न हो तहाँ सन्मुख भागकी अंतिम पंक्तिकोही आगे समझना ॥ ६१ ॥

इति रमलनवरत्ने माहीधरीभाषायां मूकप्रश्ननिरूपणं नाम चतुर्थं रत्नम् ।

अथ पंचम भावप्रश्ननिरूपणम् ।

नरस्तनौ यो वदनेकरीन्द्रो बालार्कदीप्तिर्ज्वलना
क्षिभालः ॥ कोसावितिप्राहसमुत्स्मयंती शिवे
क्ष्यसूनुंसददातुवाचम् ॥ १ ॥ यद्भमादानुकूल्या

ष्टिस्तं प्रश्नं निर्गमं विदुः॥यदागमात्खरुत्पत्तिः संप्रश्नो दाखिलो मतः ॥ २ ॥ स्याद्यत्सत्त्वैकतःश्रेयस्तंप्राहुःस्थिरसंज्ञकम् ॥ खारिजंनिर्गमं दाखिलागमंसावितं स्थिरम् ॥ ३ ॥ पूर्वोदितप्रश्नगृहाणिबुद्ध्वात्रीन्निर्गमाद्यानपि तत्रभेदान्॥ शुभेपिकालेऽक्षयुगंक्षिपेज्ज्ञः स्मृत्वेष्टरम्लज्ञपदारविन्दे॥४॥ प्रस्तारं पूर्ववत्कृत्वा सर्वं ज्ञात्वाबलाबलम्॥मरातिवादिकमपि ज्ञात्वा प्रश्नान् विचारयेत् ॥ ५ ॥ प्रश्नोत्थश्चेत्किलायोत्थोद्विधा प्रश्नविधिःस्मृतः ॥ तत्रादौपाशकप्रश्नात्प्रश्नसिद्धिरिहोच्यते ॥६॥ प्रश्नालयंतुमुख्यंस्यान्मुकुरंचचतुर्दशम्॥प्राङ्विवाकंपञ्चदशंसर्वत्रैतत्त्रिकंस्मरेत्॥७

टीका-जो शरीरमें तो मनुष्य है मुखमें हाथी है बालसूर्यके समान कांति और भालनेत्रमें अग्नि जिसके, ऐसा यह कौन है, श्रीपार्वतीजी अपने पुत्र गणेशजीको देखके मुसकाती हुई कहती भयी. वह गणेश वाणी देवे, यह ग्रंथकर्ताने भाव प्रश्नादिमें अपने इष्ट देवको प्रणाम रूप मंगलाचरण कहा ॥ १॥ जिसके गमनसे प्रश्न पकडा जाताहै उस प्रश्नको निर्गम और जिसके आगमसे शून्यकी उत्पत्ति होतीहै उस प्रश्नको दाखिल कहते हैं ॥ २ ॥ जो एकही तत्त्वसे शुभ हो जाता है उसको स्थिर संज्ञक कहते हैं, खारिज, निर्गम, दाखिल, आगमन, सावित स्थिर. ये प्रश्नमें मुख्य भेदहैं इनके खुलासे पूर्वलिखित चक्रोंमें हैं॥ ३॥पूर्वोक्त प्रकारसे प्रश्नालय और उनके निर्गम आदि भेदोंको समझके पंडितने अच्छे सम-

यमें अपने इष्ट तथा रमलज्ञ गुरुके चरणोंका स्मरण करके पाशोंकी जोडी फेंकनी ॥ ४ ॥ उससे पूर्वोक्त विधिसे प्रस्तार बनायके संपूर्ण बलाबल जानके मरातिब आदि भेदोंकोभी जानके प्रश्न विचारने ॥ ५ ॥ एक प्रश्नसे दूसरा इन्किलाबसे प्रश्नविधि है इसमें प्रथमपाशक प्रस्तारसे प्रश्नविधि कही जाती है ॥ ६ ॥ मुख्य प्रश्नालय पहिला है तब १४ वां मुकुर और १५ वां मंत्री है सर्वत्र इन तीनोंका मुख्य स्मरण रखना ॥ ७ ॥

अथ निर्गमागमप्रश्नसिद्धिमाह ॥

प्रश्नो यदि स्यादिह निर्गमाख्यस्त्रिष्वेषु गेहेषु च खारिजाद्यैः ॥ स्यात्कार्यसिद्धिश्च शुभैश्च स म्यकू श्रमेण पापैश्च मरातिवाद्यैः ॥ ८ ॥ दाखिलैस्तेष्वसिद्धिः स्यान्नाश्रमोऽपि शुभैश्चतैः ॥ स्याददभ्रश्रमाद्वापि कार्यसिद्धिर्नचाशुभैः ॥ ९ ॥ सावितैः कार्यसिद्ध्याशाकार्य्यं न स्यात्कदापि च ॥ मुन्कलीबैश्चिरात्सिद्धिः शुभैः पापैस्तनीयसी॥ १०॥ इत्थं वदेन्निर्गमभेदपृच्छां विज्ञाय संभाव्यबलं विपश्चित् ॥ स्यादागमप्रश्नइहात्रकंचेत्सद्वाखिलं सिद्धिकृदश्रमेण ॥ ११ ॥ चिराददभ्रश्रमतोऽशुभं स्यान्न खारिजे सिद्धिरथाश्रमोऽपि॥शुभे च पापे श्रमतोप्यसिद्धिः सत्सावितं सिद्धिकरंविलंबात् ॥ १२॥ पापेन सिद्धिः किलसावितेस्यान्मध्ये च मध्यागदितापुराणैः ॥ सन्मुन्कलीवेपि न सिद्धिरुक्ताशुभंतुपापे श्रमतोऽथ सिद्धिः ॥ १३ ॥

टीका—अब निर्गमागम प्रश्न सिद्धि कहते हैं कि, यदि निर्गम प्रश्न हो तो जो तीनों स्थानोंमें खारिजखंड हो तथा शुभशकल हो तौभी कार्यसिद्धि अच्छी होगी और मरातिब आदि शकल हों अथवा पाप शकल हों तो बडे श्रमसे कार्यसिद्धि होगी॥८॥उन तीनों स्थानोंमें दाखिल शकल हों तो कार्यसिद्धि न होगी यदि वे दाखिल शकल शुभभी हों तो बहुतश्रम करनेसे विकलपसे कार्यसिद्धि होगी कहना और वे शकल अशुभहों तो बडे श्रमसेभी कार्यसिद्धि न होगी ॥ ९ ॥ जो वे शकल साबित हों तो कार्यसिद्धिकी आशा मात्र होगी पूर्ण सिद्धि कदापि न होगी, यदि मुन्कलीव होंतो बहुत दिनोंमें और कोई शुभ कोई पाप होंतो थोडीसी कार्य सिद्धिहोगी ॥ १० ॥ इस प्रकार उन तीनों शकलोंको निर्गमादि जानके उनका बल विचारके विद्वानने प्रश्न कहना जो आगम प्रश्न ऐसे तीनों स्थानोंमें शुभदाखिल होतो बिनाही श्रमसे कार्य सिद्धि करताहै॥ ११ ॥ अशुभ खण्ड इनमें होनेसे बडे श्रमसे तथा बहुत विलंबसे कार्यसिद्धि होती है. खारिजसे श्रम करनेपरभी कार्यसिद्धि नहीं होती. शुभपाप मिश्रित होंतो श्रम करकेभी असिद्धि होती है जो वे साबित होंतो विलंबसे सिद्धि होती है ॥ १२ ॥ जो साबित शकल हों तो पाप खण्ड होनेमें भी सिद्धि होतीहै और मध्यममें मध्यम फल प्राचीन रमलाचार्योंने कहा है यदि वे मुन्कलीव होंतो कार्यसिद्धि नहीं कहीहै शुभ हुएमें पाप (निर्बल) होतो सिद्धि होतीहै यह मतान्तर कहाहै बुद्धिमानने (शुभपाप) बलाबलके तारतम्य देखके युक्तिसे फल कहना शुभपापता बलाबल विचार मुख्यहै जिधर बलअधिक देखे उधरका फल मुख्य कहै इसमें इतना स्मरण रखना कि,खारिज शकलनिर्गमदाखिलआगमऔरसाबितास्थिररूपहै॥ १३

अथ स्थिरप्रश्नः ।

स्थिरप्रश्ने यदास्यातांशुभौ साबितदाखिलौ ॥ तदा कार्यंस्थिरंसौख्यात्सिद्ध्येदानेष्टयोः श्रमात् ॥ १४॥ खारिजंमुन्कलीवंचास्थिरकार्यस्य नाशकृत् ॥ एवं प्रश्नचयंसर्वं निगदेद्रम्लवित्तमः ॥ १५ ॥

टीका-अब स्थिरप्रश्न कहतेहैं कि स्थिरप्रश्नमें यदि शुभशकल साबित दाखिल हों तो स्थिरकार्य सिद्धिहोगा यदि वही साबित दाखिल अशुभ होतो कष्टसे कार्यसिद्धि होगी ॥ १४ ॥ खारिज तथा मुन्कलीव स्थिर कार्यके नाशकहैं इस प्रकार रमल जानने-वालोंमें श्रेष्ठ रम्माळने प्रश्नसमूह कहना ॥ १५ ॥

अथ संशयेनियामकम् ।

द्वयोस्त्रयाणां चविरोधसंभवे फलावरोधिन्यपि कार्यं खण्डके ॥ प्रश्नार्धनिघ्नेन्द्रतदुत्थिते च घाताद्भवाद त्रवदेत्पुरावत् ॥ १६॥ प्रश्नेऽपितच्चेदिहतद्बलेन स्था नस्वभावादपिखारिजादेः ॥ प्रष्टुर्वदेन्निर्गमनादिभेदा च्छुभाशुभः सौख्यपरिश्रमाभ्याम् ॥ १७ ॥ इत्थंवदे न्निर्गमनादिसर्वं प्रश्नान्पुरःप्रष्टुरसंदिहानः ॥ विश्व स्तचेतारमलेगुरौस्वचेतोविशुद्धिर्यदितत्रसिद्धिः ॥ १८॥

टीका-प्रश्न जाननेमें तथा फलमें यदि दो प्रकारके शकल हों जिनमें आपका विरोधहो अर्थात् एकसे स्थिर दूसरेसे चर यद्वा एकसे खारिज दूसरेसे खारिज तथा एक शुभ दूसरा अशुभकार्य शकलहोतो प्रश्नखंडसे चौदहवां खंड गुणके जो खंड उत्पन्नहो उससे पूर्वोक्त प्रकार करके प्रश्न कहना ॥ १६ ॥ प्रश्नमेंभी यह देखलेना कि जो शकल उत्पन्न हुईहै उसका बल कैसाहै स्थानस्वभाव और

खारिज आदि कैसाहै इतना निश्चय करके पूछनेवालेके निर्गमादि भेद इसका शुभाशुभ परिणाम सुखसे वा परिश्रमसे कहना ॥ १७॥ इस प्रकार निर्गमनादि सब प्रश्न विचारके पूछनेवालेके आगे कहै इसमें रम्मालकी चित्तवृत्ति स्थिर रमलशास्त्र एवं गुरुमें विश्वास और चित्तकी शुद्धिहो तब प्रश्नसिद्धि होतीहै ॥ १८ ॥

इति निर्गमादिप्रकारः ॥

अथेन्किलावप्रयोजनम् ।

इदानीमिन्किलावोत्थातप्रश्नाच्चापि फलं ब्रुवे ॥
तिथौतत्रजमातंस्यात्तन्मूलाभ्यांफलंवदेत् ॥ १९॥
खारिजेविश्वशक्राख्येशुभेनिगर्मसिद्धिदे ॥ दा-
खिलेत्वागमस्यैवशुभेस्यातांतुसिद्धिदे ॥ २० ॥
सावितेचशुभेतद्वत्स्थिरकार्यस्यसिद्धिदे ॥ मध्य-
मेसबलेसिद्धिरल्पासिद्धिश्चनिर्बले ॥२१॥ विपर्य
यनसिद्धिःस्याच्छुभाद्यत्रापि पूर्ववत् ॥ संविचा
र्यवदेत्सर्वंप्रश्नखण्डोपिपूर्ववत् ॥ २२ ॥ मुष्टि
मूकशरत्पत्राऽवधिप्रश्नहराभिधाः ॥ इन्किलावं
विनासिद्धास्तस्मादेषु न तद्भवेत् ॥ २३ ॥ एवं
सामान्यतः प्रोक्तः सर्वगेहेषुनिर्णयः॥यद्यद्गेहेवि
शेषं च तत्तद्गेहेऽधुनाब्रुवे ॥ २४ ॥

टीका-अब इन्किलावका प्रयोजन कहतेहैं कि इस समय इन्किलावसे उत्पन्न प्रश्नसे कहनेमें यदि १५ वें घरमें जमात होतो उसके मूल १३। १४ से फल कहना ॥ १९ ॥ सो ऐसाहै कि १३ । १४ से शकल खारिज और शुभ होंतो निर्गम प्रश्नकी सिद्धि देते हैं यदि वेदाखिल और शुभ होंतो आगम प्रश्नकी सिद्धि

होतीहै ॥ २० ॥ यदि साबित और शुभ हों तो स्थिरकार्यकी सिद्धि देताहै बलवान् और मध्यममें कार्यकी सिद्धि निर्बलमें कार्यकी असिद्धि होतीहै ॥ २१ ॥ उलटे होनेमें कार्य सिद्धि नहीं होती जो शुभहो तोभी ऐसे प्रश्नखण्ड पूर्वोक्त विधिसे विचारके फल कहना ॥ २२ ॥ मुष्टिप्रश्न मूकप्रश्न वर्षपत्री बनानेका प्रश्न कार्यकी अवधिका प्रश्न और चोरके नाम बतलानेका प्रश्न ये पांच प्रश्न बिनाही इन्किलाव किये साधारण प्रथम जो यत्नसे हो जाते हैं इनमें इन्किलाव नहीं होता ॥२३ ॥ सर्व प्रकार सभी घरोंमें निर्णय कहाहै अब जिन २ घरोंमें विशेषता विचार की है उनको कहताहूं ॥ २४ ॥

अथाद्यगेहे विशेषमाह ।

आद्यगेहे विशेषंयत्तत्फलप्रश्नगंब्रुवे॥ शिष्टमायुः कियन्मेस्यादितिप्रश्नेकृतेसति ॥ २५ ॥ प्रस्तारेप्रथमंखण्डंतेनहन्याच्चतुर्थकम् ॥ तदुत्थखण्डतोवाच्यंफलंचायुष्यकंबुधैः ॥ २६ ॥ तद्दाखिलं सावितंचमुन्कलीवंचखारिजम् ॥ पूर्णार्द्धपादस्वल्पायुःशेषंसौम्येशुभार्द्धियुक् ॥ २७ ॥ तस्मिन् पापेविपर्यस्तंतत्संख्यापिनिगद्यते॥ अवश्यङ्कश्च सर्वेषु प्रश्नेष्वेवप्रकीर्तितः ॥ २८ ॥

टीका–प्रथम घरमें विशेष विचार जो है उसका फल कहताहूं कि जो कोई पूछे कि मेरी आयु अब कितनी बाकी है ॥ २५ ॥ तो प्रस्तारके प्रथम शकलसे चौथा खण्ड गुनना जो खंड उत्पन्न हो उससे पंडितोंने आयुका फल कहना ॥ २६ ॥ सो ऐसेहै कि जो वह शकल दाखिल होतो पूर्ण आयु साबित होतो आधा मुन्क-

क्षीण हो तो चौथाई.खारिज हो तो और भी थोडा आयु शेष कहना। इसमें भी यह विचार है कि वह खण्ड सौम्य हो तो शेष आयु शुभ और समृद्धि युक्त होकर जायगा ॥ २७ ॥ वह खण्ड पाप हो तो दुःख दारिद्रतासे आयुके शेष दिन कटेंगे अब उसकी संख्या जानने के लिये अवधिके अंक चक्राकार कहे जाते हैं जो सभी प्रकारके प्रश्नोंमें काम आनेवाले हैं ॥ २८ ॥

अथ तदर्थं चक्रोद्धारः ।

अथोर्ध्वतिर्यग्धृतिरेखिकंस्याच्चक्रंतवाह्याक्षिगृहंतदूर्ध्वम् ॥ तिर्यग्लिखेद्विजदहपंक्तिमेकादारभ्य दक्ष्यंतमिताद्द्वयोश्च ॥ २९ ॥ सद्मांकसद्मस्थयुतिंत्वधस्तादेवंहिसर्वेषुगृहेषुकार्य्या ॥ प्रस्तारगादद्योक्तदलाससंख्यंकोष्ठांकतुल्यायुरिहप्रदिष्टम् ॥ ३० ॥ तत्संख्यदाखिलेवर्षमासास्तेसावितेतथा ॥ मुन्कलीवेद्दिघस्रास्तेखारिजेतदहर्गणः ॥ ३१ ॥ उत्पन्नार्धनप्रस्तारेयदातद्विज्दहाल यात् ॥ तिर्यगूर्ध्वगतात्कोष्ठज्ञेयमंकंसदाबुधैः ॥ ३२ ॥

इतिप्रथमेविशेषः ।

टीका--समयके अवधि जाननेका चक्र है कि ऊपर और सीधे १६ । १६ । रेखाका चक्र लिखके ऊपरके घरमें सीधे बिजदह पंक्तिके खण्ड एकसे सोलहतक लिखे दूसरे किनारे १ से १६ तक अंकलिखे दूसरे आदि कोष्ठमें १ । २ । ३ । आदिक्रम वृद्धिसे लिखे ॥ २९ ॥ घरकी संख्याका अंक और घरमें स्थित अंकको जोडके उसके नीचे देखना जैसे प्रस्तारमें १ । ४ घरको जरब देके लह्यान शकल हुई यह शकल प्रस्तारमें छठा घर है तो अंक चक्रमें

लह्यानके नीचे ६ के सामनेका १७ अंक पाया ऐसीही विधि सभी घरोंमें करनी प्रस्तारमें पूर्वोक्त खण्डसे पाई गई संख्याके कोष्ठके अंक तुल्य आयु यहाँ कही है ॥ ३० ॥ वह शकलदाखिल होतो उतने वर्ष साबित होतो महीने मुन्कलीब होतो सप्ताह (हफ्ता) और खारिज होतो दिन जानने ॥ ३१ ॥ यदि १ । ४ । घरके मेलसे उत्पन्न शकल प्रस्तारमें न होतो बिजदह क्रमसे ऊपर तथा सीधेकोष्ठसे पंडितोंने अंकलेना यहाँ भाषाकारकी युक्ति है कि जब वह शकल प्रस्तार नहीं है तो उसका स्वामी कौनग्रह है उसकी दूसरी शकल कौन है उससे कामलेना जैसे यहाँ लह्यानका स्वामी बृहस्पति है और नुस्रतदाखिलका भी बृहस्पति है तो इसी नु० दा० से कामलेना इसमें औरभी युक्ति है ॥ ३२ ॥

बिजदहांक चक्रम् ।

क्र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
२	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
४	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
५	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
६	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
७	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
९	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२
१०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१
११	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
१२	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२
१३	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४
१४	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७
१५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	१३३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०	१२१
१६	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६

अथ द्वितीये विशेषमाह।

द्वयोः पुरुषयोर्मध्येकोभवेद्बहुवित्तवान् ॥ एवं प्रश्नेपुरोद्देशोमुख्यः सम्बन्धतोपरः॥३३॥मुख्य स्यप्रथमंगेहंतसीरादितरस्यच॥ तद्द्वितीये धने स्यातामुभयोर्दाखिलं शुभम् ॥ ३४ ॥ साबितं वाधनंतस्यबहुस्यात्तद्द्वयेसमम् ॥ शुभेचखारि जेकिंचिदशुभेखारिजेनहि॥३५॥ शुभाशुभेमुन्क लीवे त्वल्पं नास्तीति च क्रमात् ॥ संख्या प्रश्ने बिज्दहस्य स्वगृहार्धस्य पूर्ववत्॥३६॥कर्णमार्गे णाङ्कसंघंज्ञात्वा संख्यां वदेद्बुधः ॥ वराटकात्स्वर्ण मुद्रापर्यंतंस्वमनीषया ॥ ३७ ॥ एकादिकोटि पर्यंतां संख्यां पात्रानुसारतः ॥ द्विग्याद्येपि च तद्योगात्संख्याभावेन तद्भवेत् ॥ ३८ ॥

टीका—अब दूसरे घरमें विशेष कहतेहैं कि दो पुरषोंमेंसे कौनसा अधिक धनवान् है ऐसा प्रश्न होनेमें एकमुख्य उद्देश्य दूसरा उसके संबंधसे नियत करलेना ॥३३॥ तब प्रस्तारमें देखना कि मुख्य उद्दे शका प्रथम घर दूसरे संबंधीका दूसरा घर जानना उन घरोंके दूसरे घर उनके क्रमशः धनस्थान जानना दोनोंके धनभाव दाखिल तथा शुभहों ॥ ३४ ॥ अथवा साबित हों तो दोनोंको धन बहुतहै तथा समान है शुभ और खारिज हों तो थोडा धन है और अशुभ तथा खारिज हों तो धन नहीं है ॥ ३५ ॥ शुभमें बहुत अशुभमें अल्प धन मुन्कलीवमें धन नहीं है ऐसा क्रमसे जानना। जिसकी धन शकल जैसी हो उसके पास वैसा धन बतलाना और संख्या पूँछी जावे

तो विजदह क्रमके स्वगृही खंडसे पूर्ववत् अंकलेना ॥ ३६ ॥ जैसे वह धनवाली शकल विजदह क्रममें जिस घरकी हैं प्रस्तारमेंभी उतनेही संख्याके घरमें हो तो अंक चक्रमें कर्णमार्गसे अंक जानना। तब संख्या कहनी इसमें पंडितने कौडीसे लेकर मोहरतक अपनी बुधिके बलसे कहना ॥ ३७ ॥ एकसे लेकर करोडपर्यंत संख्या

[illegible]															
१	[illegible]	३	४	[illegible]	६	७	८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१३	१४	१५	१६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१	३	[illegible]	१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१३६

जैसा वह मनुष्य पात्रहै वैसा स्वबुद्धिसे कहना जो दो तीन संख्या मिल जावैं तो उनको जोडके कहना संख्याका अभाव होतो धन नहीं है कहना ॥ ३८ ॥

अथ तृतीये विशेषमाह ।

तार्तीयके स्वप्नजातं फलं वक्ष्ये विशेषतः॥शाकुन प्राश्निकेऽप्यर्द्धंमिथोनिघ्नेतदुद्भवे ॥ ३९ ॥ शुभे शुभमथापापेत्वशुभंचशुभेसमम् ॥ फलंतत्खंड वशतोभेदंस्वप्नेवदेद्बुधः ॥ ४० ॥

टीका--अत्र तृतीय भावमें विशेषहै कि इसमें विशेष करके स्वप्न जात फल कहते हैं शकुन क्रममें तथा प्रस्तारमें तीसरे घरोंके शकलोंको मिलायके ॥ ३९ ॥ जो शकल हो वह शुभ है स्वप्न-का शुभ पाप है तो अशुभ और अशुभशुभ होतो समफल उस खण्डके वशसे पंडित स्वप्नका कहै विशेष विचार उस खण्डके तत्त्वादिकोंके अनुसार विचारके कहै ॥ ४० ॥

अथ चतुर्थेविशेषमाह ।

काचित्समागत्य ब्रवीतिनारीशं मेघवादद्यचैवाद्वितीयात् ॥ पृच्छत्सुमुख्यास्तनुसद्मचाद्य भर्तुः सुखंखाद्वितयस्य चिंत्यम् ॥ ४१ ॥ तनोस्तुरीयात्प्रथमेनसौम्ये तनोर्दशाख्याद्वितयेनचार्द्धम् ॥ वाच्यंशुभंचेदुभयत्रसौम्यंबलाच्चपुंसस्तुखतुर्ययोर्वदेत्॥ ४२ ॥

टीका--चतुर्थ भावमें विशेष कहते हैं कि कोई स्त्री आयके पूछे मेरी भलाई पहिले पतिसे होगी अथवा दूसरे भर्त्ता करनेसे तो पूछनेवालीका घर प्रस्तारमें पहिला जानना, पहिले भर्त्ताका चतुर्थ और दूसरे भर्त्ताका दशम भाव जानना ॥४१॥ तब पहिले घरमें चतुर्थ जोडना जो शकलहो उसके शुभाशुभ बलाबलके अनुसार पहिले भर्तासे शुभाशुभ कहना और दशमसे प्रथम घरका मेल करके जो शकल बने उसके शुभाशुभके तुल्य दूसरे भर्त्तासे शुभाशुभ और दोनहुमें तुल्यता होतो दोनहूं भर्त्ताओंसे तुल्यही सुखासुख कहना ॥ ४२ ॥

अथान्यदपितुर्येचप्रश्नंवक्ष्येविशेषतः ॥ अस्मिन्भूमितले द्रव्यमस्तिनास्तीतिचिंतयेत् ॥४३ ॥
तुरीयरिपुखण्डाभ्यां जातंचेदुकला भवेत् ॥
दाखिलं वातदा द्रव्यमुन्कली वोस्तिचाल्पकम् ॥
॥४४॥ अन्यथाद्रविणाभावइतिपूर्वसमादिशेत्॥
ततः संभावितेस्थानेचतुरस्त्रेद्विरेखिते ॥ ४५ ॥
याम्यपश्चिमयोर्मध्यात्साध्येपूर्वोत्तरांतिके ॥
चतुर्भागान्प्रकल्प्यैवंपूर्वास्येसयुगांतदिक्॥४६॥

वामेचैन्द्रीतथाधस्तात्तयोः पश्चिमकोत्तरे ॥ तत्र
क्षिप्त्वाक्षियुग्मंचप्रस्तारंतनुयात्सुधीः ॥ ४७ ॥

टीका—अब और चौथे घरमें विशेष प्रश्न कहताहूं कि, इसभूमिके नीचे धनहै वा नहीं ऐसा विचार करता हुआ ॥४३॥ पाशा डालके प्रस्तार बनावै तब चौथे और छठे खण्डसे एक शकल पैदा करै जो वह उकला शकल अथवा दाखिल शकल होतो उस जगे धन है जो मुन्कलीब शकल हो तो थोडा धन है ॥ ४४ ॥ यदि इनमेंसे कोई भी न होतो तहाँ धन नहीं है ऐसा पहिले समझ लेना तब संभावित स्थानमें चतुरस्र दो रेखासे □ ऐसा करना ॥ ४५॥ इसकेभी बीचसे दक्षिण पश्चिम और पूर्वोत्तर ४ भाग ⊟ ऐसे करने यहा पूर्वके सन्मुख वाम भागमें पूर्व दिशा और दाहिने ओर दक्षिणदिशा जाननी पूर्वके नीचे उत्तर दक्षिणके नीचे पश्चिम जाननी अब फिर पाशा डालके प्रस्तार बुद्धिमान्‌न करना ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

तुरीयालयखण्डस्यदिशायांद्रविणस्थितिः ॥ एवं
पुनः पुनः कुर्याद्यावद्धस्तोन्मितं स्थलम् ॥ ४८॥
ततोब्दहस्थितानङ्कान् रेखाद्विगुणसंयुतान् ॥
तुरीयार्धस्यसंयोज्य तत्रागाधंविचिंतयेत्॥४९॥
अङ्गुल्याः करपर्यंतकल्पनांस्वमनीषया ॥ एवं
भूक्षिप्तवित्तार्थप्रकारः कथितो मया ॥ ५० ॥

टीका—उस प्रस्तारमें चौथे घरके शकलकी जो दिशा है उस दिशामें उक्त चतुरस्रके भूमिगतद्रव्यकी स्थिति जाननी ऐसे ही वारंवार पाशा डालके प्रस्तार बनावे और चौथे घरमें जो शकल हो उसकी दिशा जानता जाय अर्थात् एक चतुरस्र जो प्रथम प्रस्तारसे

होतो १ बृहस्पतिकी होतो ३ मंगलकी होतो ४ और राहु केतुकी होतो गर्भहानि होगी ऐसा बुद्धिमानने विचारके सन्तानोंकी संख्या कहनी ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

अथ गर्भसंभवेकिंभविष्यतीतिप्रश्ने ।

संभवेगर्भसन्तत्योःसप्तमाद्यभवंदलम् ॥ पञ्चम
स्थेनसंगुण्यतत्रोत्पन्नेक्रमाद्वदेत् ॥६०॥ पुंखण्डे
पुत्रजननं स्त्रीखण्डे कन्यकाजनिः ॥ क्लीबेऽपि
कन्यकाजन्मक्लीबजन्मोच्यतेधुना ॥६१॥ सशरे
पूर्वंजेखण्डेक्लीबेक्लीबजनिप्रदे ॥ पार्थिवेपुनरुक्ते
च तदा जातो नपुंसकः ॥ ६२ ॥

टीका–गर्भमें कन्या पुत्र क्या होगा ऐसे प्रश्नमें जब पूर्वोक्त प्रकारसे गर्भसंतति निश्चय होजाय तब १।७ से उत्पन्न शकलको पंचमस्थ शकलसे गुणके जो शकल उत्पन्न हो उस करिके क्रमसे कहना ॥ ६० ॥ कि वह खण्ड पुरुष है तो पुत्र जन्म स्त्रीसंज्ञक है तो स्त्रीजन्म कहना नपुंसक हो तौभी कन्या जन्म कहना और नपुंसक जन्मभी कहाजाता है कि ॥ ६१॥ पूर्वोक्त १।७ से तथा १।६ से उत्पन्न खण्ड और पंचम घरकी शकल तीनों नपुंसक हों और पृथ्वी तत्वके घरमें पुनरुक्त हो तो अवश्य नपुंसक उत्पन्न होगा 'पुनरुक्त' जो खण्ड कार्यकारी प्रस्तारमें है वही किसी दूसरे घरमें भी हो उसे कहते हैं ॥ ६२ ॥

अथान्यत्कारणंवक्ष्येसंख्यायांयवनादितम् ॥
पंचमस्थस्यखडयस्ययत्संख्यापुनरागतिः ।६३
ततसंख्यासंततिस्तत्रवह्निवाय्वोः सुतोद्भवः ॥

आप्ये कन्यागर्भपातः पार्थिवे चेद्बलान्वितम् ॥६४॥शुभंयोषिज्जनिंभूमावेवंज्ञात्वावदेद्बुधः ॥ प्रकारांतरम्–नचेत्तत्पुनरुक्तंस्यात्तदातस्याऽद्दहालयात् ॥ ६५ ॥ यावत्संख्याशरांतास्यात् सन्ततिस्तावती भवेत् ॥ पुंस्त्रीभेदः पुरोक्तः स्यादितिरम्लज्ञभाषितम्॥ ६६॥

टीका–अब संख्या बतानेमें यवनोक्त और कारण कहताहूं कि पंचम गृहस्थित खण्डकी जितने स्थानमें पुनरुक्तिहो अर्थात् जितने घरमें प्रस्तारमें वही शकल आवै उतनी संख्या संतान कहनी जैसे १ में होतो १ संतान १० वेंमें होतो १० संतान. इसमें यह विशेष है कि वह खण्ड अग्नि वायुतत्वकी होतो पुत्रहोगा, जलतत्वकी होतो कन्या, पृथ्वी तत्वकी होतो गर्भपात और पृथ्वीतत्व बलवान् शुभ होतो कन्या होगी, ऐसे पृथ्वीतत्वको विचारके पंडितने कहना इसमें प्रकारांतरभी है कि यदि वह बालक प्रस्तारमें पुनरुक्त न होतो वह अद्दहालयमें जिस घरमें हो वह अद्दहके प्रस्तारकी पांचवीं शकलसे जितनी संख्यापर हो उसके उतनीहीं संतान होंगी. पुरुष और स्त्रीका भेद पहिलेकाही कहा जानना यह रमलज्ञोंका कहा है ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

तत्रैव कालमाह ।

ध्रुवीर्येदिवसेनक्तंबलेरात्रौचसंध्ययोः ॥ सबले पंचमेखण्डेतज्जानिंनिश्चितंवदेत् ॥६७॥ तत्रापिनवमार्द्धस्यतत्त्रिकोणस्यवातनौ ॥ आयुर्ज्ञानेतु–स्वल्पदीर्घायुषोःप्रश्नेसंतानस्यास्तपंचमौ॥६८॥

गुण्यौतज्जानितेसौम्येपुनरुक्तेशुभे गृहे॥दीर्घजीवी तथामध्येमध्यायुरशुभेऽल्पकम् ॥ ६९ ॥

टीका—वह शकल दिवाबली होतो दिनमें रात्रिबली होतो रात्रि में और संध्याबली होतो संध्यामें जन्म पंचम खण्डसे निश्चय करना ऐसेही शकल बलसे सभी प्रश्नोंमें दिनरात्री कहनी ॥६७॥ इसमें और भी विचार है कि प्रस्तारमें नवम खण्डकी जो राशिहै वह राशि जन्मलग्न होगा। अब संतानका आयुर्ज्ञान कहतेहैं कि संतानके अल्पायु दीर्घायु प्रश्नमें सातवीं पांचवीं शकल गुणके जो शकल हो वह शुभ हो तथा उस प्रस्तारमें पुनरुक्तभी होतो दीर्घायु होगा वह शकल मध्यबली होतो मध्यमायु और हीनबली अशुभ होतो अल्पायु होगा ॥ ६८ ॥ ६९ ॥

अथ धनाढ्यानिर्द्धनाइतिप्रश्ने ।

किंवादारिद्रात्वथवाधनाढ्यामेसंततिः स्यादिति पृच्छतेतु ॥ पंचाष्टयोगोस्यशरेन्दुयुक्त्याजाते शुभेभूरिधनांवदेत्ताम् ॥ ७० ॥ तस्मिन्समेमध्य धनाऽशुभेस्यादत्यल्पवित्ता पुनरुक्तियोगात् ॥ सुखेन सौम्ये ह्यशुभे च कष्टात्तज्जीवनं पूर्व मुनीश्वरोक्तम् ॥ ७१ ॥

टीका—वह संतति दरिद्री वा धनाढ्य कैसी होगी ? ऐसे प्रश्नमें पंचमाष्टम खण्डोंको गुणके जो शकल हो उससे १५ वीं शकलको गुणके एक खण्ड उत्पन्न करना वह शुभ हो संतान बहुत धनवान् होगी ॥ ७० ॥ सम हो तो मध्यम धन और अशुभ हो तो थोडा वित्तवाली होगी इसमेंभी वह शकलप्रस्तारमें पुनरुक्त हो तो

धन सुखसे आवेगा सौम्य होनेमेंभी सुखसे और अशुभ हो तो कष्टसे जीवन होगा यह पूर्व मुनीश्वरोंने कहा है ॥ ७१ ॥

स्याद्रोगिणोगेहमथाद्यमुक्तं षष्ठंरुजस्तुर्यमथौषधस्य ॥ वैद्यस्यचाकाशमरोगितायाश्चारौद्रंतथा दीर्घरुजस्त्विनाख्यम् ॥७२॥ द्वितीयमासामित मौषधस्यकुत्रापितन्वादिगृहेषुसौम्ये॥ तत्तच्छुभं वाच्यमतोन्यथात्वेस्यादन्यथावीर्ययुतेविशेषात् ७३

टीका–अब छठे भावमें विशेष विचार कहते हैं कि, प्रस्तारमें प्रथम घर रोगीका कहाहै ऐसेंही छठा रोगका चौथा औषधीका दशम वैद्यका आराम होनेका एकादशवाँ और दीर्घ रोगका बारहवाँ घर कहा है ॥ ७२ ॥ किसीके मतसे दूसरा एवं दशम औषधिके कहेहैं इन लग्न आदि घरोंमें शुभ शकल हों तो उन उन स्थान-सम्बंधि कार्य शुभ होंगे इसके विपरीत हों तो फलभी विपरीत कहना इसमेंभी बलाबल विचारसे विशेषता है ॥ ७३ ॥

सामान्यमेवंप्रविचार्यवाच्यंभूयोविशेषंप्रवदामि तुर्ये॥सद्दाखिलंसाबितमत्रयोग्यंसमुन्कलीवंशु भखारिजच्च॥७४॥ षष्ठेद्रुतंरोगहरंसुखेनपापेचत त्क्लेशविलंबिताभ्याम् ॥ स्याद्दाखिलंरोगविवृद्धि हेतुस्तत्तुल्यमत्रास्तिचसाबितार्द्धम् ॥७५॥ आ ग्नेयादिषुखण्डेषुषष्ठस्थेषुक्रमाद्रुजः ॥पित्तवातक फोद्भूतास्तथाजीर्णोद्भवागदाः॥७६॥रुधिरास्थ्नो र्विकारेणत्वगस्थ्यन्तर्गतंक्षतम् ॥ पार्थिवेपिच विज्ञेयं रिपौ वह्न्यादिखे तथा ॥ ७७ ॥

टीका-यह विचार सामान्यतासे कहाहै अपनी बुद्धिसे विचार के कहना, अब विशेष कहते हैं कि, चौथे घरमें दाखिल और खारिज शकल शुभ होती हैं और छठेमें शुभ मुन्कलीव अथवा शुभ खारिज ॥ ७४ ॥ होतो सुखपूर्वक शीघ्रही रोग हटजायगा यदि पाप शकल वे मुन्कलीव वा खारज होंतो कष्टपूर्वक विलंबसे आराम होगा जो दाखिल शकल होंतो रोग बढनेका हेतु होताहै ऐसेही यहाँ साबित शकलभी रोग बढानेवाली जाननी ॥ ७५ ॥ छटे स्थानमें अग्नितत्व आदि जैसे खंडहों वैसे क्रमसे पित्त वात कफ और अजीर्णरोगोत्पत्ति कहनी ॥७६॥ और पृथ्वीतत्वमें इतना विशेष है कि, रुधिरविकार, हड्डीका विकार, त्वचा और हड्डीपर चोटका विचार छठे भावसे जानना ऐसेही अग्नि आदि तत्वोंमें रोग विचार दशमस्थानसे भी करना यह मतांतरहै ॥ ७७ ॥

रोगिणोजीवनमरणज्ञाने ।

रोगिजीवितमृत्यर्थेप्रश्नेतनुरिपूद्भवम् ॥ सौरस्य चबुधस्यापिरोगिणोमृत्युकृद्भवेत् ॥७८॥ अन्य खण्डेनरुग्णस्यमृत्युर्वाच्योविचक्षणैः ॥ आद्यता र्तीययोर्जातेखण्डेप्येवंस्मृतंबुधैः ॥ ७९ ॥

टीका-अब रोगीके जीने मरनेके प्रश्नमें प्रथम और छठेके गुणके जो शकलहो वह शनिकी हो तो अवश्य रोगी मरजायगा ऐसेही बुधकी भी मृत्युकारक होतीहै॥७८॥ अन्य ग्रहोंकी शकल हो तो रोगी नहीं मरेगा ऐसा चतुर रम्मालने कहना ऐसेही पहिले और तृतीय शकलके योगसेभी फल विद्वानोंने कहाहै ॥ ७९ ॥

अथ सप्तमे विशेषतश्चौरप्रश्ननिरूपणम् ।

सप्तमेचगृहेचौरप्रश्नंवक्ष्येविशेषतः ॥ नकीहुस्रा तवेखारिज्कब्जुलखारिजकानचेत् ॥८०॥ प्रस्तारे

स्युर्नचौरेणहृतंस्याद्वस्तुतद्गृहे ॥ सत्येष्वेकतमे वापि वस्तु चौराहृतं वदेत् ॥ ८१ ॥

टीका–अब सप्तम घरमें विशेष चोरीके प्रश्नका विचार कहता हूँ कि, नकी ⁚ इज्ञा ⁚ अतवेखारिज ⁚ कब्जुलखारिज ⁚ शकल प्रस्तारम न हो तो ॥ ८० ॥ चोरी नहीं हुई गया द्रव्यघरहीमें है यदि इन चार शकलोंमें कोईभी प्रस्तारमें हो तो चोरने वस्तु हरण करी कहनी ॥ ८१ ॥

चौरः स्वकीयः परकीयो वेतिज्ञान ।

द्विघ्नरेखांकसंयुक्तंबिन्द्वैक्यवह्निभाजितम्॥ एकादिशेषतःस्वीयःपार्श्वस्थोदूरदेशजः ॥ ८२ ॥

अन्यच्च–तनुतुर्यौसप्तनृपौहत्वाद्वावेकमेतयोः ॥ कुर्य्यात्तत्साबितंचेद्वादाखिलंग्राममध्यगः॥८३॥ खारिजेचबहिर्जातोमुन्कीवेगमनोद्यतः ॥ ८४॥

टीका–चोर अपना है वा दीगर (पर) है ? ऐसे प्रश्नमें प्रस्तारमें संपूर्ण बिन्दुओंका जोड करना तथा जितनी समस्त रेखाहैं उनको दूना करके बिन्दुयोगमें जोड देना"दोबिन्दुसे एकरेखा उत्पन्न हुई है इस लिये यहाँ रेखाके दो अंक लिये जाते हैं"सबका योग(जोड़) जोहो उसको तीनसे शेष करना जो एक शेष रहेतो चोर अपना मनुष्यहै दो शेष रहें तो पडोसी(नजदीक) रहनेवाला व संबंधी है यदि तीन बचे तो परदेशी चोर जानना॥८२॥ अब और विचार चोरकी स्थितिमें है कि, पहिली चौथी और सप्तम सोलहवीं शकलोंको मिलायकै दो शकल बनावे तब उन दोकी भी एक बनावे वह शकल साबित अथवा दाखिल होतो चोर ग्रामहीमें है बाहर नहीं गया खारज होतो ग्रामसे बाहर चलागया है और

मुन्कलीव हो तो ग्रामसे बाहर नहीं गया किन्तु जानेको तय्यार है जानना ॥ ८३ ॥ ८४ ॥

चौरस्थित्यादिज्ञाने ।

चौरःस्यात्कनुतद्वासःकेषांचसान्निधौहरः ॥ इति प्रश्नेष्टमेद्वीन्दौशक्रेपंचेन्दुखण्डके ॥८५॥ पूर्वस्थबिन्दूरेखाभिःकुर्यादेकंततस्तनौ ॥ स्याच्चेत्स्वकीयः स्वगृहेतितीष्ठतितदावदेत् ॥ ८६ ॥ धनेसंबांधि पार्श्वस्थस्त्रयेबंधुस्तदालये ॥ सुहृद्भ्रातृभागिन्यश्च पिता च्यौवातदंतिके॥८७॥दूतवेश्यानर्तकेष्टकलागुणवतां सुते ॥ दासार्तवैरिणांषष्ठेदायादैणीदृशांतगे ॥८८ ॥ मार्गाद्यातिप्रेत्यभुजामिंद्रजालकृतांमृतौ ॥ तापसातिथिमार्गस्थास्तत्पार्श्वस्थोनवालये ॥ ८९ ॥ नृपाणांश्रेष्ठपुंसांवात्वधिकारवतांखभम् ॥ मित्राणांच तथाप्तानां भवेस्याद्द्वादशेपिच ॥ ९० ॥

टीका--चोर कौनहै कहां ठहराहै किसके समीप रहताहै ऐसेप्रश्न में ८ । १२ । १४ । १५ वीं शकलोंके ऊपर २ भागके बिन्दुरेखा यथाक्रम लेके एकशकल बनावै॥८५॥पूर्वस्थ बिन्दुरेखाओंसेबनी शकल प्रस्तारमें देखनी कहा ठहरीहै जो वह प्रथम घरमें होतो चोर अपना मनुष्यहै अपनेही घरमें ठहराहै ॥ ८६ ॥ दूसरे घरमें होतो अपना संबंधीवा पडोसी चोर वा उनके घरमें निवास चोरका है ऐसेही तीसरेसे भाई मित्र गोत्री या बहिन चौथे घरसे पिता वा उसके पास रहनेवाला वा चाचा ताउ दादा इत्यादि ॥८७॥ पंचमसे दूत (प्यादा) वेश्या नाचनेवाले खेलकूदके गुणी लोगोंमेंसे छठेसे दास दासी शत्रु सातवेंसे हिस्सेदार और स्त्रीजन ॥ ८८ ॥ अष्टमसे

मार्गमें लूटनेवाले डाकू इन्द्रजाली, बाजीगर आदि नवमसे मार्गमें स्थित तपस्वी अभ्यागत उनके समीप दशमसे राजा आदि श्रेष्ठ पुरुष वा अधिकारी मनुष्य ग्यारहवेंसे मित्र पंडित मंत्री आदिके घरमें चोर है ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥

बंधस्थनीचवृत्तीनां जनवैनिद्रयकारिणाम् ॥ गृहे चौरस्थितिर्वाच्या बुद्ध्याचालोच्यसर्वदा॥९१॥ विश्वादिगेतिदूरस्थोदेशांतरगतो भवेत् ॥ प्रश्ने चतद्दलाभावेवदेद्वाशकुनालयात् ॥ ९२ ॥ गृह धृत्तिकृतोवापिगृहोक्तप्राणिनस्तथा ॥ विज्ञेयास्त स्कारनूनंतदंतिकजनास्तथा ॥ ९३ ॥ दूरांतिक गतिस्तस्य धर्मांग्रौखारिजाद्भवेत् ॥उभयत्रबला धिक्यात्स्वग्रामेचाभयानेचेत् ॥ ९४ ॥

टीका—बारहवें घरसे कैदी नीचवृत्ति और लोगोंकी निद्राभंग करानेवाले चौकीदार सिपाही आदियोंके घरमें चोरकी स्थिति कहनी विशेष अपनी बुद्धिसे विचारके सर्वदाही कहना ॥ ९१ ॥ तेरहवें आदि घरमें वह शकल पड़ी हो तो अति दूरस्थ चोरहै और दूसरे देशमें चलागया होवै यदि प्रस्तारमें वह खण्ड किसी घरमें भी न होतो शकुनालयकी संख्या गृहकी जानके उससे कहना॥९२॥ इस प्रकार जिस घरसंबंधी चोर जानागया वा ऐसा नहीं वही चोरहै उत उसके घरमें रहनेवाला अथवा उससे पालित वा उसका संबंधी वा उसका पडोसी तस्कर जानना ॥ ९३ ॥ चोर दूर चला गया वा समीपहै ऐसे विचारमें नवमस्थानमें खारिज शकल होतो दूर चलागयाहै और तीसरे घरमें खारिज शकल हो तो समीपके देशमें है यदि दोनहूं घरोंमें खारिज शक्ल हो तो जिसका बल

अधिक हो उसका फल कहना यदि ९।३ दोनोंहीमें खारिज शकल न हो तो अपनेही ग्राममें चोरह कहना ॥ ९४ ॥

चौरगतौदिग्ज्ञानं गृहद्वारं च ।

यद्दिश्यंदशमंखण्डंगतिश्चोरस्यतादिशि ॥ तस्क-
रस्य गृहद्वारं नवमाच्छकलाद्वदेत् ॥ ९५ ॥

टीका-चोरके गमनमें दिशा और चोरके घरका द्वार कहते हैं कि, प्रस्तारमें दशम खण्डकी जो दिशा है उस दिशामें चोर गया है और नवम खण्डकी जो दिशाहै उस दिशामें चोरके घरका दरवाजा है कहना ॥ ९५ ॥

अथ समीपस्थे स्वग्रामस्थे वा चौरे मार्गमानम् ।

कियद्दूरगतश्चौरः प्रश्नेत्वेवंविधेकृते ॥ विज्दहे
पूर्वखण्डांकतुल्यमध्वानमादिशेत् ॥ ९६॥ क्षेत्रा
दियोजनांतत्रकल्पनास्वमनीषया ॥ धनिचौरौ
यदेकत्रस्यातांचेत्तद्गृहांतरे ॥९७ ॥ कत्योकांसी
तिपृच्छायांपञ्चषट्सप्तनंदके ॥ द्विघ्नरेखाकाऽब्द
हांकसंख्यापंचार्द्धसंख्यया ॥९८॥ भाज्यः शेषां
कतुल्यानिगृहाणिधनचौरयोः ॥ गृहं ग्रामश्च दे
शाश्च सर्वमेवं विचारयेत् ॥ ९९ ॥

टीका-चोर समीपहो अपनेही ग्राममें होतो उसके रास्ताका माप कहते हैं चोर कितने दूरगया ऐसे प्रश्न हुयेमें विज़्दह क्रममें पूर्वोक्त नवमखण्ड देखना कि उस नवम खंडका और विज़्दह क्रमके घरके अंकका जितने घरोंका फैसला है उतनोंही मार्गका प्रमाण कहना ॥ ९६ ॥ खेतसे लेकर योजन पर्यंत न्यूनाधिक कल्पना अपनी बुद्धिसे करनी,धनी और चोर एक ग्राममें हैं तो उनके घरोंके

बीच कितने घर हैं और वे अन्य ग्रामोंमें हैं तो उनके बीच कितने ग्राम हैं ऐसे विचारमें ॥ ९७ ॥ प्रस्तारके ५।६।७।९ घरोंके शकलहों उनके शून्योंकी और रेखाओंकी संख्याको अब्दह पंक्तिके क्रमसे करके जोडै यहां रेखाओंकी शून्य दूनी लेनी अर्थात् रेखाके स्थानमें अब्दह क्रमके अंक मिले हों उनको दुगुनालेना फिर उन सबको इकट्ठाकरके प्रस्तारके पांचवीं शकलके (उसी प्रकारसे बनाये) अंकसे भागदेवै तब जितने अंक शेषरहैं उतनेही घर वा ग्राम धनी और चोरके घरोंके वा अन्तरमें जानने इसीप्रकार गृह ग्राम देश आदि विचारने ॥ ९८ ॥ ९९ ॥

अथ दूरगतेचौरेधनिचौरांतरालस्थग्रामादिमानमाह ।

यदादूरगतश्चौरस्तत्रयुक्तिंवदाम्यहम् ॥ चंद्रो १ वह्नी ३ रसाश्चाशातिथिःप्रकृतिरुत्कृतिः॥१००॥ षट्त्रिंशत्पंचवेदाश्चपंचेष्वर्तुरसास्तथा ॥ नागाब्धयःकुनन्दाश्चपंचशून्येंदवस्तथा॥१०१॥वियद्द्वीन्दुरसत्रीन्दुबिज्दहक्रमतोध्रुवाः॥प्रश्ने तु शैलनागाशाखण्डानामंकसंस्थितिः ॥ २ ॥ पंचाष्टांकाप्तावशेषैर्ग्रामाः स्युर्धनिचौरयोः ॥विशेषमत्र कथितं दूरगस्य हरस्य च ॥ ३ ॥

टीका–जब चोर दूर गया होतो धनी और चोरके बीच कितने ग्रामहैं इसमें कहतेहैं बिज्दह क्रममें १ से १६ पर्यंत कर्णक्रममें जो अंक लिखे हैं अर्थात् १।३।६।१०।१५।२१।२८।३६।४५।५५।६६। ७८।९१।१०५।१२०।१३६ ये अंक हैं इसीक्रम करके प्रस्तारकी दशवीं आठवीं सातवीं शकलोंके अंकोंका जोड करना फिर ऐसेही प्रकारसे प्रस्तारमें जो पांचवीं और आठवीं शकलहैं उनके अंकोंको

जोडके इससे भागदेवै तब जो बाकी अंक रहैं उतनेही ग्राम चोर और धनीके मध्यमें हैं यह विशेषता करके दूरस्थित चोरका मार्ग मान कहा है ॥ १०० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

चौरस्वरूपज्ञाने ।

चौररूपंजगाद्धास्यचाऽदहालयगाह्लात् ॥ जातिवर्णाकृतिस्त्र्यादिस्वभावाद्यखिलंवदेत् ॥ ४ ॥

टीका—चोरके रूपादि जाननेके लिये प्रस्तारमें सातवें घरकी शकल अन्दह क्रमके जिस घरमेंहो उतनी संख्याके प्रस्तारके घरमें जो शकल हो उसके अनुसार चोरकी जात रंग आकार स्त्री पुरुषादि पूर्वोक्त संज्ञा प्रकारोक्त कहने ॥ ४ ॥

लाभालाभप्रश्ने ।

धनेयौतनुशक्रौख्योहत्वाद्वैचैकमेतयोः ॥कुर्य्यात्तद्याखिलंचेतिबयाजंहृतवस्तुनः॥५॥ शीघ्रलाभोन्यथानैवातिथ्युल्कायांविपर्ययः॥दाखिलंसाबितंसौम्यंधनेचेदखिलाप्तिकृत् ॥६॥ मुन्कलिवेचाशुभेवितमर्द्धंलभ्यंनखारिजे ॥ अष्टमेखारिजेचौराद्धनमन्यत्रगच्छति ॥ ७ ॥ एवंचौरस्यपृच्छायां भेदाः प्रोक्ताःसुसप्तमे ॥ स्वर्णकर्य्यमराश्चैवविधिनानेनलक्षयेत् ॥ ८ ॥ तेषां भौमस्य खण्डाभ्यां संभवं सविचिंत्य च ॥ संवदेद्देशकालज्ञः शेषमत्रापि पूर्ववत् ॥ ९ ॥

इति सप्तमेविशेषः ।

टीका--चोरित द्रव्य मिलेगा वा नहीं ऐसे प्रश्नमें २।११ और १।१४खण्डोंको मिलायके दो शकल फिर उन दोकीभी एक बनावै

वह दाखिलहो अथवा बयाज हो तो गयी वस्तु शीघ्रही लाभ होगी औरप्रकारसे न होगी तथा १५वें घरमें उक्काहो तौभी लाभ न होगा और यदि दूसरे घरमें दाखिल सावित सौम्यखण्ड हो तो चोरित धन पूरा मिलजायगा ॥५॥६॥ मुन्कलीब हो अशुभ हो तो आधा द्रव्य मिलेगा खारिज हो तो कुछ नहीं मिलेगा अष्टम घरमें यदि खारिज शकलहो तो चोरीका माल चोरके पासभी नहीं रहा अन्यत्र चलागया॥७॥ ऐसे भेद चोर विचारमें सप्तम स्थानसे कहे हैं सुवर्ण बनानेवाले (रसायनी) और देवताओंकोभी इसी प्रकार देखना कि, किस देशमें किस ग्राममें किस घरमें हैं ॥ ८ ॥ सो मंगलकी शकलोंसे है वा नहींहै ऐसा संभव विचारकर कहना देशकालके जाननेवालेने अपनी बुद्धिसे विचारके कहना और शेष सब बात चोरक उक्तवत् विचारनी ॥ ९ ॥

अथाष्टमे विशेषः ।

ममर्णमुक्तिस्त्वथवापि वृद्धिःसाम्यंचवास्यादिति
चिंतयेज्ज्ञः ॥ आद्येगृहेकब्जुलदाखिलंस्याद्धनेऽ
तवेदाखिलमष्टमेतत् ॥११० ॥ तदर्णमुक्तिस्त्व
रितंधनाष्टेसत्खारिजेसाचिरकालतः स्यात् ॥
आद्याक्षितातींयगृहेषु हुम्रांकिशोकलावृद्धिरतो
न्यथास्यात् ॥ ११ ॥

टीका--अब अष्टम भावमें विशेष कहते हैं कि, मेरे ऊपरका ऋण छूटजायगा वा बढेगा वा ऐसेही रहेगा ऐसे प्रश्नमें पंडितने विचारना कि, जो प्रथम घरमें कब्जुल दाखिल शकल और दूसरे घरमें तथा आठवें घरमें अतवेदाखिल हो ॥ ११०॥ तो शीघ्र ऋण उतर जायगा जो २।८ घरोंमें शुभ खारिज हो तो बहुत दिनोंमें

करजा उतरेगा यदि प्रथम घरमें हुम्रा दूसरेमें अंकीश तीसरेमें उक्का हो तो ऋण बढेगा ॥ ११ ॥

अथ नवमे विशेषः ।

तत्रविदेशगतस्य जीवनमरणज्ञानम्--वाय्वग्न्यो जींवितानिस्युर्मृतानिचधराम्बुनोः ॥ खानित च्छेषतोवाच्यंफलंकष्टंतुतत्समम् ॥ १२ ॥ तत स्तिथ्यंतबिन्द्वैक्येजीवेन्नष्टोरदाधिके॥ रदाल्पेच मृतः कष्टीरदतुल्येविशेषतः ॥ १३ ॥ आद्येच नवमेखंडेशुभेतुचिरजीवितः ॥ विपरीतेन्यथावा च्यंफलंपुंसिविदेशगे ॥ १४ ॥

टीका--नवममें विशेषतः परदेश गयेके जीते मरेके प्रश्नमें प्रथम और नवम घरमें वायु तथा अग्नितत्त्वके बिन्दु हों तो जीवित और पृथ्वी तत्त्व तथा जल तत्त्वके हों तो मृत जानना और प्रथमसे पंद्रहवें घरपर्यंत जितने बिन्दु हों सबको जोडके ३२ से अधिक हों तो जीवित, ३२ से कम हों तो मरगया और ठीक ३२ ही हों तो अत्यन्त कष्टमें है जानना ॥ यहभी स्मरण इसमें रखना चाहिये कि, प्रथम एवं नवम शकल शुभ हों तो वह मनुष्य बहुत दिन जियेगा विपरीतमें फलभी परदेश गये मनुष्यको विपरीतही कहना ॥ १२--१४ ॥

दशमे वादिनोर्जयपराजयौ ।

अथप्रष्टुर्विवदतोराद्यंगेहंचसप्तमम् ॥ द्वितीयस्य नृपस्यापिगृहंस्याद्दशमंतथा ॥ १५ ॥ नृपखण्ड स्ययद्योगाच्छुभंखण्डंप्रदृश्यते ॥ तज्जयः संधि रुभयोः साम्येस्याद्बलवज्जयः ॥ १६ ॥ पराजयः

पापखंडेवादिनोर्द्धनधामगौ ॥ हानिलाभप्रदौ स्यातांक्रमात्खारिजदाखिलौ ॥ १७ ॥ यद्योगा द्यादिखण्डाभ्यां शुभं तस्माच्चतज्जयः ॥ पापेपरा जयश्चैव विमृश्यप्रवदेत्सुधीः ॥ १८ ॥

टीका-अब दशम भावमें लडनेवालोंकी जीत हारका विचार है कि विवादवालोंमें पूछनेवालेका प्रथम घर दूसरे वादीका सप्तम स्थान और राजाका दशम स्थान जानना ॥ १५ ॥ राजाके खण्डमें जिसके खण्डका योग करनेसे शुभ शकलहो उसकी जीत कहनी जैसे १।१० के योगसे शुभ शकल आवै तो पूछनेवालेकी और १०।७ के मेलसे शुभ आवै तो दूसरे की विजय होगी यदि दोनहूं शुभ वा अशुभ हों तो संधि (राजीनामा) होगा अथवा जिसका बल अधिक हो उसकी जय कहनी ॥ १६॥ जिसके पाप शकल हो उसकी पराजय जिसके धन स्थानमें खारिज शकल हो उसकी धनहानि जिसके दाखिल हो उसको धनलाभ होगा॥ १७॥ सप्तम आदि जिस खंडके योगसे शुभशकल आवै उसके सहायतासे जय और पापखण्ड जिसके संमेलसे आवै उसके संबंधसे पराजय (हार) होगी ऐसा विचारके बुद्धिमानने प्रश्न कहना ॥ १८ ॥

अथ भोजन चिंता तत्रादौ तत्त्वरसानाह ।

मिष्टो वह्निः क्षीरभेदाः समीरआप्यं मूलं कीर्तितं वाफलाद्यम् ॥ रूक्षं चूर्णं पार्थिवं खंडमत्र मुख्यं भोज्यं ज्ञेयमाकाशखण्डात् ॥ १९ ॥ भुक्तं न भुक्तं च मयेति प्रश्ने नृपार्द्धकं पापमथारि गेहे ॥ तथा न भुक्तं च तथा कृताशं विपर्यये स्मात्प्रवदेन्मनस्वी ॥ २० ॥

टीका-अब भोजन प्रश्नमें प्रथम रस कहते हैं कि; अग्नितत्त्वसे मीठा, वायुतत्त्वसे दूधके भेद दधि घी मावा आदि, जलतत्त्वसे कंद मूल वा फल आदि, पृथ्वी तत्त्वसे रूखा चूर्ण सब आदि जानने मुख्य भोजनका पदार्थ यहां मुख्य आकाशखंडसे जानना ॥ १९॥ मैंने भोजन किया है वा नहीं ऐसे प्रश्नमें प्रस्तारके दशम वा छठे घरमें यदि पाप शकल हो तो भोजन नहीं किया जो इससे अन्यथा हो तो भोजन करलिया है जानना ॥ २० ॥

वह्निखण्डंनृपेचेत्स्यात्पुनरुक्तं गृहे स्वके ॥ केवलं चैक्षवं भुक्तं दधिक्षीरान्वितं भवेत् ॥ २१ ॥ फला द्यान्वितमाप्येस्याच्चूर्णाद्याढ्यश्चपार्थिवे ॥ एवं वाय्वादिखण्डानां पुनर्वह्न्यादिकालये ॥ २२ ॥ तत्तद्विमिश्रितं वा स्याद्द्विन्याद्यैर्द्वित्रियुक्तथा। यदा न पुनरुक्तं स्यात्तदा तद्गतबिन्दुभिः ॥२३॥ तत्तद्विमिश्रितं स्वस्थेज्जत्मासर्वरसान्वितम् ॥ अथचान्यत्प्रकारेण प्रवक्ष्ये भोज्यमत्रहि ॥२४॥

टीका-दशमस्थानमें यदि अग्नितत्त्वकी शकलहो और पुनरुक्तभी अपने घरमें हो तो केवल ईखका विकार चीनी मिश्री आदि दूध दहीके साथ खाया है ॥ २१ ॥ जलतत्त्वहो तो फल आदिसे संयुक्त मीठा खाया है पृथ्वीतत्त्व होतो मीठा संयुक्त सत्तू वा आटेके पदार्थ खाये हैं ऐसेही वायु आदिखंड फिर अग्न्यादि घरोंमें पडे हों तो उन उनके उक्तरस मिले हुये कहना ॥ २२ ॥ तैसेही दो तीनकी प्राप्तिमें दो तीन प्रकारके भोज्य कहने जो उक्त शकल प्रस्तार पुनरुक्त (दूसरीजगे) न होतो उसके बिन्दु जिस जिस तत्त्वके हों उसके मिश्र भोज्य जानना ॥ २३ ॥ यदि दशम घरमें

इत्तमा हो तो सभी रसोंसे युक्त विचित्रभोज्य कहना अब यहां और प्रकारसे भोज्य कहा जाता है ॥ २४ ॥

सतैलकटुकं सौरे चान्द्रे च लवणान्वितम् ॥ शाल्योदनं तथा भौमे तिक्ताढयंचणकोद्भवम् ॥२५॥ मौद्गसर्वरसं सौम्येसेक्षुगोधूमजं गुरौ ॥ साम्लं यवोद्भवं काव्ये माषंकाषाययुक्शनौ ॥२६॥राहुकेत्वोस्तथादेश्यं भोज्यं खण्डे नभस्थिते ॥ २७ ॥

टीका-दशमघरकी शकल सूर्यकी होतो तिल, तेलयुक्त कटुकपदार्थ, चन्द्रमाकी होतो सलौना मंगलकीसे भात और चणेकी (तिक्त तीखवस्तु) ॥ २५ ॥ बुधकीसे मूंग आदिका सर्वरस बृहस्पतिकी होतो मीठा और गेहूंका पदार्थ शुक्रकीसे जौका पदार्थ, खट्टा रस सहित शनिमें उडद और कढी आदि जानने ऐसेही राहुकेतुकेसे भी शनितुल्य कहना इस प्रकार दशम घरमें जिस ग्रहकी शकलहै उसका भोज्य कहना ॥ २६ ॥ २७ ॥

अथ लाभेविशेषः ।

ममाशापूर्णतामेति न वेति प्रश्नसंभवे ॥ तन्वायावाद्यशक्रौचहत्वाद्वेचैकमेतयोः ॥ २८ ॥ कार्यं च तद्गृहे तस्य गृहस्याशास्मृताबुधैः ॥ न प्रश्ने तद्लंचेत्स्यात्तदाशानैतिसिद्धिताम् ॥२९॥ सौम्यासौम्यैः पुरावत्स्यादाशाचशकुनालयात् ॥३०॥

टीका-अब ग्यारहवें घरमें विशेष है कि, मेरी आशा पूर्ण होगी वा नहीं ऐसे प्रश्नमें प्रस्तारके पहिली तथा ग्यारहवीं और पहिली चौदहवीं शकल क्रमसे गुणके २ शकल बनावै तबदोकी एककरके देखे कि, वह शकल प्रस्तारमें हैं तो आशा पूर्ण होगी प्रस्तारमें न

होतो आशा पूर्ण नहीं होगी यदि प्रस्तारमें है तो जिस घरमें पडी हो उसी घर संबंधी आशा जाननी ॥ २८ ॥ २९ ॥ उसके शुभाशुभ विचार पूर्ववत् करके शकुन क्रमसे आशा प्रश्न कहना ॥ ३० ॥

अथ व्ययेविशेषः ।

द्वादशे बंधमुक्तिस्तु विशेषेणोच्यतेऽधुना ॥ द्वादशे खारिजे बंधं मुक्तिः स्यान्नचदाखिले ॥ ३१ ॥ सभीतिस्थिरतो वाच्या मुन्कलीवे बंधनं पुनः ॥ खारिजेऽथौव्ययेवापि तिथ्युल्कायां न मोचनम् ॥ ३२ ॥ स्थानान्तरे गतिस्तत्र मृत्युरेव न संशयः ॥ एवं तन्वादिभावानां विचारः कथितो मया ॥ ३३ ॥

इति रमलनवरत्नेभावप्रश्नकथनंनामपञ्चमंरत्नम् ॥ ५ ॥

टीका–अब बारहवें भावमें बंधन (कैद आदि) से छूटनेका विचार विशेष यहाँ कहा जाताहै कि, बारहवें घरमें यदि खारिज शकलहो तो बंधनसे छूट जायगा दाखिल हो तो नहीं छूटेगा ॥ ३१ ॥ जो वह खण्ड स्थिर हो तो भय होकर छूटेगा मुन्कलीव होतो छूटके फेरभी बंधनमें पडेगा और चौथेमें तथा बारहवेंमें खारिज शकल और पंद्रहवेंमें उक्ता होतो बंधनसे नहीं छूटेगा ॥ ३२ ॥ एक जगेसे दूसरी जगा चला जायगा और निःसंदेह मरभी जायगा इसप्रकार तनु आदि भावोंका विचार मैंने कहाहै ॥ ३३ ॥

इति रमलनवरत्ने माहीधरीभाषायां भावप्रश्न-
निरूपणं नाम पञ्चमं रत्नम् ॥ ५ ॥

अथाखिलप्रश्नेष्ववधिज्ञानम् ।

प्रश्नगेहं स्वसंख्यघ्नं स्वाङ्कनाढयं तदर्द्धकम् ॥ यावत्स्याद्द्विजदहागारे स्वस्मिन्खण्डे वधिर्भवेत् ॥ १ ॥

प्रस्तारे स्वगृहाभावे पुरःपृष्ठे च विज्दहात्॥ शोध्यं योज्यं च द्विऽयाद्ये पुनरुक्तेप्ययं विधिः ॥ २ ॥ कुर्य्याद्यत्सिद्धमङ्कं स्यात्प्रश्नकालावधिस्तुसः ॥तदत्रायुष्यचक्रोत्थतुल्यमंकंभवेत्सदा ॥ ३ ॥

टीका-प्रश्नका घर अपनी संख्यासे गुण देना और विजदहोक्त अंक जोडदेना उसके प्रमित जो खण्डहो वह विजदहमें अपने स्थान उसी घरोंमें होतो वही अवधी जाननी सारांश इसका यह है कि प्रश्न घरमें जो शकल है वह विजदहपंक्तिमें अपने घर अर्थात् जितने घरमें प्रश्नमें हैं उतनेही घरमें विजदहमेंभी होतो उस विजदह पंक्तिके अंकसमान समयमें कार्य होगा विजदह पंक्तिके अंक पूर्वोक्त चक्रमें ३।३।६।१० आदि करणगत लेने जो१से१३६ पर्यंत है जब प्रस्तारमें व विजदहमें खंड स्वगृही न हो तब विधिहै कि प्रश्नघरसे पिछले घरोंमें विजदहमें होतो विजदहांकमें प्रस्तारोक्त प्रश्नघरकी संख्या घटायदेवै यदि प्रश्नघरसे आगेके किसी घरमें विजदहमें होतो विजदहांक संख्यामें प्रस्तारोक्त गृहसंख्यांक जोडदेवै जब प्रस्तारमें वह खण्ड पुनरुक्तहो तो उसमेंभी यही विधि करनी यदि २।३ आदि घरोंमें पुनरुक्त हुई हो तो सब घरोंके अंकको ऐसेही गतमें हीन गम्यमें योगकरना यदि प्रश्नखण्ड विजदहमें अपने घरमें न हो तो पहिले कहे आयुचक्रमें जहाँ प्रश्नकी शकल हो उसके नीचे प्रश्न घरके तुल्यकोष्ठक अंकको अवधि जाने. समझनेके सुगमार्थ यह अर्थ दुबारे लिखा इस प्रकार जो अंक सिद्ध बैठे वह प्रश्न समयकी अवधी जाननी यहाँ सर्वदा पूर्वोक्त आयुष्यचक्र मिले अंकके केतुल्य अवधी होती है ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

तदङ्कं किंस्यादित्याह ।

अथोमहांतादि चतुश्चतुष्के नृपाप्तखण्डस्य च पौनरुक्तिः॥घस्राश्च घस्राद्रिकमासवर्षाः क्रमात् स्युरेते शकुनालयाद्वा ॥ ४ ॥ दिनादीनां च नियमः प्रायशोविपलादि च ॥ आसन्नप्रसवादौ तुविपलानिपलानि च ॥ ५ ॥ घटिकाः प्रहरा श्चापि क्रमेणोत्थामनीषया ॥ वृष्टिप्रश्ने च वर्षा यां घटिकाश्च मुहूर्त्तकाः ॥ ६॥ प्रहरादिवसाश्चा पिवाच्याः संभावनाबलात् ॥ अयं स्थूलो विधिः सर्वप्रश्नानां परिकीर्तितः ॥ ७ ॥

टीका–प्रस्तारकी सोलहवीं शकल उम्महांत संज्ञक पहिले ४ घरोंमें होतो दिनोंकी संख्याका वह अंक जानना यदि पांच आदि चारघर बनात संज्ञकोंमें होतो सप्ताह (हप्ता) जानने जो ९ आदि ४घरमुत्तह्लव संज्ञकोंमें होतो महीने जानने. और १३ आदि४ जवा दातोंमें होतो वर्ष जानने अथवा शकुन क्रमसे यह जानना॥४॥दिन आदमियोंका नियम विशेषतः विपलादि नियम शीघ्र होनेवाले प्रसव आदिमें पला विपला बताई जाती हैं॥५॥घडी पहर भी कार्य संभावना देखके अपनी बुद्धिसे देशकालादि विचारके कहना ऐसेही वर्षाकालमें वर्षाप्रश्नकेभी घटीमुहूर्त अन्यदिनोंमें दिनादि कहने॥६॥ प्रहर दिवस आदि संभावनाके बलसे कहने जैसी जिस वक्त संभावनाहो वैसाही विचार अपनी बुद्धिसे करना यह स्थूल विधि सभी प्रश्नोंकी कहीहै ॥ ७ ॥

तदंतरे पुनःसूक्ष्माऽवधिं वक्ष्ये विशेषतः ॥ तदर्थ मुम्महांताख्य लिखेत्पंक्तिचतुष्टयम् ॥ ८ ॥

वह्नयादिगतशून्यानां खण्डानामब्दहक्रमात् ॥ पृथगष्टाष्टसंख्यानां लिखेत्पंक्तिचतुष्टयम् ॥ ९॥ लह्यानहुम्रावयजांकीशानांतुचतुष्टयम् ॥ शुद्धो म्महांतसंज्ञं स्यात्क्रमेणाद्यगतं किल ॥ १० ॥

टीका-कार्यावधि निकसेमें उस अवधिके आदिमें वा मध्यमें वा अंत्यमें कब कार्यहोगा ऐसे विचारमें पुनः विशेषतासे सूक्ष्म अवधि कहते हैं कि, इसके लिये उम्महांतनाम ४ पंक्ति लिखनी ॥ ८ ॥ अग्निस्थानमें जिनके शून्य हैं ऐसे खण्ड अब्दहक्रमसे प्रथम पंक्तिमें लिखने द्वितीयादि पंक्तियोंमें वायु आदि तत्त्वोंके खण्ड पृथक् ८।८ लिखके ४ पंक्ति लिखै ॥ ९ ॥लह्यान, हुम्रा, बयाज, अंकीश ये शुद्ध उम्महांत हैं प्रथम पंक्तिमें लिखने ऐसेही क्रमसे ४ पंक्तियोंमें ८।८ शकल लिखनी ॥ १०॥

उम्महांतचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	
· — — —	· · — —	· — · —	· · · —	· — — ·	· · — ·	· — · ·	· · · ·	अग्नि
— · — —	· · — —	— · · —	· · · —	— · — ·	· · — ·	— · · ·	· · · ·	वायु
— — · —	· — · —	— · · —	· · · —	— — · ·	· — · ·	— · · ·	· · · ·	जल
— — — ·	· — — ·	— · — ·	· · — ·	— — · ·	· — · ·	— · · ·	· · · ·	पृथ्वी

अथ तत्त्वयोजनम् ।

चलद्वितीयंस्वमथाक्ष चंद्रादाद्याष्टखण्डांतर गामियत्र ॥ प्रश्नेषुसाक्ष्यर्द्धमदस्तथास्मात्पृष्ठाऽग्रनीचोर्ध्वगतं क्रमेण ॥११॥ गतं वर्तमानंभविष्यं सुधीभिस्तथाकस्मिकं साक्षिखण्डं विलोक्य ॥ दलं यत्र सौम्यं प्रपश्येच्च कार्यमवध्याग्निभागे निजे सिद्धिदं स्यात् ॥ १२ ॥ वह्निभागसमःकालो विलोक्य पृष्ठगाद्बुधैः ॥ मिजाजस्वगृहाद्वाच्य महः कार्य्यं नृपादपि ॥ १३ ॥ पंक्त्यादेर्भूतिकालं

च शकलादष्टमाद्वदेत् ॥ वर्तमानं त्वष्टमस्य प्रथमाच्छकलाद्वदेत् ॥ १४ ॥ भविष्यं तूर्यपंक्तेश्च प्रथमापंक्तितो वदेत् ॥ आकस्मिकयथाद्यायाः प्रथमाबलिनो वदेत् ॥ १५ ॥ प्रकारोऽयंमया प्रोक्तः सर्वप्रश्नावधौ परः ॥ कार्यसंभावनामादौ विचार्य्य निगदेद्बुधः ॥ १६ ॥

इति रमलनवरत्नेऽवधिकथनं नाम षष्ठं रत्नम् ॥ ६ ॥

टीका–उम्महातका प्रजोजन है कि, पंद्रहवें घरसे बिन्दु एक वा दो जैसे प्राप्तिहों चलकर प्रथमके ८ खण्डोंके बीच जहाँ पहुंचे वह खंड प्रश्नोंमें साक्षी जानना बिन्दु चालन विधि पहिले कह आये हैं उस साक्षीके पीछे आगे नीचे ऊपर क्रमसे अवधिके अंक लेने ॥ ११ ॥ वह तीन प्रकार होते हैं कि प्रथम वर्तमान दूसरा भाविष्य तीसरा (आकस्मिक) कछुक स्वतः सिद्ध और अकस्मात् ऐसा मिश्रित विद्वानोंने फलमें देखना जहाँ सौम्य हो तहाँ कार्य-सिद्धि जाननी जो शकल अग्निभागमें स्वगृहीहो उससे कार्यवि-धिकी सिद्धि होती है प्रगट यह है कि, उम्महान्त नामके पंक्तिमें साक्षिखंड जिस घरमें हो उसी घरमें पूर्वपंक्तिमें होतो आकस्मिक यदि अपनी पंक्तिमें पिछले घरमें होतो भूतकाल और अपने आगे होवे तो भविष्यकालका फल कहै ॥ १२ ॥ तहाँ भी अग्नि भागके समान पिछले घर होनेमें पंडितोंने देखके कहना और मिजाज पंक्तिमें अपने घरमें हो तो उसी स्वगृहसे कहना जो बडा भारी कार्य होतो दशम स्थानसेभी कहना ॥ १३ ॥ पंक्तिके आदिमें भूतकाल आठवीं शकलसे कहना आठवींका वर्तमानकाल प्रथम शकलसे कहे अर्थात् इनके जिस भागमें आगेको ही शकल

न हो तहां सन्मुख भागकी अंतिम पंक्तिही आगे समझना और प्रथम पंक्तिको आकस्मिक काल बतानेवाली शकल चौथी पंक्तिमें जाननी अर्थात् इसके पूर्व भागमें नीचेकी पंक्ति जाननी और चौथी पंक्तिका भविष्यकाल पहिली पंक्तिसे कहे ग्रंथांतरोंमें वार निकालनेकी विधि है कि, प्रस्तारमें प्रश्न शकल जिस घरमें है मिजाज पंक्तिमेंभी उसी घरमें हो तो उसके वारमें कार्यसिद्धि होगी यदि २। ३ घरोंमें पुनरुक्त हो तो उनमें जो बलवान् हो उसके वारमें और अपने घरकी होके मिजाजमें स्वगृही न हो तो प्रश्न शकलके वारमें कहना ॥ १४ ॥ १५ ॥ यह अन्य प्रकार मैंने समस्त प्रश्नोंकी अवधिके लिये कहा है इसमें भी कार्यकी संभावना प्रथम देखके अपने बुद्धिके विचारसे समझके विद्वानने कहना ॥ १६ ॥

इति रमलनवरत्ने माहीधरीभाषाटीकायां प्रश्नविधिकथनंनाम षष्ठंरत्नम् ॥ ६ ॥

अथ सप्तमे मुष्टिप्रकारमाह । तत्रतावत्खण्डानां
मृत्यूपयोगिस्वरूपाण्याह ॥

गुरुभार्गवयाः खण्डाबयाजेज्जतमायुताः ॥ मृदुलाः
कुजशिखीनानां निष्ठुराः सजमातकाः ॥ १ ॥
शनिराहोस्तरीकं च खण्डाः समृदुनिष्ठुराः ॥
निर्वीर्य च सवीर्य च क्रमेणाग्न्यादितत्त्वतः ॥ २ ॥

टीका-अब सातवें रत्नमें मुष्टिप्रश्न कहते हैं जिसमें प्रथम खण्डोंके मुष्टि प्रश्नोपयोगिस्वरूप कहते हैं कि, बृहस्पति शुक्रके शकल बयाज और इज्जतमा सहित मृदु हैं मंगल, केतु, सूर्यके खंड और जमात (निष्ठुर) कहे हैं ॥ १ ॥ शनि राहुके खण्ड और

तरीक (समृदुनिष्ठुर) कोमल भी और कडे भी हैं इनमें निर्वीर्य और सवीर्य अग्नि आदि तत्त्वोंके क्रमसे जानना ॥ २ ॥

अथ वर्णानाह शकुने ।

पीतो रक्तश्च श्वेतश्च रक्तकृष्णासितासितः॥ गोधू
माभः श्वेतपीतः कृष्ण चात्यंतकृष्णरुक् ॥ ३ ॥
कृष्णरक्तं तथा श्वेतं पीतं श्यामं सितासितम् ॥
हरितश्यामपीतं च हरितश्वेतकृष्णकम् ॥ ४ ॥
हरितं हरितश्वेतश्यामं लह्यानतः क्रमात् ॥ शकु
नक्रमतोवर्णा ज्ञातव्याः सर्वदाबुधैः ॥ ५ ॥

आकृतिः ।

दीर्घं च वर्तुलं दीघ चतुरस्रं सदीर्घकम् ॥ व्यर्तुल
वर्तुलं व्यस्रं वर्तुलं दीर्घविस्तरम् ॥ ६ ॥ दीर्घवि
स्तीर्णदीर्घं च दीर्घविस्तीर्णदीर्घकम् ॥ वर्तुलं
वर्तुलं दीर्घं विस्तीर्णं शकुने क्रमात् ॥ ७ ॥

स्थानान्याह ।

नुस्रतखारिजलह्यानावतवेखारिजस्तथा ॥ नगरा
रण्यवासानि तरीखं कृषिवर्त्मनि ॥ ८ ॥ स्वर्णरौ
प्यापणस्थाने कञ्जुह्याखिलजमातके ॥ अङ्की
शश्च तथा चित्रहठेस्यादिजूतमागृहम्॥९॥नकी
स्थानं नवग्रामं मतवेदाखिलं वने ॥ वृक्षे च पाठ
शालायां स्वारामे नुस्रह्याखिलम् ॥ १०॥ क्षेत्रप्र
वाहारामेषु बयाजस्य गृहं स्मृतम्॥कञ्जतुल्खा

रिजशैलवनेषु फरहाभिधम् ॥ ११ ॥ नृत्यारामेत
मिस्राढयं मुक्तास्थान प्रकीर्तितम् ॥ हिंस्रास्त्रवैद्य
सदनं हुम्रायाः स्थानमीरितम् ॥ १२ ॥

अथ मौल्यामौल्यमाह ।

लह्यान्नुस्युत्खारिजनुस्हृदाखिलदलानि भूरिमौ-
ल्यानि ॥ सममौल्यकंबयाजं तरिखोक्ताकब्जदा
खिलाः सम्मौल्यानि ॥ १३ ॥ नक्यंकीशातवखा
कब्जुलखारिजजमाताख्याः॥स्युर्हीनामौल्यरत
वेदहुम्रेफहैंज्तमेतिमौल्यानि ॥ १४ ॥

अथ लघुत्वगुरुत्वमाह ।

अग्निवायुदलानिस्युर्बहुभारयुतानि हि ॥ जलभूमि
दलानिस्युः सघनानि गुरूणि च ॥ १५ ॥

अथान्यासंज्ञा ।

वह्निखण्डानि चत्वारिपरपोषणहेतवः ॥ पराणि
परपोषेण कथितानि मुनीश्वरैः ॥ १६ ॥

अथान्यासंज्ञा ।

लह्यानं फरहोक्ताख्यौहुम्रानुस्युतखारिजौ ॥ अत
वेद्वौनकीजत्मान्येन्येन्ये च युताः स्मृताः ॥ १७ ॥

अथ खण्डानां शत्र्वादिकमाह ।

खारिजानां रिपुर्वह्निः पार्थिवानां तथाद्दषत् ॥
जलायानां जलंशत्रुः शेषाश्चाधारशत्रवः ॥ १८ ॥

पूर्णादिसंज्ञामाह ।

जमातेजतमेनुस्युदुक्ताकब्जुलदाखिलाः ॥एतानि
पूर्णखण्डानि खंडितान्यपराणि च ॥ १९ ॥

अथ खण्डानां रसाः ।

आग्नेयानां तिक्तकटुर्मिष्टाम्लं वायुखण्डके ॥ नुस्रुहा
खिलबयाजारव्यनकीषु च तरीकके ॥ २० ॥ मिष्ट
क्षारं तथा तिक्तमसतक्षारं प्रकीर्तितम् ॥ कब्जुदाखि
लके वापि जमातोक्लिकयोस्तथा ॥ २१ ॥ मिष्टाम्लं
च तथाङ्कीशेनिकुष्टाम्लं प्रकीर्तितम् ॥ रसाह्येते समा
ख्याताः खण्डानां मुनिभाषिताः ॥ २२ ॥

भूमिमाह ।

निर्माणहेतवो वह्नेः खण्डानि निखिलान्यपि ॥ विनो
क्तांपार्थिवानिस्युर्भूमिशिल्पमयानि च ॥ २३ ॥
कारणानि च शिल्पस्य शेषखंडानि संतिहि ॥ एवं
विचार्य्यं सुधियावदेत्प्रश्नं समाहितः ॥ २४ ॥

अथ खण्डानां धात्वादिसंज्ञा ।

धातुर्मूलं च धातुश्च मूलजीवौ च मूलकम् ॥ मूल
जीवौ तथा मूलं धातुमूले च धातुकम् ॥२५॥ मूल
जीवो जीवमूले भवंति शकुनक्रमात् ॥ उपयोगिहि
मुष्ट्यादावेषां तस्मादिहोदिताः ॥ २६ ॥

यहाँ तीसरे श्लोकसे लेकर २६ श्लोकपर्यंत शकलोंकी अनेक प्रकारकी संज्ञाकहीहैं जो इस ग्रंथके प्रथम रत्नके अंतमें मैंने चक्ररूप लिख दिये हैं परंतु पाठकोंके सुबोधार्थ यहाँभी इन २४ श्लोकोंकी टीका चक्राकार लिखी जातीहै पाठकगणइसी चक्रमें समझ सकतेहैं—

शकलानांनुपादिचक्रम् शकुनक्रमतः ॥

चिह्न	≐	÷̄	÷	=	⁝	≑	⩧	≟	⩦	≐	⁝̄	⁝	⁝	⊤	≡	⁝
नाम	ल.	क.दा	क.खा	ज.	फ.	उ०	भ०	हु०	व.	नु.खा	नु.दा	अ.ख	नक।	अ.दा	इ०	".
रूप १	मृदु	कठिन	मिश्र	कठिन	मृदु	कठि मृदु	कठि मृदु	कठिन	मृदु	कठिन	मृदु	कठिन	काठन	मृदु	मृदु	कठिनमृदु
वर्ण १	पीत	धूसर	श्याम	पांडुर	विचित्र	श्याम	कर्बुर	रक्त श्याम	श्वेत	धूसर	बहु वर्ण	श्याम	रक्त	श्वेत	शुक्ल	३३५। श्वेत
आकृति २	दीर्घ	वर्तुल	दीर्घ	चतुरस्र	वर्तुल	वर्तुल	चतुरस्र	वर्तुल	दीर्घ विस्तृ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ विस्तृ	वर्तुल	वर्तुल	दीर्घ०	१व स्तीण
वास स्थान३	नगरारण्ये	स्वर्णरूप्य	वन पर्वते	सु. रूप्य इ.	नृत्यारामे	अंधकारे	चित्र हट्टे	हिंसागारे	क्षेत्रारामे	नग.रण्ये	पाठशाले	नगरारण्ये	वनगामे	वन वृक्षे	चित्र हट्टे	कृपि मार्गे
मौल्य४	अति मौ.	समौल्य	मौल्य हीन	मौल्य हीन	स्वल्प मौ.	समौल्य	मौल्य हीन	स्वल्प मौल्य	मध्य मौ.	अति मौ	अति मौ	मौल्य हीन	मौल्य हीन	स्वल्प मौ.	स्वल्प मौ	समौल्य
भार५	लघु भार	बृह द्भार	लघु	बृह	मिश्र भा	बृ.भा.	बृ.भा.	मि.भा	मिश्र भार	लघु	मिश्र	लघु	मिश्र	मिश्र	मिश्र	मिश्र
हेतु६	पोषक	पुष्टिकं	पो०	पु०	पु०	पु०	पु०	पु०	पु०	पो०	पु०	पो०	पु०	पु०	पु०	पु०
योग	एक	युत	युत	युत	एक	एक	युत	एक	युत	एक	युत	एक	एक	एक	एक	युत
शत्रु७	अग्निन	पाषाण	अग्नि	पाषाण	अधर	पाषाण	पाषा.	अधर	जल	अग्नि	जल	अग्नि	जल	अधर	अधर	जल
पूर्णापूर्ण८	खंडित	पूर्ण	खंडित	पूर्ण	खंडित	पूर्ण	खंडित	खंडि.	खंडित	खंडित	पूर्ण	खंडित	खंडित	खंडित	पूर्ण	खंडित
रस ९	कटुक	कटूवम्ल	कटु	कटु अम्ल	मधुर	कटु अम्ल	कटु अम्ल	मधुर	क्षार मिष्ट	कटुक	क्षार मिष्ट	कटुक	क्षार मिष्ट	मधुर	मधुर	क्षार मिष्ट
कार्यहेतु १०	निर्माण	भूमि शिल्प	निर्माण	भूमि शिल्प	शिल्पकार	भूमि शिल्प	शिल्पकार	शिल्पकार	निर्माण	शिल्पकार	निर्माण	शिल्पकार	शिल्पकार	शिल्पकार	शिल्पकार	शिल्पकार
धात्वादि ११	धातु	मूल	धातु	मूल	जीव	मूल	मूल	जीव	मूल	धातु	मूल	धातु	मूल	जीव	जीव	मूल

अठारहवें श्लोकका अर्थ इस चक्रमें है.

अग्नि	वायु	जल	भूमि	तत्व
भूमि	जल	वायु	अग्नि	सम
जल	भूमि	अग्नि	वायु	शत्रु
वायु	अग्नि	भूमि	जल	मित्र

१८वे श्लोकका अर्थ जो चक्रमेंहै सो ऐसाहै कि. चारिय शकलोंका अग्नि शत्रु जमात होती मुष्टिकी व. स्तुका पत्थर शत्रुहै अंकीश. उक्ला. क. दा. काभी पाषाण शत्रुहै. फरहा हुम्रा इजत्तमा.अ.दा. का पूर्वा अन्य सब शकलोंका शत्रु जलहै ॥

अथ मुष्टिप्रश्नकथनम् ।

हुम्रानकीभ्यां च तथैककेन मुष्टौ ध्रुवं वस्तुविचि
न्त्यमादौ ॥ प्रश्नेषु ते चेद्बहुषु स्थलेषु मुष्टौ तदा
वस्तुकदंबमूह्यम् ॥२७॥ द्वयोरभावेऽपि चशून्य
मुष्टिं विचिंत्य पूर्वंनिगदेन्मनस्वी ॥ तुर्य्यैरिपौसा
बितदाखिलेचमतांतरेमुष्टिषु वस्तुवाच्यम् ॥ २८ ॥

टीका–मुष्टि प्रश्न विचार है कि, जब कोई पूछे कि, मेरी मुष्टिमें क्या है ? इसमें पाहिले यह विचारना कि,मुट्ठीमें कुछ वस्तु है वा नहीं ऐसे विचारमें प्रस्तार बनायके देखे यदि उसमें हुम्रा और नकी शकल हों अथवा इनमेंसे एकभी होतो निश्चय मुट्ठीमें कुछ वस्तु है यदि वे शकल बहुत घरोंमें होतो बहुत वस्तु मुट्ठीमें हैं कहना ॥२७॥ यदि उन दोमें कोई भी शकल प्रस्तारमें न होतो मुट्ठी खाली है ऐसा विचारके बुद्धिमानने कहना,और चौथे तथा छठे घरमें साबित और दाखिल शकल होतो मुट्ठीमें वस्तु है यह मतांतरहैं॥२८॥

यदि मनुजसमूहे मुष्टिविज्ञानपृच्छासपादिदशज
नानांपंक्तिरेकाविधेया ॥ तदितरमनुजानां श्रेणि
मन्यांप्रकुर्यान्मुहुरितिकुजखण्डं यत्र तत्रास्तिमुष्टिः
॥ २९ ॥ कृत्वा प्रश्नमथात्र शैलदलगा संख्याऽज
दोत्थाचयासादेयानवमे चसाबितदलंचेद्दाखिलद
क्षतः ॥ वामाच्चेन्नवमेपिखारिजमथोमुन्कीबकंवा
कराद्यत्रस्यात्परिपूर्तिरेवमवलावेकःपुमान्मुष्टिवान्
॥ ३० ॥ एवं समुष्टौ पुरुष भियातेक्षांकतवोदाखि
लसाबिताढ्या ॥ स्याद्दक्षिणामुष्टिरतोन्यथान्या

त्वेषां विरोधे बलवत्तराद्वदेत् ॥ ३१ ॥ अथवा पञ्चषष्ठात्थाच्छकलात्पूर्ववद्वदेत् ॥ वामायांदाक्षिणायांवात न्नेदोद्भवतोऽपि वा ॥ ३२ ॥

टीका-जो बहुत मनुष्योंके समूहमें मुष्टिज्ञानका प्रश्न होतो अपने सामने १० दश मनुष्योंकी १ एक पंक्ति बिठलावै अन्योंकी दूसरी पंक्तिकरे ऐसेही जितने अधिकहों उतने १०।१० के अलग पंक्तिकरे अब इन दशोंमेंसे किसकी मुट्ठीमें वस्तु है इस विचारके वास्ते ॥ २९ ॥ प्रस्तारके सातवें घरमें जो शकल है उसकी अब्जद क्रममें जो संख्याहै उतनवें मनुष्यके मुष्टिमें वस्तुहै इसमेंभी मनुष्य गणनाका क्रम है कि, उसी प्रस्तारके नवमघरमें साबित अथवा दाखिल खण्ड होतो अपने दाहिने हाथके ओरसे मनुष्य गिनने यदि नवममें खारिज अथवा मुन्कीबदल होतो बायें हाथके तर्फसे गिनना जिसपर वह संख्या पूरी हो उसके मुष्टिमें वस्तु कहनी ॥ ३० ॥ इसप्रकार जब मुष्टिवाला पुरुष जाना जानेमें देखना कि, पांचवें छठे और नवम घरमें दाखिल वा साबित शकल हों तो उस मनुष्याके दाहिनी मुष्टिमें और उन घरोंमें खारिज वा मुन्कलीब शकल होतो बाँई मुष्टिमें वस्तुहै यदि उक्त ३ घरामें परस्पर विरोधी शकलहों अर्थात् किसीमें साबित दाखिल किसीमें खारिजमुन्कलीहो तो उनमेंसे जो शकल बलवान हो उससे वामदक्षिण कहना ॥ ३१ ॥ अथवा पांचवीं तथा छठी शकलको मिलायके जो शकलहो उससे पूर्वके तरफ विचार करके कहना अथवा नवमहीसे वामदक्षिण मुष्टीका विचार करना ॥ ३२ ॥

इदानीं वस्तुकथने प्रकार च ब्रवीम्यहम् ॥ काठिन्य मार्दवे चाद्याद्वर्णं च द्वितीयाख्यात् ॥ ३३ ॥ स्वरूपं त्रितयात्तुर्य्याद्दीर्घं वृत्तादिसन्न च ॥ मौल्यं च पंच

मात्तस्य गुरुत्वादींस्तथारिपोः ॥ ३४ ॥ युक्तायुक्तं पुष्टिहेतुं नगात्तत्पुनरुक्तितः ॥ तत्संख्यामष्टमात्तस्य शत्रुतां च वदेद्बुधः ॥३५॥ नंदात्खण्डितपूर्णत्वेदशमात्स्वादुमेव च ॥ निर्मितं लाभतस्तस्य धातुमूलादिकं व्ययात् ॥ ३६ ॥ तद्वदेद्येनखण्डेन तस्मात्खण्डाच्च सप्तमम् ॥ निरीक्ष्य तत्पदार्थं च वदेत्संभावितं बुधः ॥ ३७ ॥ विरोधे तत्र वान्योन्यं तत्र द्वाभ्यां समुद्धरेत् ॥ खण्डमेकं तस्य गुणा वाच्यामुष्टिगवस्तुनि ॥ ३८ ॥

टीका--अब वस्तु बतलानेका प्रकार कहताहूँ कि वस्तुकी कठोरता वा कोमलता प्रथम घरसे, वर्ण (रंग)दूसरे घरसे ॥३३॥ स्वरूप तीसरेसे बडा छोटा गोल आदि आकार और स्थान चौथेसे, मूल्य पञ्चमसे हलका भारीपन छठेसे ॥ ३४ ॥ युक्त एका की पुष्टि हेतु सप्तमसे, तथा सप्तमस्थ खण्ड जहाँ पुनरुक्त हो उस घरसे संख्या, अष्टमसे शत्रुता पंडितने कहनी ॥ ३५॥ नवमसे खण्डित और पूर्णता, दशम भावसे स्वाद, जायका, ग्यारहवेंसे निर्माणता बारहवेंसे धातुमूल आदि जानने ॥ ३६ ॥ जिस खण्डसे जो कहे उसका संभव सप्तमसेभी अपनी बुद्धिसे विचार लेना असंभव बात न कहनी ॥ ३७ ॥ यदि प्रथम सप्तम सकलोंके फलमें विरोधपाया जावे तो उन दोकी एक शकल बनायके उसके अनुसार मुष्टिगत वस्तुके गुण कहने ॥ ३८ ॥

अथ खण्डयोगेनमुष्टौविशेषमाह ।

विशेषं खण्डयोगेन प्रोच्यते पूर्वसंमतम्॥ वह्निखण्डं द्वितीयेस्याद्वर्णं कांतियुत तदा॥ ३९ ॥ वयाज चेत्

तृतीयेस्याच्छून्यांतं मुष्टिवस्तुयत् ॥ सरन्ध्रं तत्प्र
वक्तव्यं तरीकेत्रिनवास्तिथे ॥ ४० ॥ अथवोत्की
र्णाचित्राढ्यं सूक्ष्मचिह्नाङ्कितं तथा ॥ नकीफ
रहौतृतीयैके त्रिकोणं छिद्रसंयुतम् ॥ ४१ ॥
तृतीये प्रथमे चोक्कावस्त्रवल्कलवेष्टितम् ॥ नवमे
वायुखण्डं चेद्वस्तुलोमान्वितं वदेत् ॥ ४२ ॥
इन्द्रखण्डं यदोक्काचेदग्निदग्धं तदा वदेत् ॥ आ
द्यगेहे यदाप्यं स्याच्चूलभृत्कंदुकादिकम् ॥ ४३ ॥
एवं प्रोक्तो मुष्टिभेदः पुराणैः सम्यग्रम्ले पूर्वर
म्लानुसारी ॥ दैवज्ञानां कीर्तिसन्मानहेतोर्लौ
कानां वै रंजनाय प्रकुर्यात् ॥ ४४ ॥

इति रमलनवरत्नेमुष्टिप्रश्नकथनंनामसप्तमं रत्नम ॥ ७ ॥

टीका-और प्रकार है कि, मुष्टि प्रश्नमें विशेषतर शकलोंके योगसे वस्तु लक्षण कहते हैं जो पूर्वाचार्योंको संमत हैं कि, दूसरे स्थानमें अग्नि खण्ड हो तो वस्तु वर्ण कांतिमान् (चमकीला) जानना ॥ ३९ ॥ तीसरे घरमें बयाज शकल हो तो मुष्टिके वस्तु शून्यांतः (पोली) वा खोखरी है तीसरे वा नवम घरमें तरीक हो तो उस वस्तुमें छिद्र है ॥ ४० ॥ अथवा अनेक प्रकारके चित्रोंसे युक्त वा सूक्ष्म चिह्नोंसे युक्त है यदि ३ । ९ स्थानमेंसे किसीमें भी नकी वा फरहा हो तो वह वस्तु त्रिकोणाकार छिद्र सहित है ॥ ४१ ॥ तीसरे पहिले घरमें उक्का हो तो वह वस्त्र व किसी वृक्षादिके वल्कल (त्वचा) से वेष्टित है जो नवम घरमें वायुखण्ड

हो तो वस्तु केशयुक्त कहनी ॥ ४२ ॥ चौदहवें स्थानमें उक्का हो तो वस्तु अग्निसे दग्ध कहनी प्रथम घरमें जलतत्वकी शकल हो तो वस्तु रूईभरा गेंद आदि है ॥ ४३ ॥ इस प्रकार प्राचीन आचार्योंने पूर्व रमल शास्त्रानुसार मुष्टिगत वस्तुका भेद कहा है ऐसा प्रश्न ज्योतिषियोंके कीर्ति एवं सन्मानका हेतु कहा है लोकोंके खुश करनेको ऐसा प्रश्न करना ॥ ४४ ॥

इति रमलनवरत्ने माहीधरीभाषायां मुष्टिप्रश्नकथनं नाम सप्तमं रत्नम् ॥ ७ ॥

अथ नामबंधप्रकरणमष्टमंरत्नम् ।

नामान्तरासर्वमनःप्रसादो न कार्यसिद्धिःसुलभा च यस्मात् ॥ तस्मात्प्रवक्ष्येखिलनामबन्धं जन प्रतीतिः सुयशोपि यस्मात् ॥ १ ॥ आदावेवं विनिश्चित्य कतिनामाक्षराऽणि हि ॥ चौरादीनां ततः कुर्यादक्षरानयनं सुधीः ॥ २ ॥ चौरादीनामवर्णानां प्रश्ने च फरहालयात् ॥ संख्यास्यादम्लावित्तस्मादादौ फर्हां विलोकयेत् ॥ ३ ॥

टीका—सम्पूर्ण रूपसे मनकी प्रसन्नता नाम प्रगट बतलानेसे है क्योंकि प्रश्नकार्य सिद्धि सहज नहीं है इस वास्ते संपूर्ण नामबंध कहताहूं जिससे मनुष्योंको प्रतीति और रम्मालका सुयश भी होता है ॥१॥ प्रथम ऐसा निश्चय करे कि, नामके कितने अक्षर हैं ऐसे चोर आदिके नामाक्षर लानेका यत्न बुद्धिमान् करे ॥२॥ चोर आदिके नामाक्षरोंके जाननेका प्रश्नमें फरहा शकलसे अक्षर संख्या होती है इसलिये रमलज्ञने प्रथम फरहा शकल देखनी॥३॥

नामवर्णसंख्यामाह ।

द्वाभ्यामथैकार्द्धयुतार्णनामफर्हास्थिते स्याद्वाद्धि तयादिषट्कतस्तु॥वसोस्तथैकाह्रासितं क्रमेण सप्ता र्णमाद्यव्ययसंस्थितेः स्यात् ॥४॥ विश्वोदयास्या द्धनधामगाब्धाङ्जदांकतुल्यार्ण--मथेन्द्रराज्ञोः । वेदार्णकद्यादि गृहे यदा स्याद्वीर्य्यान्विताद्वापि वदेत्पुरावत् ॥ ५ ॥ यायदाप्रश्नगाफर्हातदात्वा- द्यदलस्य तु ॥ या संख्याचाङ्जदांकोत्थातत्तु ल्यार्णतदाहयम् ॥ ६ ॥

टीका--नामाक्षर संख्या कहते हैं कि प्रथम घरमें फरहा हो तो नामके ७ अक्षर होंगे दूसरे घरसे ७ वें पर्यंत १। १ बढायके और ८ वेंसे ११ पर्यंत १। १ घटायके जानने जैसे दूसरेमें २ तीसरेमें ३ चौ० ४ पं० ५ छ० ६ स० ७ पुनः आठवेंमें ६ नौ० ५ द० ४ ग्या० ३ और बारहवेंमें ७ अक्षर जानने ॥ ४॥ जो तेरहवेंमें फरहा हो तो दूसरे भावमें जो शकल है उसका अब्जदमें जो अंक हैं उतने अक्षर और १४ तथा १६ वेंभी हों तो ४ अक्षर जानने. यदि बहुत जगे फरहा हो तो बलवानकी संख्या पहिलेके तुल्य कहनी ॥ ५ ॥ प्रस्तारमें फरहा न हो तो प्रथम घरकी शकलके अब्जदांकसे जो संख्या निकले उतने अक्षर नामके जानने ॥ ६ ॥

अथ वर्णानाह ॥ तदर्थचक्रम्--

अधुनाखिलवर्णानामानयार्थविधिं ब्रुवे॥ आद्यत्र योदशाभ्यां तु खण्डमेकं समुद्धरेत् ॥ ७ ॥ चक्रे नवाद्यक्षिगृहेऽब्जदाद्याः सावि़्ज्दहाद्येकमतोविले

ख्याः ॥ अङ्कयाङ्कयगणांश्च तथाह्यधस्तात्सर्वेषु कोष्ठेष्वियमेवरीतिः ॥ ८ ॥ अबजदव्वजहुत्तीकलमनसफलकरशतससशखजजजजदह ॥

अब नामाक्षर निकालनेके लिये चक्र कहते हैं उपरोक्त ७ । ८ श्लोकोंका अर्थ इसी चक्रमें जानना—

अबजदवर्णचक्रमिदम् ।

अलफ	बे	जीम्	दल्	हळ टा	वाव	जे	हेबडी	तोय	ये	काफ्म. रजंवाल	लाम	मीम्	ननू	सीन्	यवनाक्षर	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	
÷	≑	⁝	≕	⁝	÷	≐	≕	≐	≑	⁝	≕	⁝	÷	÷	≡	
अ१	ब२	ज३	द४	ह५	व६	ज७	ह८	त९	य१०	क२०	ल३०	म४०	न५०	स६०	अ७०	१
व	ज	द	ह	व	ज	ह	त	य	क	ल	म	न	स	क्ष	फ़८०	२
ज	द	ह	व	ज	ह	त	य	क	ल	म	न	स	अ	फ़	स९०	३
द	ह	व	ज	ह	त	य	क	ल	म	न	स	अ	फ़	स	क१००	४
ह	व	ज	ह	त	य	क	ल	म	न	स	अ	फ़	स	क	र२००	५
व	ज	ह	त	य	क	ल	म	न	स	अ	फ़	स	क	र	श३००	६
ज	ह	त	य	क	ल	म	न	स	अ	फ़	स	क	र	श	त४००	७
ह	त	य	क	ल	म	न	स	अ	फ़	स	क	र	श	त	स५००	८
त	य	क	ल	म	न	स	अ	फ़	स	क	र	श	त	स	ष६००	९
य	क	ल	म	न	स	अ	फ़	स	क	र	श	त	स	ष	य७००	१०
क	ल	म	न	स	अ	फ़	स	क	र	श	त	स	ष	य	ज८००	११
ल	म	न	स	अ	फ़	स	क	र	श	त	स	ष	य	ज	ज८००	१२
म	न	स	अ	फ़	स	क	र	श	त	स	ष	य	ज	ज्व	ग९००	१३
न	स	अ	फ़	स	क	र	श	त	स	ष	य	ज	ज्व	ग	अ	१४
स	अ	फ़	स	क	र	श	त	स	ष	य	ज	ज्व	आ	अ	व१००	१५
अ	फ़	स	क	र	श	त	स	ष	य	ज	ज्व	ग	अ	ब	ज	१६

यह चक्र चोर आदिके नाम निकालनेका है इसमें पूर्वोक्त उदाहरण मिलाके स्पष्ट मिलता है यह ऊपरका क्रम है ॥ तिर्यक्क्रम दक्षिणसे वामको तिर्च्छा देखना है ॥ ७ ॥ ८ ॥

आद्यत्रयोदशाभ्यां च शकलं कारयेत्सुधीः ॥ प्रस्तारे यद्गृहे खण्डं तत्तुल्यं चोर्ध्वपंक्तिके॥९॥ अङ्कं चैव ततस्तस्योत्पन्नस्य शकलस्य च॥विज दहस्यमतेनाङ्कगेहस्यचतदङ्ककम् ॥ १०॥ तिर्य क्क्रमेण देयानि चक्रेवर्णांकके द्वयोः।अङ्कयोश्च तलेयैश्च वर्णस्तत्प्रथमाक्षरम् ॥ ११ ॥ तुरीयश ककोद्भूतादेवंवर्णद्वितीयकम् ॥ नगतिथ्युद्भवा च्चापि वर्णमेवं तृतीयकम् ॥ १२ ॥ षोडशाशा जनेस्तुर्यवर्णमेवं समुद्धरेत्॥ विषमार्द्धखसंख्या त्खण्डेनार्णंतुपंचमम् ॥ १३ ॥ केन्द्रस्थशून्यसं ख्याकाद्धिग्नरेखाङ्कसंयुतात् ॥ यत्खण्डं तस्य पूर्वोक्तमार्गेणार्णरसोन्मितम् ॥ ॥ १४ ॥ विश्वा च्चतुष्कस्य नभोगणेन तथैववर्णं नगसंख्यकं स्यात् ॥ एवं हराख्यार्णकदंबमुक्तमत्रापिमात्रा स्वमनीषयोह्या ॥ १५ ॥ यस्य कस्यापिनामैवं तथा सृष्ट्यादिगस्य च ॥ नामानि कल्पयेद्वि द्वान्देशज्ञातिवशाच्छनैः ॥ १६ ॥

टीका—अब अक्षर निकासनेकी विधि कहते हैं कि, प्रस्तारके प्रथम और तेरहवें शकलोंको जब देकर एक शकल बनावै वह शकल प्रस्तारके जितने घरमें हो उतने अंककोष्ठचक्रकी ऊपरकी पंक्तिके कोष्ठमें सीधे नीचे और वही शकल विजदह क्रमके जितने घरमें हो उतने संख्यांक तिर्छे कोष्ठमें देवे ऊपरके और तिर्छे संख्याके कोष्ठोंके सीधे जिस अक्षरपर मिले वह नामका पहिला

अक्षर जानना ॥९॥१०॥११॥अब दूसरे अक्षरलानेकी विधि है कि, चौथी और चौदहवीं शकल मिलायके जो शकल हो उससे पूर्वोक्त क्रम करके दूसरा अक्षर नामका जानना ऐसेही सप्तम तथा पन्द्रहवींसे उत्पन्न शकलसे तीसरा अक्षर जानना ॥ १२ ॥ ऐसेही १६। १७ शकलोंसे उत्पन्न खण्डसे चौथा अक्षर लेना। पंचमाक्षर जाननेके अर्थ कहते हैं कि, प्रस्तार जितने विषम १। ३। ५। ७। ९। ११। १३। १५ स्थान हैं इसके भी बिन्दु जोडे १६ से भाग देके जो शेष रहे उतनेही घर प्रस्तारमें जो शकल हो उससे पूर्वोक्त क्रम करके पांचवां अक्षर जानना ॥ १३ ॥ प्रस्तारके केन्द्र १।४।७।१० भावोंके शकलोंके जितने रेखा हों उनको दूना करके जितने उन चारोंमें बिन्दु हों उन्हें जोडके जो संख्या हो उसमें १६ का भाग देके जो अंक शेष रहे उतने घरमें जो शकल हो उससे छठा अक्षर जानना और १३। १४। १५। १६ घरोंके शून्य जोड़के पूर्वोक्त क्रमसे सातवां अक्षर जानना इसमें यह स्मरण रखना चाहिये कि, यदि वह शकल प्रस्तारमें न हो तो वह शकल विन्दहके जिस घरकी है उतने घर प्रस्तारमें जो शकल हो उससे कार्य करे ऐसी विधि अक्षर निकालनेकी कही है यहां (मात्रा) स्वर उन अक्षरोंके अपनी बुद्धिसे जानने ॥१४॥ १५॥ जिस किसीका नाम एवं मुष्टिगत वस्तुका नाम विद्वानने देश और जातिमें नामोंकी जैसी प्रथा प्रचलित हो ऐसा अपनी बुद्धिसे विचारके कहना ॥ १६ ॥

प्रथमविश्वयुतेरुकलादलंविजदहेदशमं गृहमस्य
च ॥तदनुविस्तरषष्ठगृहाश्रितं तदुभयोन्मुखमण
सकारकम् ॥१७॥ तूर्यशक्रोत्थकंकीशंप्रश्नेतन्नव
मेगृहे॥तिर्यगष्टगृहानंदेप्राप्तंवर्णमकारकम् ॥१८॥

टीका-अब नामाक्षरका उदाहरण कहते हैं कि, प्रस्तारमें पहिले और तेरहवीं शकलको मिलायके उकला शकल हुई इसका घर विजदहमें दशम १० है और यही उक्का प्रस्तारके छठे ६ घरमें है तो अब चक्रमें देखा कि, ऊपरकी सीधी पंक्ति (जो विजदहकी है) के दशमके सीधे नीचे और प्रस्तार क्रमांक जो किनारे हैं उनमेंसे छठे घरके तिर्यक्पंक्तिमें जहाँ इन दोनों अंक कोष्ठोंका मेल होता है तहाँ सकार है यह (स) अक्षरनामका आद्याक्षर जानना ॥ १७ ॥ पुनः उसी प्रस्तारके ४ । १४ शकल मिलायके अंकीश शकलहुई यह प्रश्नके नवम घरमें है विजदहके आठवें घरमें है इन ऊपरके ८ तिर्छे ९ घरोंके सीधेका कोष्ठ जहाँ मिलता है तहाँ (अ) अक्षरहै यह नामका दूसरा अक्षर जानना इसी प्रकार सभी अक्षरोंके उदाहरण जानने ॥ १८ ॥

अधुना प्रश्नवर्णानामानयं प्रोच्यते मया ॥ तन्वा
दिषोडशांत्यस्थैः खण्डैर्वर्णान्समुद्धरेत् ॥ १९ ॥
नवाद्यक्षिगृहे चक्रे पुरावद्धरफं लिखेत् ॥ तस्मिन्
स्वीयालयात्खण्डाज्ज्ञेयं वर्णमिहोक्तवत् ॥२० ॥
प्रश्नेचेत्स्वगृहाभावः पुरः पृष्ठे च यावति ॥ गेहे
त्वनुक्रमात्तावत्पुरः पृष्ठार्णमुन्नयेत् ॥ २१ ॥ एवं
द्व्यब्ध्यष्टिगेहांतखण्डैर्वर्णास्तुषोडश ॥ रचयेद्द
म्लविद्धीरोमात्राश्चापि मनीषया ॥ २२ ॥

टीका-अब अन्य प्रकार नामाक्षर लानेका कहा जाता है कि, एकसे १६ पर्यंत शकलोंसे अक्षर लेने ॥ १९ ॥ सो ऐसा कि ९ । ७ । ६ घरोंमें प्रस्तार चक्रके जो खंड हों उनको हरफाक्रममें गिनना इनमेंसे जो शकल अपने घरकी हो उससे पूर्वोक्त क्रम

करके नामाक्षर जानना ॥ २० ॥ यदि स्वगृही कोई भी न हो उन्हें ९ । ७ । ५ के पहिले और पीछे देखना जहाँ प्रस्तार एवं हर्फाक्रममें स्वगृही हो उसके अनुसार पूर्व वा परेका अक्षर जानना बहुत जगे हो तो उतनेही लेने ॥ २१ ॥ इसी प्रकार २ । ४ वा १६ ही घरोंसे १६ अक्षर लेले नाम रचना रमलजाननेवाले पंडितने करनी उन अक्षरोंमें मात्रा अपनी बुद्धिसे जहाँ जैसी लगती हों युक्तकर लेनी यहाँ देश एवं जाति प्रथासे नाम कहना ॥ २२ ॥

अथ चारस्फुटीकरणम् ।

यदानृपुंजेहरमक्षिगोचरं विधातुमिच्छास्तितदाङ्कुरंकुरु ॥ तथेन्किलावं च विधायचिंतयेज्जमातमत्रास्तिचयद्गृहाश्रितम् ॥ २३ ॥ तस्मिन्गृहे साबितदाखिलेचेत्पूर्वेङ्कुरे चास्तिजनेषु चौरः ॥ नचान्यथैवं नरयुग्मभागे चाद्याद्विधेरत्रहरोविमृश्य ॥ २४ ॥ तच्छेषस्याप्येवमेवयुगभागे च पूर्ववत् ॥ विधिं कुर्य्यात्पुनश्चैवं यावत्स्यादेकसंख्यकम् ॥ २५ ॥ अथेन्किलावेरिगतंजमातद्यंके २ नकीशंनकिचाष्टमांगे ॥ प्रष्टास्तिचौरः स्वयमेव चैवं वाच्यंप्रकारैरिषुभिर्विचिंत्य ॥ २६ ॥

टीका—चोरस्फुटीकरण कहते हैं कि, जब बहुत मनुष्योंके बीच चोर प्रत्यक्षमें है तो उसको प्रकट करनेके लिये प्रस्तार करके उसका इन्किलाव करना इसमें जिस घरमें जमात हो उसी घरमें प्रथम प्रस्तारकेमें साबित दाखिल हो तो उस जन समूहमें चोर है खारिजमुन्कीव हो तो उनमें चोर नहीं है जब चोर उस जनसमूहमें ज्ञात हो तो उन मनुष्योंकी २ पंक्ति करनी पुनः पूर्वोक्त विधि

करके पंक्ति तब ऐसे ही विधिसे एक मनुष्य निश्चय करलेना ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ यदि इनकिलाबके छठे घरमें जमात हो दूसरे वा नवममें अंकीश अष्टममें नकी हो प्रश्न पूछनेवालाही चोर है कहना ऐसे पाँच प्रकारसे चोरका विचार निश्चय करना ॥ २६ ॥

मतांतरम् ।

हुम्रानकीभ्यां च तथा विपश्चिन्निरीक्षयेद्दूरिज
नेषु चौरम् ॥ भागद्वयं तत्र पुनश्च तद्वत्पुरोक्त
रीत्यैकमितं हि यावत् ॥ २७

टीका--अन्यमत कहते हैं कि, प्रस्तारमें यदि हुम्रा और नकी शकल हों तो उक्त जन समुदायमें चोर देखना उन मनुष्योंके दो भाग करके पूर्वोक्त विधिसे एक मनुष्य निश्चय करना ॥ २७ ॥

मतांतरम्

श्रेणीजनानां स्वपुरे निधायक्षिप्ताक्षयुग्मेषु रसा
द्रि खंडे ॥ याचाब्जदोत्थात्रहिसंख्यकास्यात्सा
दक्षहस्तेन जनेषु देया ॥ २८ ॥ यस्मिन्समा
प्तामनुजे सचौरोभूयाग्रिमाच्चेदधिकापुरावत् ॥
तमेव चौरं रमलार्थवेत्तास्फुटं वदेदेवमसंदिहानः२९

इति रमलनवरत्ने अष्टमं रत्नम् ।

टीका-अन्यमत है कि, मनुष्योंकी पंक्ति अपने आगे बैठायके पाशा २ फेंकके प्रस्तार बनावै तब ५ । ६ । ७ भावोंमें जो खण्ड है उनके अबजद क्रममें जो संख्यांकहो उस संख्याको अपने दाहिने हाथसे गिने ॥ २८ ॥ जिसपर वह संख्या समाप्त हो वह चोर जानना यदि मनुष्य थोडेहों अंक संख्या अधिक होतो पुनर्दुबारा पूर्ववत् क्रमसे गिने इस प्रकार निश्चय करके रमलार्थ जाननेवालेने निःसंदेह स्पष्ट कहना ॥ २९ ॥

इति रमलनवरत्नेमाहीधरीभाषायांचौरनामकथनंनामाष्टमंरत्नम् ॥ ८ ॥

अथ वर्षफलसाधनं नवमम् ।

सायनार्कजगेहर्षयुक्तस्वाकृतिःस्वेष्टदेवं च मंत्रं स्मरन् ॥ सप्तधाप्राग्दलेह्नोजगद्वर्षसिद्ध्यैशुचिः पाशकौसुस्थिरात्माबुधःसंक्षिपेत् ॥ १ ॥ सर्वेषां मनुजानां च तद्दिनेचाब्दवेशने ॥ दिनेचान्य दिने शुभ्रे शरदां फलसिद्धये ॥ २ ॥ एवंद्विधा वर्षफलं जगन्मानवयोरिह ॥ तत्रादौ मनुजानां वै फलमाब्दं विरच्यते ॥ ३ ॥

टीका—अत्र नवमरत्नमें वर्षका विचार है कि, सायनमेष संक्रांतिके दिन पूर्वाह्णमें ज्योतिषी स्नानादिसे शुद्ध होके प्रसन्नतासे युक्त अच्छी आकृति (सूरतवावेष) बनायके अपने इष्टदेवता तथा मंत्रको स्मरण करता हुआ मंत्रसे सातवार पाशोंका अभिमंत्रण पूर्वक स्थिर आत्मा करके पट्टीमें फेंके ॥ १ ॥ तब प्रस्तार बनायके उसीवर्ष प्रवेशके दिन संपूर्ण मनुष्योंके शुभाशुभ सुखदुःख देशमें अन्न रोग सुखादि विचारे तथा प्रत्येक मनुष्यके ऐसे विचारके लिये उसीके जन्मदिन (वर्षप्रवेश) में विचारे अन्यभी शुभ दिनमें सालभरके फल सिद्धिके लिये विचारे ॥ २ ॥ इस प्रकार एकतो जगत्का एक प्रत्येक मनुष्यका सालभरका फल दो प्रकार यहाँ विचारना चाहिये इसके प्रथम मनुष्योंका वर्षफलकी रचना करी जातीहै ॥ ३ ॥

प्रथमादिदलैस्तत्र व्ययांतैश्चफलं पृथक् ॥ तनुद्रव्यादिभावानां पुष्टिं हानिं शुभाशुभैः ॥ ४ ॥
अशुभस्याऽपि शकुने स्वालयस्थस्य पुष्टिदम् ॥ फलं ज्ञेयं विशेषेण सबलस्य तथा बुधैः ॥ ५ ॥

खारिजादिभिरत्रापि निर्गमादिफलं भवेत् ॥
पुनरुक्त्यादिखंडानां तन्वादीनां शुभाशुभम् ॥ ६॥

टीका--तहां प्रथम आदिखण्डसे बारहवें भावपर्यंत तनु १ धन २ आदि स्थानोंका विचार शुभसे पुष्टि अशुभसे हानि पृथक् कहना ॥ ४ ॥ जो शकल अशुभ भी है परन्तु शकुन क्रमके स्व गृही होतो उस भावकी पुष्टि देतीहै विशेष करके पंडितोंने बलवान् शकलका फल कहना ॥ ५ ॥ खारिजादि खण्डसे निर्गम (निकलजाना) साबित आदिसे आगम (प्रवेश करना) फल होता है यहाँ आदि पदसे खारिजके समान मुन्कलीव और साबितके समान दाखिल भी जानना जिस भावकी शकल पुनरुक्त हो उसका फल विशेषतर कहना अर्थात् शुभ सकल शुभस्थानमें पुनरुक्त पडी हो तो शुभफल विशेष अशुभ शकल अशुभस्थानमें पुनरुक्त होतो अशुभफल विशेष और मध्यमें मध्यम जैसे अशुभ शकल शुभस्थानमें. शुभशकल अशुभस्थानमें हो यहाँ मध्यमफल होताहै ॥ ६ ॥

अथ योगाः ।

प्रथमपंचमनंदनृपालयैरविकवीज्यदलं सुखकृन्मतम् ॥ तनुधनानुजबंधुसुहन्नृपैः सुखमिहारतमः शनिजैर्नच॥७॥शुभदलैर्युतकेन्द्रमथादिशेत्सपदिसौख्यमाचिंतितवैभवम् ॥ मृतिगृहेगुरुभार्गवखण्डयुक्शुभदमारशनिज्ञदलैर्मृतिः ॥ ८ ॥ यदि च दाखिलमत्रधनायगं शुभमिहोत्सववित्तसुखातिकृत् ॥ रिपुगृहं शनिभौमतमोदलै

युतमिहारिगदांतकरं भवेत् ॥ ९ ॥ सहजगेर विभौमदलेऽनुजसुखामिहैनितमःशकलैर्नशम् ॥ व्ययगृहं शुभखारिजयुक्शुभव्ययकरंत्वशुभैर्युतमन्यथा ॥ १० ॥

टीका–पहिले पांचवें नवमें सोलहवें भावोंमें सूर्य शुक्र बृहस्पतिके शकल होंतो सुखकारी कहे हैं और १।२।६।३।४।१६ इन भावोंमें मंगल, राहु, शनिके खण्ड होंतो सुख नहीं होगा ॥७॥ यदि केन्द्रों १।४।७।१० में शुभ शकल होतो तत्काल सुख एवं विना विचारित ऐश्वर्य होगा कहना यदि अष्टम स्थानमें बृहस्पति शुक्रके शकल होंतो शुभ और मंगल. शनि, बुधके शकल होंतो मृत्युफल कहना॥८॥ यदि २।११ स्थानोंमें दाखिल शकल होतो शुभफल धन सुखको करते हैं छठे स्थानमें शनि मगल राहूके दल होतो शत्रुभय रोगभयका नाश करनेवाला होवें ॥ ९ ॥ यदि तीसरे स्थानमें सूर्य वा मंगलकी शकल होतो भाईका सुख होगा यदि तहाँ शनि राहुके खण्ड होतो शुभ न होवे जो बारहवाँ घर शुभ खारिज शकलसे युक्त होतो शुभकार्यमें और पापखण्ड होतो अशुभ कार्यमें धन खर्च होगा ॥ १० ॥

इत्थं प्रकारैर्बहुभिः प्रयत्नात्समाफलं वाच्यमथान्यदूह्यम् ॥ मासाश्च तत्त्वादिदलैर्विचिन्त्याः श्रेष्ठाःशुभाढ्यैरशुभाश्च पापैः ॥११॥ यन्मासखण्डं यद्गृहे पुनरुक्तं यदा भवेत् ॥ तद्गेहोत्थं फलं तस्मिन्मासे योज्यं विचक्षणैः ॥ १२ ॥

टीका–ऐसे बहुत प्रकारोंसे संवत्सरफल कहना अब और कहते हैं कि, महीनोंके फलके लिये प्रथमादि द्वादशभाव पर्यंत बारह

महीने जानने जिस महीनेका खण्ड शुभ हो उस महीनेमें शुभफल और जिसमें अशुभखण्ड हो उसमें अनिष्टफल विचारना ॥ ११ ॥ जिस महिनेका खण्ड जिस घरमें पुनरुक्त हो उस घर संबंधी फल उस मासमें चतुर मनुष्योंने योजित करना ॥ १२ ॥

मासार्द्धगेहखण्डाभ्यामुत्पन्नं चेच्छुभं दलम् ॥ तदा शुभं च पुनरुक्तेस्थाने क्रमतः फलम् ॥ १३ ॥ मास खण्डं शुभाभ्यां चेदुत्पन्नं स्यात्तदाशुभम् ॥ मध्या भ्यांमध्यमं चैवपापाभ्यां नेष्टमीरितम् ॥ १४ ॥

टीका--मासखण्ड और गृहखण्डसे उत्पन्न यदि शुभ शकल हो तब शुभफल होगा ऐसेही पुनरुक्त स्थानमेंभी क्रमसे फल जानना ॥ १३ ॥ यदि मासखण्ड शुभशकलोंसे उत्पन्न हुआ है तो शुभफल होगा मध्यमोंसे उत्पन्न हुयेमें मध्यम और पापखण्डोंसे उत्पन्न हो तो अनिष्ट (बुराफल) कहा है ॥ १४ ॥

मैत्र्यामासार्द्धतद्गेहतत्त्वयोश्च शुभं भवेत् ॥ मास तत्स्वामियर्द्धे च त्वेवं व्यस्तेविपर्ययः ॥ १५ ॥ पुनरु क्तिगृहेप्येवमूह्यं रमलकोविदैः ॥ पुनरुक्तयर्द्धमासा र्द्धयोगोत्थंशुभमिष्टकृत् ॥ १६ ॥ माससाक्ष्यर्द्धयो मैत्र्यासर्वमेवशुभं भवेत् ॥ अशुभं वैपरीत्ये स्यान्म ध्यमं मध्यमे स्मृतम् ॥ १७ ॥ मासखंडप्रकारेण साक्षिखण्डं विचिंतयेत् ॥ खंडेशितुर्द्वितीयस्य खण्ड स्याप्येवमेव च ॥ १८ ॥ विधिं कुर्यात्पुरोक्तं तु फलंते नोक्तवद्वदेत् ॥ खंडस्थविपरीतं यत् खंडंतस्यांगसंभ

वस्रा१९।तस्यापि पूर्ववत्सर्वसाक्षिरीत्याफलं वदेत्॥
एवं खंडैश्चतुर्भिस्तु फलंमासे विचिंतयेत् ॥ २० ॥

टीका-यदि मासखण्डोंकी और तत्वोंकी परस्पर मैत्री हो तो शुभफल उस मासका होगा जानना ऐसेही मासखण्ड और उसके स्वामीके शकलोंके मित्रताभी शुभफल होता हैं मित्रता उनके परस्पर न हो उत शत्रुता होतो अनिष्टफल जानना ॥ १९ ऐसेही रमल जानने वालोंने पुनरुक्त घरोंके मित्रता शत्रुतासे फल कहना। पुनरुक्तिखण्ड मासखण्डक परस्पर मेलसे जो शुभ शकल हो तो शुभफल अशुभसे अशुभफल करता है ॥ १६ ॥ मासखण्ड और साक्षिखण्डकी मैत्रीसे सभी शुभफल होता है विपरीत (शत्रुता) होनेमें अशुभफल और मध्यमें मध्यम होता है ॥ १७ ॥ मासखण्डके तरह साक्षिखण्डभी जानना खण्डके स्वामीका और दूसरे खण्डकी भी इसी प्रकार पूर्वोक्त विधि करनी तब उसके अनुसार उक्तफल कहना ॥ १८ ॥ १९ ॥ इसकाभी पहिले साक्षिके रीतिसे फल कहना इस प्रकार उक्त चार खण्डोंसें महीनेमें फल जानना२०

अथात्र वक्ष्ये विधिवद्दशासूक्ष्मदशा अपि ॥ साद
शासाबिताधीनातस्मादादौतुसाबितम् ॥ २१ ॥
कर्तव्यं तद्विधिं वक्ष्ये पूर्वशास्त्रानुसारतः ॥ प्रस्ता
रात्पाशकोद्भूताद्विश्वकर्मायशक्रकैः ॥ २२ ॥ दलै
श्चतुर्भिःप्रस्तारं पूर्ववद्रचयेत्सुधीः॥ सदृशौतनुविश्वौ
चेद्वाद्विखेआयेऽब्धिशक्रके ॥ २३ ॥ तदातत्सा
बितं ज्ञेयं प्रस्तारं त्वीदृशं बुधैः ॥ नचेद्यदापुनस्त
स्माद्विश्वादिकचतुष्टयात् ॥ २४ ॥ प्रस्तारं पूर्व

वत्कृत्वा तत्र तच्च विलोकयेत् ॥ एवं पुनःपुनः कुर्या
द्यावन्न स्याच्च साबितम् ॥ २५ ॥

टीका–अब यहाँ विधिपूर्वक दशा और सूक्ष्मदशा भी कहताहूं कि वह दशा साबितके आधीन है. इसवास्ते प्रथम साबित करना चाहिये इसकी विधि पूर्वशास्त्रानुसार कहताहूं कि पाशा फेंकनेसे जो प्रस्तार, बना उसके १३।१०।११।१४ खण्डोंको प्रथम आदि ४ स्थानोंमें स्थापन करके प्रस्तार बनाना उसमें पहिलेके समान तेरहवाँ और दूसरेके तुल्य दशम तीसरेके सदृश ग्यारहवाँ और चौथेके समान चौदहवाँ होतो वह प्रस्तार पंडितोंने साबित जानना साबितका यही लक्षण है यदि प्रथम प्रस्तारमें साबित न होतो फिर उसी प्रस्तारके १३।१४।१५।१६ खण्डोंको प्रथम आदि ४ स्थानोंमें स्थापन करके फिर प्रस्तार बनावै उसमें साबित मिलेगा इसमेंभी न मिले तो १३।१४।१५।१६ से प्रस्तार बनावे जब तक साबित न मिले तब तक ऐहीसी विधि करतारहे॥२१–२५॥

षष्ठादूर्ध्वं न तद्याति साबितं रसमध्यगम् ॥ एका
द्येसुखसंपत्तीलाभं सौख्यं च मध्यमम् ॥ २६ ॥
कष्टं मृत्युश्च विज्ञेयो रसांते साबिते क्रमात् ॥
साबितक्रममेतद्धि विज्ञेयं सर्वदा बुधैः ॥ २७ ॥

टीका–इस प्रकार विधि करनेमें छःके भीतर अवश्य साबित आ जाता है छःसे ऊपर प्रस्तार साबित लानेमें नहीं करने पडते इस लिये छवोंके फल कहतेहैं कि, प्रथम प्रस्तारमें साबित आवे तो सुख संपत्ति होती है दूसरेमें आवे तो लाभ होवे तीसरेमें आवे तोसुख चौथेमें आवे तो मध्यम फल पांचवेंमें आवे तो कष्ट मिले और छठेमें आवे तो मृत्यु जाननी ऐसे क्रमसे छः पर्यंत साबितके फल हैं ऐसा साबितक्रम पंडितोंने सर्वदा जानना ॥ २६ ॥ २७ ॥

स्थिरप्रस्तारसंख्येन भजेद्वर्षमितिं दिनैः॥ प्रस्ता
राणां दशालब्धा क्रमतः परिकीर्तिता ॥ २८ ॥
सादशारविभक्तास्याल्लब्धासूक्ष्मदशाख्यका ॥
फलंत्वेकैकशकले सूक्ष्मभुक्त्यनुसारतः ॥ २९ ॥
पूर्वोक्तविधिना ज्ञेयं मासखण्डोक्तवर्त्मना ॥
साबिताद्येथप्रस्तारेदशात्वाद्याफलप्रदा ॥ ३० ॥
एवं ह्याद्यादिके ज्ञेया द्वितीयाद्यादशाबुधैः ॥
एवं दशाफलं वाच्यं पुनरन्यद्विधिं ब्रुवे ॥ ३१ ॥

टीका–स्थिर प्रस्तार (जिसमें साबित पायाहै) के संख्यासे वर्ष मिती ३६० दिनोंमें भागदेना लब्धांकको साबित प्रस्तारकी दशा मानना ॥२८॥ उस दशामें १२ का भाग देनेसे सूक्ष्म दशा होती है तब प्रत्येक शकलके सूक्ष्म दशाके अनुसार पूर्वोक्त क्रमकरके कहै ॥२९॥ जिस महीनेका जो खण्डहै उसके अनुसार उस महिनेमें फल कहना पहिले प्रस्तारमें साबित आवे तो पहिली दशाका दूसरेमें दूसरीका ऐसे क्रमसे फल जानना इसका उदाहरणहै कि, जैसे चौथे प्रस्तारमें साबित आयाहो तो ४ से वर्ष संमिति३६०दिनोंमें भाग लिया लब्ध ९० भये प्रत्येक प्रस्तारमें ९० । ९० दिन आये ऐसे ४ विभागोंमें वर्षभरका फल कहना ॥ अंतर्दशाके लिये विधि है कि, उक्त ९० दिनकी दशामें १२ का भागदेनेसे ७ दिन ३० घटीकी एकएक अंतर्दशा भई एक एक शकलोंमें ७ दिन३० घटीका फल कहना ऐसे प्रथम प्रस्तारसे पहिले ९० दिनका दूसरेसे दूसरे ९० का तीसरेसे तीसरे और चौथेसे चौथे ९० का कहना ऐसेही जितनी संख्यापर३६० में भागदिया हो उतनेही दशाओंका फल कहना छः अधिक संख्या यहाँ नहीं होती इस रमलमतमें वर्षप्रवेश

मेष सङ्क्रांतिसे माना जाताहै वर्षभी सभी उसी संक्रांतिसे जानना यह दशाफल कहा अब फिर और विधि कही जाती है॥३०।३१॥

मासखण्डदशार्धाभ्यामुत्पन्नं स्यात्फलाह्वयम् ॥
तस्मात्सूक्ष्मदशायां तु फलं ज्ञेयं विचक्षणैः॥३२
तच्चेच्छुभं शुभे गेहे पुनरुक्तं सवीर्यकम् ॥ तदा
फलं शुभं वाच्यमशुभं त्वन्यथा भवेत्॥ ३३ ॥
फलं गेहानुसारेण देहवित्ताद्यनुक्रमात् ॥ खा
रिजादिप्रभेदैस्तु निर्गमादिवदेद्बुधः ॥ ३४ ॥

टीका--मासखण्ड दशाखण्ड जो शकल उत्पन हो उसे फलाह्वय कहतेहैं उसके अनुसार सूक्ष्मदशाका फल चतुर ज्योतिषियोंने जानना जैसे पहिले प्रथममासके पाशकोत्थ प्रस्तारमें कोईसी शकल हो तहाँ अंतर्दशा देखनी हो तो पहिले साबितकी शकल देखे उहाँ जो शकलहों उन्हें एककरे तब शुभाशुभ जैसी वह शकल बनी हो वैसा फल कहै ॥ ३२ ॥ वह शकल शुभ हो तथा शुभ घरमें पुनरुक्तहो बलवान हो तो शुभफल कहना अशुभहो अशुभ घरमें हो बलहीन हो तो अशुभ फल कहना ॥ ३३ ॥ तन धन आदि पूर्वोक्त भाव विचारके अनुसार शरीर १ धन २ आदि क्रमसे फल कहना खारिज आदि भेदोंसे निर्गमादि कहना जैसे खारिज हो तो घटना दाखिल हो तो बढना ऐसा संपूर्ण विचारके प्रत्येक फल पंडितने कहने ॥ ३२--३४ ॥

अथाब्देशप्रकारः ।

इदानीं सर्वजंतूनां चमत्कृतिकरंपरम् ॥ विधिं
च वक्ष्ये येनाऽब्दे फलं सर्वं स्फुटं भवेत् ॥३५॥
प्रस्तारे साविताख्ये तु तनुविश्वौ श्रुतीन्द्रकौ ॥

तिथिशैलौ दशाष्टौच हत्वा कृत्वाब्धिखण्डकम्
॥ ३६ ॥ चतुर्भ्यां द्वे तथा द्वाभ्यामेकं स्याद्वर्ष
पश्चसः॥तस्य पूर्वोक्तमार्गेण फलं ब्रूयाद्विचक्षणः
॥३७। खारिजादिभिरस्यैवभेदैर्वागमनादिकम्॥
पुनरुक्त्यापि तस्यैव तत्तद्भेदान् वदेद्बुधः ॥ ३८ ॥

टीका—अब यहाँ समस्त जीवोंको परम चमत्कार करनेवाली विधि कहताहूं जिससे वर्षमें फल स्पष्ट होजाता है ॥ सावित नाम प्रस्तारमें १। १२। तथा ४। १४ तथा १५। ७ और १०।८ भावोंके शकलोंको हनन करके ४ शकल करने ॥ इन ४ सेभी दो फिर दो से भी एक बनायके जो आवै वह वर्षेश होता है इसके पूर्वोक्त मार्गसे चतुर ज्योतिषी फल कहे ॥ इसके खारिज आदि भेदोंसे अथवा गमनादि भेदोंसे और पुनरुक्ति करके भी विद्वान् उन उन भेदोंको कहे ॥ ३५–३८ ॥

अथ मासप्रकारः।

यदि मासफलानीह ज्ञातुमिच्छा भवेत्तदा ॥
साबितप्रस्तरोद्भूतैः पुरोक्तैर्वेदखण्डकैः ॥३९ ॥
कुर्य्यात्प्रस्तारमस्मात्तु पूर्वोक्तादिदलैर्बुधः ॥
कृत्वाद्वे चैतयोरेकं यत्तत्स्यादाद्यमासिकम्।४०।
अनेनादिममासेतुपूर्ववत्कथयेत्फलम् ॥ आद्य
मासोद्भवैर्वेदखण्डकैश्च पुनस्तथा ॥ ४१॥ द्विती
यमासप्रस्तारस्तस्मात्तद्वत्तृतीयके । एवं पुनः
पुनः कुर्य्याद्यावन्मासाश्च द्वादश ॥४२॥ तेभ्यः
फलं च मासानां पूर्वोक्तं प्रवदेत्सुधीः ॥ ४३ ॥

टीका—अब मासेश प्रकार कहते हैं कि यदि मासफल जाननेकी यहां इच्छा हो तो सावित प्रस्तारके पूर्वोक्त १। १२। ४। १४।

१५ । ७ । १० । ८ खंडोंसे प्रस्तार बनावै इस प्रस्तारके पूर्वोक्त ४ दलोंसे क्रमशः एक शकल लेवै उससे पूर्वोक्त विधि करके प्रथम मासका फल कहे ऐसेही प्रथममास प्रस्तारके ४ खंडोंसे पुनः दूसरे महीनेका प्रस्तार बनावै इससे भी उसी विधि करके तीसरा तीसरेसे चौथा ऐसे फिर फिर करके बारह महीनाके १, २ प्रस्तार बनावे उनसे पूर्वोक्त खारिजादि क्रम करके मास फल पंडित कहै ॥ ३९-४३ ॥

दिने फलेच्छुः प्रथमाच्च मासात्पूर्वोदितैर्वेददलैः प्रकुर्यात् ॥ प्रस्तारकं त्वाद्यदिनस्य तत्स्यात्तस्माते पुराद्बुद्धितयस्य मासः ॥ ४४ ॥ तस्मात्तृतीयस्य पुरोक्तमेवं भूयोऽपि यावद्गगनत्रिसंख्यम् ॥ मासेषु तेभ्योऽब्धिदलैर्द्विखण्डे ताभ्यामथैकं पुनरेषु कार्यम् ॥ ४५ ॥ तत्तन्मासेष्वनेनैव खण्डेन फलमीर्यते ॥ एवं द्वादशमासेषु खण्डानां चिन्तयेत्फलम् ॥ ४६ ॥

टीका-मासफलसे उपरांत दिन फल चाहनेवाला पूर्वोक्त ४ खंडोंसे प्रस्तार बनावे प्रथम दिनका होगा उससे तीसरेका तीसरेसे चौथेका क्रमसे दिनेश खण्ड निकाले जैसे एक महीनेसे दूसरा उससे तीसरा इत्यादि पहिले कहा है इसी प्रकार प्रत्येक दिनकीभी विधि करनी जबतक ३० दिन स्पष्ट होते हैं तबतक वही विधि करता रहे जो प्रस्तार आया है उसके पूर्वोक्त खण्डों४ से दो, फिर एक करना ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ऐसा करनेसे उन महीनोंमें मासफल दिनखण्डोंसे दिनफल पूर्वोक्त खारिजादि भेदोंसे विचारके कहना ऐसे १२ महीनोंके फल वर्षमें विचारने ॥ ४६ ॥

अथ जगद्वर्षसाधनम् ।

यदाविश्वफलं वक्तुं रम्लवित्कुरुते मनः ॥ तदा पूर्वोदिते काले संक्षिपेत्पाशको सुधीः ॥ ४७ ॥ कुर्यात्पूर्वविधिं तत्र रम्लविद्वर्षपावधि ॥ विधायवर्षपं तेन वक्ष्यमाणं फलं वदेत् ॥ ४८ ॥

टीका--अब सारे संसारका वर्ष साधन कहते हैं कि, जब दुनियांका शुभाशुभ फल सालभरके कहनेकी इच्छा रम्लज्ञकी हो तो पूर्वोक्त मेष संक्रांतिके दिन पंडितने पासा फेंकना ॥४७॥ तिससे पूर्वोक्त विधि ४ शकलोंसे उक्त क्रमसे एक शकल निकालके साल भरका फल जो आगे कहा जाता है कहना ॥ ४८ ॥

अथ वर्षपति खण्डानां फलानि ।

लह्यानं ☰ यदि तद्दलङ्क्रशालिनः सर्वे नितांतं जनाः स्वाचाराः शुभकर्मिणःप्रतिदिनं कृष्यन्नवृद्धिर्मुहुः ॥ ईतेः स्वल्पभयेऽपि भूः सुखवती वेदांघ्रिदासोद्भवं किंचित्कष्टमिहैशदिग्जनपदेष्वेतत्फलं कूर्मतः ॥४९॥ खण्डंकब्जुलदाखिलं ☲ च बहुधा व्यापारलाभो नृणां पुण्यार्द्धिस्तरुजामृतोपमफलानां भक्षणं स्वस्करम् ॥ भूपानीतिरताः प्रजावनरताःस्वस्थं जगन्निर्भयं वृद्धिश्चोत्तमवस्तुनः फलमिदं प्राच्यां भवेत्कूर्मतः ॥ ५० ॥

टीका--वर्षेश शकलोंके प्रत्येक फल कहते हैं कि यदि लह्यान शकल वर्षेश हो तो सभी मनुष्य निरंतर सुखी रहेंगे अपने अपने आचारोंमें तत्पर रहेंगे शुभकर्ममें प्रवृत्त रहेंगे. वारंवार प्रतिदिन खेती एवं अन्नकी वृद्धि होती रहेगी अतिवृष्टि अनावृष्टि प्रभृति

सात ईतियोंका स्वल्प भय होगा तौभी पृथ्वी सुखी रहेगी. चौपाये और दासजनोंको थोडा कष्ट होगा, (कूर्म) पृथ्वीके बीचसे ईशानदिशाके देशमें यह फलविशेष जानना, कूर्म यहां चक्र जानना तिस कूर्म चक्रसे दिशा साधन करना ॥ ४९ ॥ कब्जुल दाखिल शकल ∴ में मनुष्योंको व्यापारमें लाभ बहुत होवे पुण्य बढे वृक्षके अमृतसमान फलोंका भक्षण करना मिले श्रेय होवे राजा न्यायमें तथा प्रजाके पालनमें तत्पर रहैं संसारमें स्वास्थ्यता एवं निर्भय रहे उत्तम वस्तुकी वृद्धि होवे यह फल कूर्म चक्रके पूर्व दिशामें जानना ५०

कब्जुलखारिजकं ∴ यदा च जनता चोद्विग्नचित्ताभृशं ग्रीष्मोष्णत्वमनीतिवर्तिकुभुजोवृष्टिर्भवेद्भूयसी ॥ नीचस्तेयविषाग्निदंशककृतं चास्वास्थ्यमंहोमिथोवार्तांतश्च मृतिर्नृणां कमठतो नैर्ऋत्यदेशे फलम् ॥ ५१ ॥ जमात ☰ मिहतद्धवेद्बहुपदार्थं वृद्धिर्नृणां सुनीतिसुखयुग्जनाकफरुजोत्थपीडा क्वचित् ॥ धराभवतिभूरुहाः सुफलपुष्पपत्रांकुरास्तथोत्तरगतंफलंकमठतश्च पाश्चात्यगम्॥ ५२ ॥

टीका–कब्जुल खारिज शकल ∴ हो तो संसारमें सब मनुष्योंके चित्त उद्विग्न विशेष करके रहैं ग्रीष्मऋतुमें गर्मी ज्यादा पडे राजा अन्यायमें प्रवृत्त रहैं वर्षा बहुत होवै नीचजन, चोरी, विष, अग्नि, डसनेवाले जानवर इनसे (दुःख) अस्वास्थ्य रहै परस्पर बुराई करते रहैं मृत्युसमाचार बहुत मिलें यह फल कूर्मचक्रके नैर्ऋत्य दिशामें जानना ॥ ५१ ॥ जमात ☰ शकलका फल है कि, बहुतसे पदार्थोंकी वृद्धि होवे मनुष्योंकीभी वृद्धि होवे मनुष्य अच्छी नीति एवं सुखसे युक्त रहें कहीं कफ रोगसे पीडा होवे

पृथ्वी, वृक्ष, उत्तम फल, पुष्प, अंकुरोंसे युक्त रहै यह फल कूर्मच-क्रके उत्तर और पश्चिम दिशामें जानना ॥ ५२ ॥

स्याच्चेत्तत्फरहा ⩴ प्रजासुखसुतोत्पत्तिर्महर्घान्तरं ह्यन्नादेश्च समर्घमर्थनिचयः शश्वत्क्षितौ मङ्गलम् ॥ कार्यादभ्रनृपाः सुवृष्टिरतुलापारीक्षजारर्द्धयः काबुल रोमकमिश्रकेषु कमठात्स्यात्पश्चिमेऽदः फलम् ॥ ५३ ॥ जनातंकानल्पांतनुसलिलवर्षातिपवनं महर्घोद्वेगोवाभृतककुहकानीतिनृपतिः ॥ तथा मध्येदेशे विपुलबलिनो भूमिपतयो यदोक्काख्यं ⩴ मध्ये कमठपरतो भूमिचलनम् ॥ ५४ ॥

टीका-वर्षेश फरहा ⩴ हो तो प्रजा सुखी रहे पुत्र पैदा हों भाव बदले अन्नादि मंद बिकें धनसंचय होवे वारंवार दुनियामें मंगल हों राजा बहुतसे उद्यम शुभ कार्यकरें अच्छी वृद्धि होवे रत्नादिकोंके परीक्षक (जोहरी) एवं (जार) परस्त्रीगंताओंकी वृद्धि होवे काबुल, रूम मिश्र देशों तथा कूर्मचक्रके पश्चिमदिशामें यह फल विशेष जानना ॥ ५३ ॥ उक्का ⩴ शकल होतो मनुष्योंको बहुत क्लेशमिले पानी कम बर्षे वायु अधिकचले अन्नादिकोंका भाव तेज होवे अथवा मनुष्योंको उद्वेग रहे रोग रहे दास गुलाम आदिकोंसे उपद्रवहों राजा अन्याय करे मध्य देशके राजा बलवान् रहें और भूकंप होवे यह फल कूर्म चक्रके मध्यम देशमें जानना ॥ ५४ ॥

अंकीशं ⩴ स्वल्पवृष्टिर्विफलघनचयोरोगवृद्धि र्नराणां काठिन्यं कार्यसिद्धावरिजनवशगोद्विग्न चित्ता नृपाः स्युः ॥ स्यादन्नं वै महर्घं कुमतिजन सुखं श्रेष्ठपुंसां क्षयः स्यादेतत्कूर्मात्प्रतीच्यां फलमखिलमतश्चान्यदेशेल्पकं स्यात् ॥ ५५ ॥

हुम्रा ≡ स्यात्स्वल्पवृष्टिर्द्रविणचयहरोनिर्णय
श्चौरचारो धैर्याभावः प्रचण्डानिलगतिरवनीशाः
कुमार्गा नृमृत्युः ॥दुःसाध्यं कर्मपुंभिस्तरुषु फल
चयोर्थाप्तिहर्षौनृणां च कारूका हर्षयुक्ता दहन
दिशि फलं कूर्मतो मध्यमेऽपि ॥ ५६ ॥

टीका—अंकीश ≡ शकल आवे तो वर्षा कम होवे मेघ बहुत घिरे रहें परंतु व्यर्थ जावें मनुष्योंको रोग वृद्धि होवे कार्य्य सिद्धिमें कठिनाई पडे राजालोग शत्रुजनोंके वशमें होकर उद्विग्नचित्त रहें अन्नका भाव तेज होवे दुर्बुद्धिवाले मनुष्योंको सुख मिले श्रेष्ठ मनुष्योंका क्षय होवे यह संपूर्ण फल कूर्म चक्रके पूर्वदेशमें विशेष अन्य देशोंमें थोडा होवेहै ॥ ५५ ॥ हुम्रा ≡ शकल होतो वर्षा अल्प होवे जगे जगे चोरीके अनुसंधान होते रहैं चोर निर्भय होके फिरें ॥ धैर्य सभीका जातारहे वायु अति कठोर चले राजा कुमार्गमें चलें मनुष्य बहुत मरें कार्य करना पुरुषोंको कठिन होजावे॥ वृक्षोंमें फल बहुत लगें और मनुष्योंको धनकी प्राप्ति एवं हर्षभी होवे (कारु) शिल्पज्ञ राज-बढई आदि खुशरहें यह फल कूर्म चक्रके आग्नेयदिशा तथा मध्य देशमें भी जानना ॥ ५६ ॥

स्यात्खण्डं तद्वयाजं ≡ प्रवसितमनुजाः सिद्ध
कार्य्या मुदाढचा द्रव्यांधोनीतिविद्याभ्यसनतारि
जला जीविनां शश्वदाद्धिः॥मिष्टान्नानां च भोज्यं
प्रमुदितनरपाश्चातिवृष्टिर्जनोयं सौख्याढचः
संततं स्यात्फलमितिगदितं कूर्मतो वायवीये ॥५७॥

टीका—ब्याज ≡ होतो परदेश गये मनुष्योंके कार्य सिद्ध होवें और खुशरहें तथा धनके ब्याज खानेवाले (साहूकार) नीति विद्याके अभ्यासी और नाव जहाज आदि जल कर्मसे आजीवन

करनेवाले इतनोंको वारंवार समृद्धि मिलती रहे मीठे अन्नोंके पदार्थ भोजनको मिलें राजा प्रसन्न रहे वर्षा बहुत होवे मनुष्य सुख युक्त बराबर रहें फल कूर्मचक्रके वायव्य दिशामें जानना ॥ ९७ ॥

नुस्रुत्खारिजकं यदा नृपकृतं दण्डं च तज्जं भयं
वृष्टयल्पाहरहर्षचण्डपवनातंकर्द्धि वित्तक्षयम् ॥
मध्यान्धो बलिपूर्वभूपसलिलांतर्मग्नभूयस्तरीसा
मर्कंदनिशारवोखरगतं स्यात् कूर्मतः प्रागिदम्
॥ ९८॥ नुस्रद्दाखिलमन्नलोकसुखसंपत्त्यंबुवृष्टय
र्द्धयोवृक्षेष्विष्टफलर्द्धि सस्यविभवाभीत्युग्रावित्त
र्द्धयः॥धर्मर्द्धिर्जनतासुनीतिरवनीपालेषु सर्वत्रशं
तुर्किस्तानानिशारवोखरगतं ज्ञेयं च कूर्मोत्तरे॥९९॥

टीका–नुस्रुत्खारिज ☴ से राजासे दंड पडे राजासे भय होवे-वर्षा थोडी होवे चोर खुशरहें वायु कठोर चले रोग बढे धननाश होवे मध्यदेश एवं पूर्व देशके राजा बलवान् होवें नाव जहाज बहुधा जलमें डूबें समर कन्द, बुखारा, नैशारपुर और कूर्म चक्रके पूर्वदिशामें यह फल पूर्ण जानना ॥ ९८ ॥ नुस्रद्दाखिल शकल हो तो अन्नका सुख होवे लोक सुखी रहें संपत्ति बढे जलकी वृद्धि होवे वृक्षोंमें मनमानते फल संपत्ति होवें अन्न बहुत होवे मनुष्य निर्भय रहें उग्र कर्मोंसे वित्तसमृद्धि होवे धर्म बढे मनुष्योंकी वृद्धि होवे राजाओंमें नीति अच्छी रहे, सर्वत्र (शुभ) मंगल होवे तुर्किस्तान निशारव, समरकंद, इन देशोंमें यह फल विशेष तथा कूर्म चक्रके उत्तरमें जानना ॥ ९९ ॥

खण्डं चातवखारिजं खरतरो वातोरुजश्चोष्णजाः
शीतोष्णाधिकतातथाल्पविभवो लोकेल्पवृष्टिः

कुवाक्॥ कैङ्कर्य्याफलभूपकोपमलिनाश्चोपद्रुताः स्युः प्रजा मज्जन्तीतनुतोयकूपहरिभीत्याद्यं च कूर्मान्तरे ॥ ६० ॥ वृष्टिः स्वल्पतरानकीयदिभ वेहीर्घाः स्वनोविद्युतां पातोन्नादिमहर्घतावधकरी चौरादिभीतिस्तथा॥ नैराश्यंनृपशत्रुवृद्धिजनता ऽस्वास्थ्यंतथोद्विग्नतातुर्कस्तानसुजंगवालगफलं कूर्माङ्गतश्चोत्तरे ॥ ६१ ॥

टीका—अतवेखारिज शकल ⁘ हो तो प्रचंडवायु चलै गर्मीसे रोग पैदा होवै शीत तथा गर्मीकी अधिकता रहे लोगोंका ऐश्वर्य कमरहे, वर्षा कम होवे दुर्वचनता बढै सेवा निष्फल होवै प्रजा राजकोपसे मलिन एवं भयभीत रहे जल थोडेहों तालाव कूप आदियोंमें वस्तु डूबें सर्प आदियोंका भय होवे यह फल कूर्म चक्रके मध्य देशमें जानना॥६०॥नकी ⁘ शकल हो तो वर्षा अल्प होवे मेघोंके बड़े शब्द होवें बिजली बहुधा गिरै अन्न भाव तेजहोवे डाकू चोर आदियोंका भय होवे निराशता होवे राजाओंके शत्रुबढें मनुष्योंका स्वास्थ्य अच्छा न रहे उद्विग्नता रहे तुर्कस्तान एवं जंगवाल देशमें और कूर्म चक्रके उत्तरमें यह फल विशेष होगा ॥ ६१ ॥

भवेदतवदाखिल ⁘ जनमुदोतिभव्यानृपामही जलपरिप्लुतोद्वहनवित्तधान्यर्द्धयः ॥ सुधोपम फलर्द्धियुक्ततरुलतातिवर्षं फलं प्रतीचिदिशि- कूर्म तो रुमककेचशामे भवेत् ॥६२॥ रत्नामात्य सुगंधिलेखकजनानां हर्षवृद्धिः क्षितौ स्वामित्वं च नृपेषु सेवकजनाः कष्टंभुजाश्चानिशम् ॥स्या देतहलमिज्तमाख्य ⁘ मवनीसत्कर्मलाभा

न्विता भूपास्तत्फलमुत्तरेतुबहुलंकूर्मात्तथापश्चि
मे ॥ ६३ ॥ तरीक ⁝ मिहतद्दलं ह्यतुलवृष्टिवायू
पुरोजनाः कलुषकर्मिणः पिशुनदूतमिथ्यागिरः॥
प्रभूतविभवावणिग्बहुविवृद्धिभूमिभ्रमः फलंत्व
निलदिग्दले भवति कूर्मतश्चोत्तरे ॥ ६४ ॥

टीका-अतवेदाखिल ⁝ शकल होतो मनुष्य खुश रहें राजा ऐश्वर्य वृद्धि पावें पृथ्वी जलसे भीगी रहे अर्थात् वर्षा उत्तम होवे तथा फल धन धान्यकी समृद्धि रहे वृक्ष एवं लता अमृत समान फल समृद्धिसे युक्त रहें यह फल विशेषतः कूर्मचक्रके पूर्वदिशा और रूम देश एवं शामदेशमें जानना ॥ ६२ ॥ इज्तमा ⁝ शकलसे रत्न (अमात्य) वजीर लोग सुगंधि वस्तु लिखनेसे आजीवन करनेवाले इतने वृद्धिको प्राप्त पृथ्वीमें होंवे राजाओंमें स्वामित्व बढे सेवक जन नित्य कष्ट भोगें पृथ्वीमें शुभ कार्य होवें जिनका लाभ राजे लोग उठावें यह फल कूर्म चक्रके उत्तर तथा पश्चिम दिशामें विशेष जानना ॥ ६३ ॥ तरीक ⁝ शकल हो तो वर्षा तथा वायु बहुत होवे पुरोंके मनुष्य पापकर्मी चोर होंवे दूत जन झूठ बोलें व्यापारी लोगोंका ऐश्वर्य बढे बहुत वृद्धि होवे पृथ्वी कांपे यह फल आग्नेय तथा उत्तर दिशाकूर्म चक्रमें विशेष जानना ॥ ६४ ॥

प्रोक्तं मयैतत्फलमङ्कपस्य रम्ले नृणां चापि वदेत्
स्वबुद्ध्या॥यदस्त्यशुद्धं च विगर्हितार्थं तद्वागमु
त्सृज्य बुधैः सुशोध्यम्॥६५॥ न पदच्छेदपदार्थ
विग्रहार्थान्वयसद्भावनिरुक्त्यलंकृतीश्च ॥ परिवे
द्मि तथापि मेशिशुत्वमार्य्याः प्रीतिपराः सदा
क्षमध्वम् ॥ ६६ ॥ रम्लांबुधेः सारमिहार्यवर्य्यै

गृहीतमस्यापि च सारसारम् ॥ कृतं मयैतन्नवर
त्नसंज्ञंप्राज्ञैः सयत्नैः सततं विचिन्त्यम् ॥६७॥

टिका–ग्रंथकर्ताकी उक्ति है कि,मैंने यह वर्षेशका फल कहा, इस रम्लशास्त्रमें मनुष्योंको अपनी बुद्धिसेभी विचारके युक्तिसे कहना इस ग्रंथमें जो अशुद्धिहो तथा निन्द्य अर्थ हो वह पंडितोंने राग अमर्ष छोड़के संशोधन करना ॥६५॥ मैं पदच्छेद, पदार्थ समास व्युत्पत्ति, सद्भाव, निरुक्ति अलंकारभी कुछ नहीं जानताहूँ तौभी मेरी बाल्यताको श्रेष्ठजन सर्वदा क्षमा करें॥६६॥यह ग्रंथ रम्लरूपी समुद्रका सार मैंने किया है इसमें बडे शास्त्रोंसे सारकाभी सार लेके नवरत्न संज्ञक किया है इसे बुद्धिमान् यत्नसे वारंवार विचारें ६७॥

ग्रन्थकर्तृवंशवर्णनम् ।

आस्ते यद्व्रजभूककुद्धरिपदे ध्यानावधूतांहसो
यस्मिन्नंदसुतं स्मरंति सुधियो वृंदावनं सद्मनम्॥
आसीत्कुञ्जविहारि–सेवनरतस्तत्रावनीशार्चितो
गोस्वामीललिताप्रसादविलसन्नाम्नासतांमण्डनः
॥ ६८ ॥ यस्तस्यात्मजताऽमियाथभगवद्भक्तो
मदन्मोहनःसोवात्सीत्किल नारनौलनगरे काय
स्थवृन्दार्चितः ॥ तत्सूनुर्मतिमान् बुधार्चितपदो
ज्योतिर्विदां भास्करो विद्यासक्तमनास्त्रयीधु
तमलःश्रीचंद्रलालोऽभवत् ॥६९ ॥ तत्पुत्रेष्ववर
श्चषट्सुवयसासंपद्गुणश्चाऽसमः शब्दाऽलंकृति
काव्यसज्ज्ञविलसच्चेताःसतां सेवकः ॥सोऽयं संप्र
तियाचितोद्विजवरैः श्रीरङ्गलालः कृतीसद्वृत्तै
र्नवरत्नमेतदमलंसत्प्रीतये संव्यधात् ॥ ७० ॥

नागाग्निनन्देंदुमितेऽब्दवृन्दे माघे सितेऽनङ्गतिथौ सभौमे ॥ संपूर्तिमाप्तं नवरत्नरम्लं विद्वज्जनास्तं सततं विभातु ॥ ७१ ॥

इति रमलनवरत्ने वर्षफलवर्णनं नाम नवमं रत्नम् ॥ ९ ॥

टीका--जो ब्रज भूमि पृथ्वीकी गर्दन है, जहांके निवासी श्रीकृष्णके चरणारविंदोंके ध्यानसे निष्पाप रहते हैं जिसमें नन्दसुत श्रीकृष्णको सद्बुद्धिवाले स्मरण करते रहते हैं जहां वनोंमें सुंदर वन वृन्दावनहै तहा कुंजविहारी श्रीकृष्णकी सेवामें तत्पर तत्रत्य राजासे सुपूजित सज्जनोंको शोभा देनेवाला ललिताप्रसाद नाम करके विख्यात हुआ ॥ ६८ ॥ जिसका पुत्र भगवानका भक्त जो मदनमोहन भया वह नारनौल नगरमें निवास करता भया तहाँ कायस्थ समूहसे पूजित रहा तिसका पुत्र बुद्धिमान् पंडितोंके पूजितहैं चरण जिससे तथा ज्योतिषियोंमें सूर्य विद्यामें आसक्त मन तीन वेदों करके निर्मल श्रीचन्द्रलाल हुआ ॥ ६९ ॥ तिन छः पुत्रोंमें छोटा कम उमरवाला जो संपत्ति एवं गुणोंमें समान नहीं था तथापि शब्द, अलंकार, काव्योंसे सजा है चित्त जिसका और सज्जनोंका सेवक रहा यहां इस समय ब्राह्मणश्रेष्ठोंके प्रार्थना करनेसे वह रंगलालपंडित सुंदर श्लोकोंकरके निर्मल इस नवरत्नको सज्जनोंके प्रीत्यर्थ रचता भया ॥ ७० ॥ विक्रम संवत् १९३८ माघ शुक्ल त्रयोदशी मंगलवारको यह नवरत्नरमल संपूर्ण भया इसे विद्वान् लोग वारंवार शोभा युक्त करें ॥ ७१ ॥

इति रमलनवरत्ने माहीधरीभाषायां वर्षविचारवर्णनं नाम नवमं रत्नम् ॥ ९ ॥

सँव्वत्सरे वेदशरांकभूमिमिते टिहर्य्यां विवृतिं चकार ।
महीधरो-र्यांधिपखेमराजाज्ञया नवीने रमलैकरत्ने ॥
शुद्धाशुद्धेश्चितने नूत्नतांमा यायादग्रंथोग्रन्थकर्त्तासुखीस्यात् ।
यस्मादेषः पारसीयः प्रासद्धः सिद्धिः प्रश्ने जायते भाषयापि ॥

१ देखी, परोक्षबात प्रकट करनेवाली जंत्री ।

क्रम		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
	शकल नामानि	लहियान	कब्जुलदाखिल	नकी	इज्जतमा	अंकीसा	बयाजू	अतबेदाखिल	नसुतुलदा०	नस्रुतलखा०	अतबेखारिज	हुम्रा	उकला	लह्यान	फरहा	कब्जुलखारज	जमात
	शकलरूपाणि	····	·।·	·।··	।·।·	·।।।	।·।।	··।·	·।।·	।।··	।···	।।·।	·।।·	।।।·	·।·।	।·।·	।।।।
१	मनोभिलषितकार्य	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
२	कार्येसफलताभविष्यतिनवा	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ
३	विवादजयःपराजयोवा	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ
४	परदेशेसर्वदास्थितिर्भविष्यतिनवा	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ
५	पांथोगृहेआगमिष्यतिनवा	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई
६	चोरितद्रव्यंलभ्यतेनवा	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ
७	मित्रस्यमैत्रीसत्यावासकपटा	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
८	ममयात्राभविष्यतिनवा	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
९	अमुकोस्माकंस्नेहंमानंचकरोतिनवा	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
१०	विवाहःकीदृक्भविष्यति	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ
११	विवाहितास्त्रीवरोवाकीदृक्	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ
१२	गर्भिण्याःकन्यावापुत्रोभविं०	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए
१३	रोगीसुखीभविष्यतिनवा	ओ	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ
१४	बंधनस्थोबंधनान्मुक्तोभविष्यतिनवा	औ	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ
१५	अद्याहोऽस्माककीदृग्भविष्यति	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ
१६	मदीयस्वप्नस्यकिंफलम्	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं

उत्तर निकालनेकी रीति ॥ ऊपर लिखे मुताबित क्रमहों अथवा ज्यादेहों (४) पंक्तियोंमें चिह्न करो ≡ जब चिह्न प्रष्टासे कर-

वाय दिये जायँ, तो बांये ओरके अर्थात् दाहिने हाथसे बांये हाथके ओर गिनो यदि विषम होंतो (१) बिंदु सम होतो रेखा लिखो ऐसे चारहों पंक्तियोंके (४) चिह्न (रेखाबिंदु) लेलो; वह एक प्रकार पाशक शकलके नांई हो जायगा इसमेंभी स्मरण चाहिये कि जब किसी पंक्तिमें चिह्न ९ से अधिक होंतो ९ से तष्ट (शेष) करना जो शेष रहे उसका सम विषम जानना.

॥ उपरोक्त चिह्नोंमें उदाहरण ॥

प्रथम पंक्तिका ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० विषम
दूसरीका ० ० ० ० ० ० १ ० ० ० ० ० ० ० ० सम
तीसरीका १ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० विषम
चौथीका ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० १ ० ० सम

ऐसे चिह्न करना—तब आगे उत्तर देखनेको आगेकी जंत्रीको देखो जिसके शिरपर वही चिह्नहो जो (४) पंक्तियोंसे उक्त विधि करके मिला है तब उसके नीचे प्रश्नके शिरपर जो अक्षर चिह्नहो उसे देखो तदनंतर उस कोष्टकको (अग्रिम) देखो जिसके शिरपर वही अक्षर हो. वही शकल चिह्नभी हो वहां अपने प्रश्नका उत्तर देख ले.

प्रश्न करनेके दिन ।

जन्वरी । १ । २ । ४ । ६ । ११ । १२ । २० । फर्वरी ११७। १८ मार्च १४ । १६ अप्रेल १० । १७ । १८ मई ७।८ जून १७ जौलाय १७।२१ अगस्त २०।२१। सितंबर १०।१८ अक्तूबर ६ नवंबर ६ । १० दिसंबर ६ । ११ । १५ एकही प्रश्न एकही दिनमें दूसरेवार न होना चाहिये = इति ॥

अ.

१ जो तुम्हारी इच्छा है थोड़े दिनमें मिलजायगी.

२ कष्ट और पश्चात्ताप होगा.

३ जो काम आजके दिन करतेहो खबरदारीसे करो ऐसा न हो कि कोई आपत्ति तुम्हारे ऊपर आपड़े.

४ कैदी मरताहै और उसके मित्र रंज करेंगे.

५ इसवक्त शरीर बच जायगा मृत्युके मिलाप करनेकी तय्यारी है इस कष्टसे शरीर बच जायगा दूसरेमें आशा नहीं.

६ एक अच्छी रूपवती लडकी किंतु कष्टकी भरी हुई मिलेगी.

७ तुमको धर्मात्मा और धर्मज्ञ स्त्री वा पुरुष तुम्हारी स्त्रीवा पुरुषको मिलेगा.

८ यदि तुम इससे विवाह करोगे तो जहाँ कुछ तुम आशा करोगे शत्रु पैदा हो जायँगे.

९ बेहतर है कि तुम इस प्रीतिको छोडदो क्यों कि न यह हमेशः रहनेवाली है न सच्ची है.

१० अपनी यात्राको छोडदो क्यों कि, इससे तुम्हें कुछ फायदा न होगा.

११ तुम्हारे बीच सच्ची मैत्री है.

१२ तुम्हें चोरीका धन नहीं मिलेगा.

१३ विदेशी खुशीसे शीघ्र लौट आवेगा.

१४ तुम वहांसे नहीं जावोगे जहां इस समय हो अर्थात् स्थिर रहोगे.

१५ तुम्हें अच्छे मुकदमें मामलेमें हाकिमसे मदद मिलेगी.

१६ तुम भाग्यवान् नहीं हो प्रारब्ध रहित हो परमेश्वरसे सहाय मांगो.

आ.

१ तुम्हारे प्रारब्धमें जो कुछ लिखा गया उसको लोग.
(ईर्षा) मत्सर करेंगे.
२ जो कुछ इसवक्त तुम्हारी इच्छाहै उसे छोडदो.
३ किसी मनुष्यकी कृपा जाहिर करताहै.
४ दुश्मन हैं,जो तुमसे दगाकरेंगे और तुम्हें असंतोष दिखावेंगे.
५ बडी कठिनतासे उसे माफी मिलेगी और छूटेगा.
६ बीमार मर जायगा.
७ उसके एक विद्वान् और बुद्धिमान् पुत्र उत्पन्न होगा.
८ एक धनवान् मनुष्य तुम्हारे लिये नियत किया गया.
९ इस विवाहसे तुम्हें अच्छा सौभाग्य होगा.
१० यह प्रीति स्वच्छ चित्तकी है.
११ परमेश्वर तुम्हारा रक्षक होगा और तुम्हें उन्नति देगा.
१२ दगाबाज और झूठे मित्रसे खबरदार रहो.
१३ अकस्मात् तुम्हारी जायदात तुम्हें मिलजायगी.
१४ इस वक्त मुहलतके सबब वह घर नहीं आ सकता.
१५ तुम यहाँ नहीं रहोगे इसलिये दूसरी जगे जानेको तैयार रहो
१६ तुम्हें कुछ फायदा न होगा इसलिये खबरदार व हुशियाररहो.

इ.

१ परमेश्वरकी कृपासे तुम्हें बडालाभ होगा.
२ यथार्थ मन्द प्रारब्ध है परमेश्वरसे सहायता मांगो.
३ यदि तुम्हारी इच्छा बेहद नहीं है तो वही मंजूर होगी.
४ इसके बीच मैत्री होगी.

५ आजके रोज अच्छी तरहसे प्रस्तुत रहो कदाचित् तुम्हें कुछ कष्ट होगा.

६ कैदी कठिनतासे छूटेगा.

७ रोगी आराम होगा.

८ उसके लडकी होगी किंतु उसकी खबरदारीकी जरूरत होगी.

९ इस मनुष्यके पास अधिक धन नहींहै किंतु मध्यम धन है.

१० इस विवाहको इनकार करदो नहीं तो पश्चात्ताप उठाना पडैगा.

११ ऐसी मुहबतको छोडदो जिससे कि, तुम्हारी हानि होगी.

१२ तुम्हारे गमन निरर्थक है चाहिये कि, तुम घरमें रहो.

१३ सच्ची और शुभमैत्रीपर विश्वास रखसकते हो.

१४ तुमको फिर वह नहीं मिलेगा उम्मैद मत रक्खो.

१५ बीमारीके कारणसे वह पंथ तुमको नहीं देख सकता.

१६ तुम्हारे भाग्यमें यहीं ठहरना लिखा है.

(इ)

१ तुमको दूसरे मुल्कनें खूब धन मिलेगा.

२ निर्भय चले जानेसे तुम्हें जरूर दुगुना फायदा होगा.

३ परमेश्वरकी दयासे तुम्हारे दुर्दिन अच्छे हो जायंगे.

४ अपनी इच्छा बदल दो नहीं तो तुम्हें कष्ट मिलेगा.

५ तुम्हारी मनोकामना प्राप्त होनेमें जरूर विलंब है.

६ जिस जिस बातपर तुम्हाराचित्त आज लगे उन्हें छोड दो.

७ कैदी फिर छूट जायगा.

८ रोगीका रोग बहुत दिनतक रहेगा और आरामीमें संदेह रहेगा.

९ उसका सुशील और सुरूप लडका होगा.

१० यह मनुष्य धन दुर्बलहै परंतु चित्त स्वच्छ व सच्चाहै.

११ व्याह जिससे करतेहो उससे सौख्य होगा.

१२ तुम ऐसे मनुष्यसे प्रीतिकर्तेहो जो तुम्हारा निंदकहै.

१३ यदि होशयारीसे चलोगे तो गमन सफल होगा.

१४ जो कुछ वह कहताहै वह उसकी इच्छा नहीं क्योंकि उसका चित्त झूठा है.

१५ कुछ कष्ट व खर्चसे तुम्हारा धन तुमको मिलसकता है.

१६ तुमको परदेश देखनेकी आशा करनी चाहिये.

(ड)

१ परदेशीकी जितनी शीघ्र तुम आशा करतेहो लौटना नहीं होगा.

२ अपने दोस्तोंमें रहो तुम अच्छा करोगे.

३ जिसकी तुम ढूँढमें हो अब मिलजायगा.

४ तुम्हारा भाग्य नहीं परमेश्वरकी प्रार्थना करो और शुद्ध चित्तसे कोशिश करो.

५ मित्रोंकी सहायतासे तुम्हारी मनोकामना सफल होगी.

६ तुम्हारे शत्रुहैं जो तुमको सर्वनाश और दुःखी करनेका उद्योग करेंगे.

७ खबरदार एक शत्रु तुमको तंगी व बरबादीमें लानेका उद्यम करता है.

८ कैदीको चिंता व शोकबहुतहै और छूटना उसका कठिनहै.
९ रोगीकी नैरुज्यता शीघ्र होगी और कुछ भय नहीं.
१० इसके लडकी उत्पन्न होगी और भाग्यवती होगी.
११ तुम्हारा मित्र उन्मादी होगा और उसीके द्वारा हानि होगी.
१२ इस विवाहसे कुछ दुर्बलता आवेगी इस लिये होशियार रहना चाहिये.
१३ यह प्रीति तुमसे झूठी और शोककी है.
१४ अपने गमनको इसवक्त बंदकरो क्योंकि तुम्हें कठिनता होगी.
१५ यह मनुष्य अच्छा और सरल परंतु इज्जतका मुहताजहै.
१६ चोरीका धन तुमको नहीं मिलेगा.

(ऊ)

१ उद्यमभी करतेरहो तुम्हें तुम्हारी वस्तु मिलजायगी.
२ अपूर्व मनुष्य लौटनेसे असमर्थ है.
३ तुम विदेशमें लाभ उठाओगे और कार्य योग्य होगे.
४ धैर्य रख तेरी किस्मतमें अच्छा धन है.
५ इससमय इस कामके योग्य होनेमें विलंबहै.
६ इससमय तेरी इच्छा व्यर्थहै.
७ कष्ट और शोक तुझको सन्मुख आवेगा.
८ आजका दिन तेरे लिये अच्छा नहीं अपनी इच्छा छोडदे.
९ कैदी छूट जायगा.
१० रोगीको आराम होनेमें संदेह है.
११ उसके एक अच्छा लडका पैदा होगा.
१२ एक योग्य मनुष्य और बडा धन मिलेगा.

१३ ☰ तुम्हारे कामोंको नाश करेगा.
१४ ☰ यह प्रीति सच्ची और नित्य रहनेवाली है इसे छोडो मत.
१५ ☰ अपनी यात्रामें जाओ तुम्हें कुछ हानि न होगी.
१६ ☰ यदि तुम इस मित्रका भरोसा करोगे तो तुम्हें क्लेश उठाना पडेगा.

(ऋ)

१ ☰ यह मित्र तुमको सर्वदा तुमसे उत्तम रहेगा.
२ ☰ तुम्हें अपनी हानि दृढ चित्तसे सम्हारनी चाहिये.
३ ☰ विदेशी अचानक लौट आवेगा.
४ ☰ अपने घरमें अपने मित्रोंके साथ रहो तेरा कष्ट दूर होगा.
५ ☰ तुमको अपने काममें कुछ लाभ न होगा.
६ ☰ परमेश्वर तुम्हें उन्नति देगा.
७ ☰ नहीं.
८ ☰ अपने शत्रुओंके हाथसे थोडे दिनोंमें मुक्त होजाओगे.
९ ☰ तेरी दुर्भाग्यता आनेवाली है और उससे बचना कठिन होगा.
१० ☰ कैदीमरके छूटेगा.
११ ☰ परमेश्वरकी कृपासेरोगी आराम होगा.
१२ ☰ एक लडकी किंतु कम जोर.
१३ ☰ तुझे महानुभाव एवं जवान और खूबसूरत (मित्र) सहयोगी मिलेगा.
१४ ☰ इस विवाहको अंगीकार न कर नहीं तो तुझे क्लेशउठाना पडेगा.

१५ इस मैत्रीको छोडदे.
१६ शीघ्रही यात्राको उद्यत रहो तुम अचानक बुलाये जाओगे.

(ऋ)

१ अपने सफरका आरंभ करो और जहाँतक इच्छा करोगे जासकतेहो.
२ तुम्हारा बनावटी मित्र परोक्षमें तुमसे घृणा करता है.
३ तुम्हारी आशा धन पुनः पाने की व्यर्थ है.
४ पांथ किसी कामके कारण वक्र शीघ्र नहीं होसकता है.
५ विदेशमें तुझे बहुत धन मिलेगा.
६ अपने यत्नको छोड दो तुम्हें अच्छा होगा.
७ तुम्हारी आशा व्यर्थहै तुम कार्य योग्य न होओगे.
८ जो तुम्हारी इच्छा है प्राप्त हो जायगी.
९ खुश हो तुम्हारी खुश किस्मती नजदीकहै.
१० आजके दिन तुम्हारेवास्ते अच्छा होगा.
११ बाद बहुत कैद भुगतनेके उसकी रिहाई होगी.
१२ बीमारको आरामी होगी.
१३ उसका नीरोग लडका उत्पन्न होगा.
१४ थोड़े दिनोंमें तुम्हारा विवाह होगा.
१५ और तुम प्रसन्न होना चाहते होतो इससे शादीमत करो.
१६ यह प्रेम दिली है और ताजिस्त रहोगी.

(ऌ.)

१ स्नेहतो बडा है परंच बडी डाह पैदा होगी.
२ तुम्हारी यात्रा कभी निष्फल न होगी.

३ तुम्हारा ऐसा मित्र होगा जैसा कि तुम चाहोगे.

४ चोरित द्रव्य तुझको किसी चालाक शख्सके जरियेसे मिलेगा.

५ पथिक शीघ्र प्रसन्नतासे लौटेगा.

६ विदेशमें तुम कोई योग्य न होओगे.

७ परमेश्वरपर भरोषा करो जोकि खुशीका देनेवाला है.

८ तुम्हारी भलाई थोडे दिनोंमें बुराईतब्दीली होजायगी.

९ तुम्हारी अपनी इच्छानुसार योग्यता होवेगी.

१० बदवख्ती जोकि भय सूचक है रुक जायगी.

११ अपने वैरियोंसे खबरदार रहो जो कि तुम्हें हानि पहुँ-चाना चाहते हैं.

१२ चंदरोज बाद तुम्हारा फ़िक्र कैदीके निस्बत करके होजागा.

१३ परमेश्वर स्वीकार कर तंदुरस्ती और ताकत कर देगा.

१४ उसकी एक बहनकी खूबसूरत लडकी होगी.

१५ तुम ऐसे विवाह करोगे कि जिससे तुमको आरामबहुत कम मिलेगा.

१६ इस विवाहसे तुम्हारी इच्छा पूरी न होगी.

(लू)

१ बाद बहुत कष्ट तुम्हें आसायश आराम मिलेगा.

२ सादिक दिलकी पाक मुहब्बत होगी.

३ तुम्हारा सदर कामयाब होगा.

४ इस आदमीकी दोस्तीपर भरोसा मत करो.

५ माल मशरुका दस्तयाव न होगा मगर चोर सजायाव होगा.
६ मुसाफिर बहुत दिनमें आवेगा.
७ तुम्हें नेकवख्ती आराम परदेशमें मिलेगा.
८ फिलहाल तुम्हें कोई कामयाबी न होगी.
९ जिस काममें तुम लगेहो उसमें कामयाब होओगे.
१० अपने इरादेको तबदील करो और तुम अच्छा करोगे.
११ नहीं.
१२ सबर करो चंदरोजमें तुम्हारी हालत दुरुस्त होजायगी.
१३ कैदीको रिहाई होगी.
१४ बीमार मर जायगा.
१५ उसको लडका पैदा होगा.
१६ तुम्हें मुशकिलसे तुम्हारा शरीक मिलेगा.

(ए)

१ तुम्हारा व्याह अच्छे खूबसूरत आदमीसे होगा.
२ इस शादीमें बहुत किस्मकी आफतें पेश आवेंगी.
३ यह मोहब्बत तबदील होनेवाली है.
४ तुमको सफर नेकवख्त न होगा.
५ इसशख्सकी मोहब्बतसही बरास्म है तुम भरोसा कर-सकते हो.
६ तुम्हारा नुकसान होगा मगर चोरको बहुत तकलीफ बरदाश्तकरना होगा.
७ मुसाफिर जल्दी मयमालके वापस होगा.
८ अगर तुम घरमें रहोगे तो तुम्हैं कामयाबी होगी.

९ तुम्हारा फायदा कम होगा.
१० तुम्हें रंज तकलीफ होगी.
११ तुम हस्ब दिलख्वाह कामयाब हो ओगे.
१२ तुम्हें रुपये मिलेंगे.
१३ बावजूद दुशमनोंके तुम अच्छाकरोगे.
१४ कैदी बहुत दिनतक जेलमें रहेगा.
१५ बीमारको सेहत होगी.
१६ उसके लकडी पैदा होगी.

(ऐ)

१ उसको लडका पैदा होगा दो खिताब व इज्जतउसको मिलेंगी.
२ बडी लगातार कोशिस और रुपयेसे उसको शदीक मिलेगा.
३ यह शादी कामयाव होगी.
४ वह अभी तुम्हारा होना चाहता है. (मर्द या औरत)
५ तुम्हें सफरमें फायदा होगा.
६ उस शख्सपर ज्यादे एतकाद मत रक्खो.
७ तुम्हें किसी वक्त तुम्हारी जायदाद मिलजायगी.
८ मुसाफिरका वापस होना बसबब उसके चाल चलनके शकदार है.
९ हस्ब दिलख्वाह कामयाबी तुम्हें परदेशमें होगी.
१० फायदेकी उम्मैद मत करो यह बे फायदा होगा.
११ बनिस्वत तुम्हारी उम्मैदके तुम्हारे तई ज्यादा नेक वख्ती होगी.

१२ जो कुछ तुम्हारी ख्वाहिशें हैं जल्दी हासिल होंगी.
१३ तुम शादीमें बुलाये जाओगे.
१४ बदबख्तीकी शिकायतका तुम्हें मौका न मिलेगा.
१५ कोई रहम करेगा. और कैदीको रिहाई होगी.
१६ बीमारके सेहतकी ठीक नहीं.

(ओ)

१ बीमारको सेहत होगी मगर उसकी उमर कम है.
२ उसके लडकी होगी.
३ तुम्हारी इज्जतदार खानदानमें होगी.
४ इसशादीसे तुम्हारा कुछ हासिल न होगा.
५ वक्त आनेदो तुम बडी मोहब्बत पाओगे.
६ घरसे खतरेमें मत पडो.
७ यह शख्स सच्चा है या पाकदोस्त है.
८ तुम्हें माल मशरूका कभी नहीं मिलेगा.
९ मुसाफिर वापस होगा मगर जल्दी नहीं.
१० जब परदेशमें रहते हो तब बदऔरतसे परहेज रक्खो नहीं तो उससे नुकसान पहुँचेगा.
११ जिसकी तुम कम उम्मैद करते हो जल्दी मिलजायगा.
१२ तुम्हें बडी कामयाबी होगी.
१३ हमेशा उसपर खुश रहो जो तुमको दिया गया है.
१४ रंज दूर होगा और खुशी आवेगी.
१५ तेरी किस्मत मानिंद गुलके खिलनेको है चंदरोजमेंखिल जायगी.

१६ मौतकैदको झूठा करेगी.

(औ)

१ कैदी खुशीके साथ रिहा होगा.
२ बीमारीकी सेहतमें शक है.
३ उसको लडका पैदा होगा और उम्रदराज होगा.
४ तुम्हें पूरा सबाब ख्वाविंद या जौजह मिलेगी.
५ इस शादीमें देर मतकर तुझे बडी खुशी होगी.
६ इस दुनियामें तुम्हें कोई अच्छी मुहब्बत नहीं करता.
७ तुमभरोसेके साथ जासकते हो.
८ दोस्त नहीं बल्कि पोशीदा दुश्मन है.
९ माल मशरुका तुम्हें जल्दी मिलेगा.
१० मुसाफिर वापस न होगा.
११ एक बिदेशी औरत तेरी दौलतको ज्यादे बढावेगी.
१२ तुम्हारे फायदेमें तुम्हें दगा मिलैगी.
१३ तुम्हारी मुसीबतें दूर होंगी और तुम खुश होओगे.
१४ तुम्हारी उम्मैद बेफायदा है दौलत तुमसे नफरत करतीहै
१५ तुम जल्दी दिलख्वाह खबर सुनोगे.
१६ मुसीबतें तुमको ताकरही हैं.

(अं)

१ आजका रोज तुम्हारी खुशीको न पावेगा.
२ अपने दुशमनोंसे कैदी बचेगा.
३ बीमार आराम होगा और बहुत जीवेगा.
४ उसके दो लडकी होंगी.

५ एकदौलतमंदनौजवान आदमी तुम्हारा ख्वाविन्द होगा.

६ शादी जल्दी करो इसमें तुम्हें बडी खुशी होगी.

७ यह शख्स सच्चे दिलसे तुमसे मुहब्बत करता है.

८ घरसे तुम कामयाब न होगे.

९ यह दोस्त सोनेसे ज्यादे कीमती है.

१० तुमको तुम्हारा माल कभी नहीं मिलेगा.

११ वह शख्स बीमार है और अभी वापस नहीं आसकता.

१२ अपनी मेहनतपर भरोसा रक्खो और घरमें रहो.

१३ खुश हो क्योंकि आयंदेको तुम्हें कामयाबी बख्शीगईहै.

१४ अपनी नेकबख्तीपर बहुत भरोसा मत कर.

१५ जो तुम्हारी ख्वाहिश है वह मंजूर होगी.

१६ आजके रोज तुम्हें बडा खबरदार रहना चाहिये ऐसा न हो कि, कोई आफत तुम्हारे ऊपर आ पडे.

(अः)

१ दरमियान दोस्तोंके बडी खुशी होगी.

२ आजका दिन अच्छा नहीं बल्कि बुरा है.

३ अगर्चे वह आजकल तकलीफ बरदाश्त करता है वह अबभी इज्जत पायगा.

४ सेहतमें शुभा है इस लिये उसका दूसरी दुनियांका साचा न करो.

५ उसको लडका पैदा होगा मगर बेअदब होगा.

६ दौलतमंद ख्वाविन्द या जोरू मिलैगी मगर बदमिजाज.

७ इस शख्ससेशादी करनेसे अपनी खुशीका यकीन करे.

८ यह शख्स तुमसे ज्यादे मुहब्बत रखता है मगर छिपाने चाहता है.

९ तुम अपने सदरमें बडे रजा सकते हो.

१० उसका एतकाद न करो वह दगाबाज है कायम मिजाज नहीं.

११ एक अजबतरहसे तुम्हारी जायदाद तुमको मिलैगी.

१२ मुसाफिर जल्दी वापस आवेगा.

१३ परदेशमें तुम चैन व आराममें रहोगे.

१४ अगर अच्छीतरहसे काररवाई करोगे तो जरूर कामयाब होओगे.

१५ तुम अबभी शानशौकत व मालमतेके साथ रहोगे.

१६ जो कुछ तुम्हारे पास है उसपर सबर करो.

इति महीधर संगृहीता रमलप्रश्नावली ॥



श्रीः ।

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ रमलदानियाल ।



अथ कार्यावधिप्रश्नाः ।

कोई पूछे कि, मेरा काम कितने दिनोंमें और किस वारमें होगा. तब सोलह १६ शकल निकालै. पहिली और पांचवींको जर्बकरै दूजी २ और छठी ६ को जर्ब करै. ३–७ को जर्ब करै. ४–८ को जर्ब करै. शकल निकालै ऐसे इन्किलाब करै. ऐसे ४ चार शकल निकालके इनसे सोलह शकल बनावे फिर इनपर अमल करै. १४ घरकी शकलको देखै, उसके नीचे जितने अंक हों उतनेही दिनमें और उसही शकलके स्वामीके वारको कार्य होगा. जैसे १४ घर लह्यान ⚏ हो तो ९ नव दिनमें और बृहस्पतिवारको होवे, ऐसे सब कहना इति ॥ १ ॥

धनका प्रश्न २–। कोई पूछे मेरे धन होगा कि नहीं ? तो इस प्रश्नको दूसरे घरसे विचारै. तहाँ प्रस्तारमें १–२–११ ये शकल शुभ हों तो धन होगा अशुभ हों तो नहीं होगा तहाँ ⁝ ⚏ ☰ ⚏ ⚍ ⚎ ⚌ ये शुभ और ⚍ ⚏ ☰ ⚍ ⚌ ये अशुभ शकल हैं, इति ॥ २ ॥

और कोई पूछे कि, निकट नजदीक जाताहूँ सो शुभहै या अशुभ है? इस प्रश्नको ३ घरसे विचारै३ घरमें शुभ शकल हो तो शुभ फल कहै अशुभ हो तो अशुभ फल कहै, साबित शकल हो तो वहाँसे उलटा चला आवेगा यह कहो इति ॥ ३ ॥

कोई पूछे कि मेरी अवस्था अबसे आगे कैसी बीतेगी ? तहाँ १–२–९ इन घरोंसे विचारै.तहाँ शुभदाखिल ⚍ ⚌ ⚎ ये शकल आवें तो अच्छी गुजरेगी और खारिज ⚏ ⚍ ☰ ⚎ ये हों

तो अच्छी नहीं गुजरेगी. शुभ साबित आवे तो जैसी पीछे गुजरी वैसीही गुजरेगी. यदि मुन्कलीब आवे तो खुशवक्तसे गुजरेगी. दूसरा प्रकार यह है कि १२ वें घरको विचारै शुभहो तो अभी अच्छी बीततीहै, आगेभी भली बीतेगी अशुभहो तो आगे बुरी बीतेगी, कोई पूछे कि मेरी गुजरान कैसी भई ? और आगे कैसी होगी ? तहाँ १--४ शकलको जर्ब करे ७-१० को जर्ब करे इनसे शुभ शकल बने तो शुभ, अच्छी गुजरी, अशुभहो तो बुरी नाकिस गुजरी है, यदि ये दोनों विपरीत हों अर्थात् एक शुभ और एक अशुभ हो तो मध्यम गुजरी कहै. फिर १-४--से उपजी और ७-१० शकलसे उपजी हुई शकलको जर्ब करके एक बना लेवे, अशुभहो तो बुरी गुजरेगी. और शुभहो तो अच्छी गुजरेगी, मध्यम हो तो मध्यमही गुजरेगी इति ॥ ४ ॥

कोई पूछे, मेरा भाई मुझपर खुशी है या नहीं ? तहाँ तीसरे घरको विचारै यदि दाखिल शकल =: ‾: =: ≡. ये हों तो भाईका प्यार बहुत है. और यदि खारिज अर्थात् =: ≡ =: ये शकल हों तो प्यार नहीं दुशमनाई है, जो साबित शकल हो तो कछु ऊपरसे प्यार रखता है, लोगोंको दिखानेके वास्ते इछ भल करता है, जो मुन्कलीब हो तो लोगोंके भयसे प्यार किया चाहता है दिलमें प्यार नहीं है ऐसे कहो. और इन सबको शुभाशुभ देख-केभी विशेष वा कम हाल कहना. इति ॥ ५ ॥

कोई कहै कि मैं जिस औरत (स्त्री) से विवाह कराया चाहता हूँ वह कैसी है ? तहाँ सातवें घरको विचारे जो ⋮ =: ‾: —: ये शकल हों तो पतिव्रता है, यदि =: =: =: —: इनमेंसे कोई सीभी हो तो वह औरत कलहकारिणी और व्यभिचारिणी है,

दुःखदायिनी है जो इनसे बची हुई अन्य कोई शक्लहो तो स्त्री जार (छिनाल) है बातोंमें मीठी है, इति ॥ ६ ॥

कोई पूछे कि, मेरी वस्तु खोईगई है सो मिलेगी या नहीं ? तहाँ रमल डाले प्रस्तार बनाके, सोलह शकल निकाले फिर सातवीं शक्लको देखै तहाँ दाखिल शकलोंमेंसे कोई शकल हो तो शीघ्रही पावे, और खारिज हो तो नहीं पावे. मुन्कलीब होतो कछुक पता लगे, पावे नहीं. शुभ साबित होतो विलंबसे पावे, अशुभ हो तो नहीं पावे. इति ॥ ७ ॥

कोई पूछे वर्षा वर्षेगी या नहीं ? तहाँ प्रस्तार २ बनाके, पांचवीं और सोलहवीं शकलकी एक शकल निकाले जो यदि दाखिलहो तो वर्षा बहुत होवे ☰ जमात हो तो नदी बहुत चढै ⁝ यह शकल हो तो बादल अबर बहुत रहैं. ⁝ यह हो तो मेह अँधेरी घटा बहुत हो वर्षा थोडी हो ⁝ यह होतो वायुही चले वर्षा न हो ⁝ यह शकल होतो गरम लाली कसीरी वायु आवे जो ☰ बयाज होतो मेह थोडा और वायु बहुत चलै ⁝ यह तरिखा शकल होतो मेह बहुत टल टल जाय और खारिज संज्ञक शकल होय तो वर्षाबहुत टल टल जाय इति ॥ ८ ॥

जो कोई पूछे अन्न (अनाज) महँगा होगा ? या सस्ता होगा ? तहाँ प्रस्तार बनाके, सोलह शकलनिकाले फिर पहली और १० शकलको जर्बकरै दूसरी और ११ ग्यारहवीं शकलको जर्ब करै, पांचवीं और ९ को जर्ब करै सातवीं और १२ को जर्ब करै ऐसे चारशकल निकाले पीछे इन चारोंसे सोलह शकल बनावे पीछे इस प्रस्तारका * इन्किलाव बनाके तिससे चार शकल निकाले फिर तिनकी एक शकल बनावै यदि वह शकल आतशी अर्थात्

* १--५ से २-६ से ३-७ से ४-८ से जर्ब करके ४ शकल निकालै इसे इन्किलाब कहते हैं।

अग्नितत्त्वकी होतो अन्न महँगा होवे, पृथ्वीतत्त्वकी होतो थोडा महँगा, बादी अर्थात् वायुकी हो तो मध्यम भाव जल तत्त्वकी होतो बहुत सस्ता होवे इति ॥ ९ ॥

मेरा बाप मुझे कैसा चाहता है? तहाँ प्रस्तार करके चौथे घरको विचारै यदि ४ चौथे घरमें शुभदाखिल शकल हो तो बहुत प्यार रखता है साबित होतो मध्यम प्यार है; खारिज होतो प्यार नहीं है मुन्कलीब हो तो ऊपरसे प्यार दिखाता है मनमें प्यार नहीं रखता है इति ॥ १० ॥

प्रश्न-मेरा रोजगार होवेगा कि, नहीं? तहाँ प्रस्तार बनाके दूसरे घरको विचारै जो दाखिल शकल आवे तो शीघ्रही रोजगार हाथ आवे जो खारिज शकल आवे तो रोजगार नहीं होवे साबित हो तो ढीलमें रोजगार होगा मुन्कलीब हो तो ढीलमें थोडासा रोजगार होगा अशुभ होतो नहीं होगा इति ॥ ११ ॥

प्रश्न-कोई पूछे कि परदेशीका खरचा आवैगा कि नहीं? तहाँ प्रस्तार बनाके पांचवें घरको देखै यदि ५ घरमें दाखिल —⁝ =: ‾⁝ ये शकल हों तो खरचा आवेगा परदेशी मनुष्य खुशीहै, जो खारिज =: = _⁝ ये शकल आवें तो खरचा खबर कछु नहीं आवे जो शुभ साबित आवे तो विलंबसे खरचा आवे मुन्कलीब आवे तो खरचा नहीं आवें खबरही आवेगी ॥ १२ ॥

प्रश्न-मैं फलानेके पाससे कोई वस्तु मांगा चाहताहूं वह देगा या नहीं? तहाँ प्रस्तार बनाके, छठी और दशवीं शकलको जर्ब करके एक बनावले वे फिरशुभ दाखिल आवे तो देवेगा जो शुभ मुन्कलीब हो तो शीघ्रही देवेगा जो अशुभ मुन्कलीब आवे तो देके फिर उलटे ले लेवेगा जो अशुभ खारिज हो तो नहीं देवेगा जो शुभ साबित होतो ढीलसे देवेगा जो शुभ खारिज होतो दिलासा करेगा देवेगा नहीं इति ॥ १३ ॥

प्रश्न–कोई पूछे माशूक (प्रियजन) हाथ आवे, या न आवे और परदेशीकी खबर सच्ची है या झूठी है और परदेशी आप आवेगा या नहीं ? इन प्रश्नोंके पाँचवें घरको विचारै तहाँ ≡ ≡ ⁝ इनमेंसे कोई शकल होवे तो माशूक हाथ आवे. और परदेशीकी खबर आवे जो कि. पीछे खबर आईथी, सच्ची है और जो यदि ≡ ⁝ ≡ इनमें कोई शकल आवे तो जहाँ था वहांही है आवे नहीं और माशूक कुछेक दिन हाथ नहीं आवे, यदि ⁝ ≡ ≡ इनमेंसे कोई शकल आवे तो परदेशी जीवता नहीं और माशूक हाथ न आवे खबर झूठी है इति ॥ १४ ॥

प्रश्न–गर्भवती बेटा जनेगी या बेटी जनेगी ? तहाँ रमल डालै सोलह शकल निकालै; पहली और दशवींको जर्ब करै फिर छठी शकलसे जर्ब करै यदि ≡ ⁝ ≡ ⁝ ⁝ ≡ ≡ इनमेंसे आवे तो रूपवाले पुत्रको जनै. जो ≡ ≡ ≡ ⁝ ≡ ⁝ इनमेंसे आवे तो बेटी जनै. दूसरा प्रकार यह है कि, पहिली और पांचवीं शकलको जर्ब करै ६–७ को जर्ब करै. फिर इन दोनोंसे एक बनाके उसे देखै. जो अग्नितत्त्व अथवा वायुतत्त्वकी हो तो बेटा जनेगी जो पृथ्वी वा जलतत्त्व हो तो बेटी जनेगी. इति ॥ १५ ॥

कोई पूछे कि स्त्रीके गर्भ है, या नहीं ? तहाँ छठे घरके विचारै जो दाखिल साबित होतो गर्भ है. जो खारिज हो तो गर्भ नहीं मुन्कलीव हो तो गर्भ है, परन्तु ठहरना मुशकिल है तहाँ ठहरनेका निश्चय ऐसे करे कि तेरहवीं और सातवीं शकलको विचारै, दाखिल साबितहो तो रहै खारिज मुन्कलीव हो तो न रहेगा इति ॥ १६ ॥

कोई पूछे कि स्त्री सुखसे बालक जनेगी, या दुःखसे ? तहाँ प्रस्तार बनाके छठे घरको देखै. जो यदि शुभ दाखिल हो अथवा शुभ खारिज हो तो सुखसे जनेगी. शुभ साबित आवे तो अजारसे

अशुभ खारिज आवे तो खतरा है. शुभ मुन्कलीब आवे तो सुखसे अशुभ मुन्कलीब आवे तो दुःखसे जनेगी इति ॥ १७ ॥

कोई पूछे स्त्रीके कितने महीनेका गर्भ है ? तहाँ प्रस्तार बनाके पहली और ग्यारहवीं शकलको जर्ब करै ५-६ को जर्ब करै. फिर इनसे उत्पन्न हुई दोनों शकलोंकी एक शकल बनाके उसके स्वामी ग्रहको बिचारै जो =: =: ये सूर्यकी शकल हों तो एक महीनेका गर्भ है. जो -: =: ये शुक्रकी शकल हों तो तीन महीनेका है जो मंगलकी =: -: तो ५ महीनेका. जो बृहस्पतिकी हों तो =: =: छः महीनेका है. जो शनिकी =: =: हों तो ७ महीनेका है. राहुकी =: हो तो दश महीनेका है. बुधकी आवे तो ३-४ महीनेका है इति ॥ १८ ॥

प्रश्न-इस औरतके किस वारमें किस वक्तबालक होगा ? इसे प्रस्तारके ग्यारहवें घरमें बिचारै. जो सूर्यकी शकल आवे तो आदित्यवारमें होगा. इसही प्रकार ११ घरमें जिस ग्रहकी शकल पडे उसीका वार बतलाना. किसवक्त जनेगी ? इस प्रश्नमें पहले घरको विचारै. जो तहाँ पहले घर =: =: =: =: ये शकल आवें तो संध्यासमय अथवा अर्धरात्रि समय जनेगी =: =: =: ये आवें तो चढते दिन अथवा दुपहरी पीछे जनेगी। ⁝ =: ये आवे तो सूर्योदय पर जो =: यह आवे तो आधी रातके पीछे जनेगी और शकुन पंक्तिचक्रमें जो रात दिनकी शकल कही हैं उनसे विचारके भी कहे इति ॥ १९ ॥

प्रश्न-इस बालकको कौनसा दिन और कौनसा महीना वा वर्ष करडा (बुरा) है ? तहाँ प्रस्तार बनाके ८ आठवीं शकलके घरको बिचारै तहाँ =: यह आवे तो १४ दिन अथवा वर्ष माफिक है. जो =: यह आवे तो ३० दिन अथवा तीसवाँ वर्ष माफिक है ≡ यह आवे तो ४० दिन अथवा ४० वांही वर्ष भारी

है. जो ⚍ यह आवे तो १२ दिन अथवा १२ वांही वर्ष भारी है ⚌ यह आवे तो सात दिन अथवा सातवाँ वर्ष भारी है. ⁝ यह हो तो दोदिन अथवा दूसरा वर्ष भारी है ⚌ यह आवेतो पहला दिन अथवा पहला वर्ष भारी है जो ⚍ यह आवे तो ५० दिन अथवा पचासवाँ वर्ष भारीहै ⚍ यह आवे तो ६ दिन अथवा छठा वर्ष भारी है. जो ⚍ यह आवे तो भी ६ दिन अथवा छठा वर्ष भारी है. जो यदि ⚌ यह आवे तो ४० दिन अथवा चालीसवाँ वर्ष भारी है. जो ⚍ यह हो तो २० दिन अथवा बीसवाँ वर्ष भारी (माफिक) है. इति ॥ २० ॥

प्रश्न–कोई पूछे कि मेरा पशु अथवा पक्षी जानवर खोगया है मिलैगा, कि नहीं ? तहाँ प्रस्तार बनाके दूसरे घरको बिचारे शुभ दाखिल आवे तो जल्दी पावे. अशुभ दाखिल आवे तो बहुत दिनोंमें पावे. खारिज हो तो न पावे.शुभ मुन्कलीव आवे तो खर्च लगके विलंब (देरी) में पावे. शुभ साबित आवे तो कछु थोडासा खर्च लगे. थोडेही दिनोंमें पावे. इति ॥ २१ ॥

प्रश्न–चोरकी सूरत कैसी है ? तहाँ प्रस्तार बनाके सातवें घरको देखै यदि ⚌ यह आवे तो चोर जर्द रंग, गौर वर्ण है मंद आदमी है. दाढी अच्छी और बडी कद लंबा है जो ⚍ कब्जुल दाखिल आवे तो गेहूंके रंग मध्यम कद और मध्यम बलवाला है, लंबी गरदन. गिरदा, बडे रोम, इनसे युक्त है जो ⚍ यह आवे तो सुर्ख रंग हैं, लंबा है, मुखपर स्याही है हाथपर स्याही है, हाथपर मस्सा या तिलका चिह्न है, हाथमें छडी रखता है. शौक रखता है टेढा रहता है. जो ☰ जमात आवे तो साँवला छोटी गर्दनवाला काली भ्रुकुटियोंवाला है. जो ⚍ फरहा आवे तो सुफेद रंग, खूबसूरत, लंबी या सम गर्दन, स्याह भौंह, और कलाँवत (गानेवाला) है जो उकल ⚌ आवे तो छोटी गर्दनवाला, आकीचोर (बहुत चोरी-

करनेवाला) कमीन जाति है, सुनार, लुहार, मनिहार आदिहै. ☷ यह आवे तो लंबा, मोटा, काला, लंबी गर्दनवाला है, नेत्रोंमें कछु निशानी है, दहिनी तर्फ पांवमें फोडा या चोट अथवा शस्त्रकी निशानी है, अधम (नीचजाति) है. जो ☷ हुमरा आवे तो सुर्ख रंग या भूरा रंग है बाल और नेत्र लाल हैं, मुखपर शीतलाके दाग हैं, फोडा, फुन्सी, जखम आदि निशानीहैं, कमीन जात है. जो ☷ यह बयाज आवे तो सुफेद रंग है, तिल्लीवाला है, कानोंमें छिद्र हैं, मीठी तबीयत (प्रसन्नचित्त) रहता है बातें बहुत करता है, मुखपर कछु निशानी नूचा कान, मिली हुई भौंह हैं, मीठी बोली, गर्दन मोटी भली नियत. जो ☷ यह आवे तो लाल रंग कछु स्याह रंग है, लंबी गर्दन, लंबा पेट, आँखपर मुखपर बायीं तर्फ तिल अथवा मस्साकी निशानी है, शरीरमें गुलझठ है, नकी जो ☷ यह शकल आवे तो लाल रंगवाला है, वैरी है, यह चोर पतला है, चालाक, जवान, जोरावर है. जो ☷ यह शकल आवे तो सुफेद और जर्दी-इसे मिला रंग है, दाढी लंबीहै; भौंह मोटी और मीठा बोलनेवाला है, गाने बजानेवाला और मुख्य जनहै, जो इज्जतमा ☷ यह शकल आवे तो सुफेद रंग है, कपोल लाल हैं, लंबीकद, नारियलसरीखा शिर है, पतले ओंठ और छोटी नाकहै, यदि तारिखा ☷ यह शकल हो तो आमेज अर्थात् मिलाहुआ रंगवाला है, पतला और लंबा है, स्याह भौंहहैं, पतली अंगुली, हुनरदार ऐसी कोई औरतही चोर है इति ॥ २२ ॥

प्रश्न–चोर चांडाल किसतर्फ भाग गयाहै ? तहाँ रमल डालै आठवीं नववीं शकलोंको जर्ब करके एक बनावे जो ☷ ☷ ☷ ☷ इन ४ मेंसे कोईसी आवे तो पूर्व दिशामें गया. जो ☷ ☷ ☷ ☷ इन ४ मेंसे कोईसी आवेतो उत्तरकी तर्फ गया. जो ☷ ☷ ☷ ☷ इन ४ मेंसे कोई आवे तो पश्चिम

दिशामें गया, जो ☰ ☱ ☲ ☳ इन ४ मेंसे कोई शकल आवे तो दक्षिण दिशामें गया है. इति ॥ २३ ॥

प्रश्न-रोगीके क्या रोगहै? तहाँ रमल डाले प्रस्तार बनाके छठे घरको बिचारै यदि वहाँ ☰ लह्यान शकल होतो इसके कछु दिन पहले गरमीका विकार था तिस श्रममें यह न्हाया अथवा कुपथ्य कियाहै, इससे रोग भयाहै. ऐसा विचारना इसको बृहस्पति ग्रहके निमित्त दान पुण्य करना चाहिये. जो कब्जुल दाखिल आवे ☰ सुफेदवस्तुखाईहै. वह शीतलथी तिससे आरजा भयाहै. इसको सूर्यके निमित्त दानकरना. जो ☰ कब्जुलखारिज हो तो कहीं गलीजकी जगह स्नान आदि करने गया था वहाँ छाया भईहै अर्थात् भूत प्रेतनाशक यंत्र बांधना चाहिये, और बलिदान करना तथा राहुके निमित्त दान, पुण्य, जप, पाठ करानेसे बीमारी दूर होगी. जो ☰ जमात आवे तो बुध ग्रहके निमित्त दान, पुण्य करनेसे फायदा होगा. जो ☰ फरहा आवे तो सरदीसे आरजा हुआहै रातके वक्त पानी पिया है, बडेफजरमें कछु वस्तु खाईहै. अजीर्णसे बीमारी हुईहै. इसने शक्तिकेअनुसार दान, पुण्य करना चाहिये. जो ☰ उकला आवे तो छाया (भूत प्रेतकी बाधा) है. पेट भारी है. दर्द रहता है खाने की इच्छा करताहै. परन्तु गलेसे नीचे नहीं उतरता. इसने अन्नवस्त्रादिकोंका दान करना और शनैश्चरका दान पुण्य तथाजप कराना चाहिये. जो ☰ अंकीश आवे तो इसका पेट भारीहै. भूंख थोडी लगतीहै. पितर आदि इष्टदेवका दोषहै. तिस अपने इष्टदेवके निमित्तदान पुण्य करे तब सुख होवे. ☰ यह हुम्रा शकल होतो इसके कछु रक्तकी बीमारी है, इसने मंगल ग्रहके निमित्तब्राह्मणोंको भोजन कराना और जप, पाठ कराना चाहिये. जो ☰ यह बयाज शकल आवे तो रोगीको सरदीकी बीमारी अथवा शीतज्वर या शीत आरहाहै. अथवा कफकी वृद्धि

है. इसने छायादान (कांसके बरतनमें घृत डाल, तिसमें सोना डालके, दान) करना चाहिये और चन्द्रमाका जप कराना. जो ⚏ नुस्रत् खारिज हो तो कछु चिकनी चीज खाईहै. अथवा क्रोध कियाहै इससे बीमारी भई है इसने पक्का इलाज कराना चाहिये और ब्रह्मभोज करावे तथा भूखोंको भोजन बाँटे. तब बीमारी दूर होवेगी. जो ⚏ नुस्रुदाखिल आवे तो इसने किसी देव पितर निमित्त बोल कबूल कीथी सो याद नहीं रही यह ५ सेर चावल, पांच गज कपडाका दान करैं. और जिस देवनिमित्त बोल कबूल करीथी उसको पूरी करै तब आराम होगा. जो ⚏ अतवे खारिज आवे तो किसी भूत प्रेतकी बाधा है. कभी बीमारी ज्यादे कभी कमहोतीहै इसके गलेमें भूतनाशक यन्त्र बाँधना और केतु ग्रहके निमित्त दान पुण्य तथा जप, पाठ कराना चाहिये आराम होगा. जो ⚏ नकी आवे तो तापमें न्हाय लिया है. कछुलाल वस्तुखाईहै. तिसरे बीमारी हुई है. अब इसका जीव गोता खाता है. इसने मंगलग्रहका जप कराना और ब्राह्मणोंको भोजन करवाना चाहिये. आराम होगा. जो ⚏ यह अतब्रेदाखिल आवे तो भूतनीप्रेतनीकी छाया है. हिया काँपता है. कफसे छाती रुक रही है. इसको शुक्र ग्रहके निमित्त दान, पुण्य करना चाहिये. आराम होगा. जो ⚏ इज्तमा आवे तो पेटमें दर्द है कभी दुःख कभी सुख होताहै. भूखे गरीबं आदमियोंको भोजन खिलावे तब आराम होगा. यदि ⁞ यह तरिखा शकल आवे तो पानीके पीनेसे बीमारी बढी है भूंख नाहैं लगती है. ब्राह्मणोंको खीर, खांडका भोजन करानेसे आराम होगा. इति. ॥ २४ ॥

प्रश्न—यह बीमार आराम होगा, कि नहीं? तहां प्रस्तार बनाके पांचवें छठे घरको जर्ब करके एक शकल निकालै यदि ⚏ लह्यान् अथवा कब्जुल खारिज ⚏ आवे तो बीमार दूर होवे.जो ⚏, ⚏

इनमेंसे कोई आवे तो बीमारी मरं जो इनमेंसे कोई आवे तो आराम होजावेगा, यदि इनमेंसे कोई आवे तो बीमारी बहुत दिनोंतक रहेगी ॥ २५ ॥

प्रश्न—अमुक स्त्रीको यह पुरुष छोडेगा कि नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके सातवें घरको देखै ये शकल आवें तो छोडेगा. यदि ये आवें तो नहीं छोडेगा. जो मुन्कलीव आये तो कभी छोडै कभी नहीं कहै. इति ॥ २६ ॥

प्रश्न—गया परदेशी मरगया है,सुखी या दुःखी है, रोजगारहै, या नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके, आठवें घरको देखै यदि आठवें घर शुभ दाखिल आवे तो सुखी है अच्छी गुजनार करता है.शुभ मुन्कलीव आवे तो भले हालसे गुजरान है. आया चाहता है. जो अशुभ मुन्कलीव आवे तो जीता है. परंतु कारबारमें कुछ हल चली है. अशुभ खारिज आवे तो जीता नहीं शुभखारिज आवे जीता है. मगर हाल अच्छा नहीं है जो अशुभ साबित हुमरा आवेतो कड़ाई होके मरगया है.इति ॥ २७ ॥

प्रश्न—अमानत सौंपा देवेगा या नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके दूसरे छठे घरको जर्ब करै. जो शुभ दाखिल और शुभ साबित आवे तो अमानत देवेगा, अर्थात् जामिन होजायगा. और शुभ अथवा अशुभ मुन्कलीव हो तो देवे नहीं. देकर नटै जो अशुभ दाखिल अशुभ साबित तथा अशुभ खारिज आवे तो अमानत देगा नहीं, दिलासा करता रहेगा. इति ॥ २८ ॥

प्रश्न—मैं लड़ाई झगड़ाको जाता हूं फते होगी कि नहीं ? तहां रमल डाले प्रस्तार बनावे जो पहिली शकल शुभ दाखिल आवेतो फते होगी. जो अशुभ दाखिल आवे तो फते नहीं होगी जो अशुभ मुन्कलीव तथा अशुभ खारिज आवे तो फते न हो; जो अशुभ साबित होवे तो ढीलमें फते होगी. इति ॥ २९ ॥

प्रश्न-शत्रुसे लडने जाता हूं मेरी फते (जीत) या उसकी जीत (फते) होगी तहां प्रस्तार बनाके, आठवें घरको देखै जो शुभ दाखिल अथवा मुन्कलीव हो तो तेरी जीत है जो शुभ खारिज अथवा अशुभ खारिज हो तो दुश्मन (शत्रु) की फते होगी. जो शुभ साबित हो तो मेरी फते होगी जो अशुभ मुन्कलीव अशुभ साबित अशुभ दाखिल होवे तो शत्रुकी जीत होवेगी. और १-२-३-४-९-१०-११-१३-१५ इन घरोंमें शुभ शकल होवें तथा जो बहुत रेखा हों तो पूछनेवाले तेरीही फते होगी और ५-६-७-८-१२--१६ इन घरोंमें शकल हों और बहुत रेखा हों तो पृच्छक तुम्हारें शत्रुकी जीत होगी. इति ॥३०॥

कोई मूक प्रश्नकरै तहां रमल डाले प्रस्तार बनावे फिर हुमरा शकलको देखै कि प्रस्तारमें कहां है जो पहिले घर होवे तो कुछ काम किया है लडाईका जुबाब देइ तुम्हारे जुम्मै हो रही है शत्रुका बल अधिक है. जो हुमरा दूसरे घर आवे तो रोजगारका प्रश्नहै रोजगार अच्छा होगा जो परदेशी होतो फिरजावे चलनेकी नियत है न चलै और मिलनेकी या व्याहकी नियत है तो न करै और दावा (झगडा) की नियत है तो न करै और जो तीसरे घर आवे भाई मित्रसे लडाई आदि जो तुझसे बुरे हालसे रहताहै सो तुझे बुलावे कितनेक दिन पीछे तुझको तकलीफही दिखावेगा. जो चौथे घर आवे तो कुछ चीज न मिलै. हाथ न आवे. लडाई होवे दुशमन तुझपर कोप हो रहा है. किसीके पासजाके फरयाद करेगा तो तेरी फरयाद न लगेगी,जो परदेशीकी बात पूछताहै तो ढीलसे आवै, सफरकी नियत है तो न चलै. जो काम किया जाताहै सो ठीक करो यदि पांचवें घर आवे तो दिलगीरी है कुछ जानवर या अन्य कछु शोककी चीज खरीदा चाहता है सो न कर जो तेरी वस्तु गईहै सो पावेगी और जो प्यारा चला गयाहे सोभी आवेगा.

यदि छठे घर आवे तो बीमारको पूछताहै सो ढीलसे अच्छा होगा. जो गर्भवतीको पूछताहै सो कष्टसे बालक जनेगा और कुछ खरीदा चाहतेहो सो नहीं मिलेगा. यदि सातवें घर आवे तो परदेशीको पूछताहै.जो स्त्री किया चाहताहै तो नहीं करना खतराहै सीर (साझा) किया चाहताहै तो न करे. जानवर पक्षी खरीदा चाहताहै तो न रहैगा आठवें घर आवे तो शत्रुका जोरहै. और कर्जा लिया चाहताहै तो हमेशा दुःख रहेगा. परदेशीकी खबर आवे और आप नहीं आवेगा. जानवर पक्षी खरीदा चाहता है तो खरीद, फायदा होगा. बीमारको पूछताहै तो पुण्य धर्म करो आराम होगा. नववें घर आवे तो कहीं गमन करना अच्छा नहीं, परदेशकी खबर आवेगी, जो दशवें घर आवे तो बड वृद्ध आदमीसे कुछ हाथ आवे.रोजगार होवे. परदेशीकी पत्री आवे. किसीसे मिला चाहताहै तो न मिले, बीमार देरीमें आराम होगा. ग्यारहवें घर आवे तो जो तेरी उम्मेदहै सो ढीलसे होगी, दोस्तामित्र नहीं मिलैगा. रोजगार तो मिलैगा, किसीसे कर्जा नहीं लेना. किसी बडेसे कुछ पूछा चाहता है, सो नहीं सुनेगा. जो बारहवें घर आवे तो दुशमन जोर कर रहाहै,होशियार होजाना और कोई जानवर खरीदा चाहता है, तो किसी दोषसे मरेगा. और किसीपर दावा किया चाहताहै, तो न कर. बीमारको पूछताहै तो पुण्य दान करो आराम होगा. जो तेरहवें घर आवे तो तेरे दुशमन लोग बहुत हैं, और किसीके पाससे रोजगार चाहताहै.तो वहां रोजगार न होवेगा बीमारको पूछता है तो आराम होगा. परदेशी ढीलसे आवेगा. जो चौदहवें घर आवे तो इलमकी बात पूछतेहो सो ढीलसे होवेगी कुछ धन लिया चाहताहै सो हाथ न आवे और तेरे ऊपर किसीने तोहमत लगाई है तो सावधान होके रहना,और बीमारको औषधी दिलावो तब आराम होगा. पंद्रहवें घर आवे तो शीघ्रही रोजगार

होगा. तेरा दोस्त नादान (बे समझ) है. कुछ मतकर कामतेरा आपही होगा. परदेशी आदमी ढीलसे आवेगा. गर्भवतीको पूछता है तो कष्टसे बालक जनेगी, जो सोलहवें घर आवे तो तूने जो काम बिचार कर रक्खाहै उसमें कोई झगडा टंटा उठेगा किसीके पास जावेगा. वह मुखसे नहीं बोलेगा, जो कोई तुझसे बुरा हुआहै वह कितनेक दिन पीछे आपही बोलेगा. और आपही मिलेगा इति ३१

प्रश्न–कोई पूछे कि मुझको किसवस्तुमें फायदा होगा ? तब रमल डालके प्रस्तार बनावे जो दूसरे घर ☷ यह शकल आवे तो सराफीसे सोना रूपाके लेने देनेसे या लोगोंके झगडे चुकानेसे फायदा होगा. यदि दूसरे घर ⚍ कब्जुल दाखिल शकल आवे तो बजाजीसे अथवा खेतीके कामसे फायदा होगा जो ⚍ यह हो तो चोरीसे अथवा दगाबाजीसे अथवा जारीसे रोजगार होगा. जो ☰ यह आवे तो चीजें पालनेसे हकीमीसे फायदाहै. जो फरहा ⚍ आवे तो कलाईपनेसे, पसारीपनेसे, अत्तारपनेसे अथवा लोगोंके हँसानेसे फायदा है. जो ⚍ यह आवे तो चोरी, दगाबाजीसे, दुपया, चौपया जीव बेचनेसे फायदाहै. ⚍ नकीआवे तो शत्रुपनेसे अथवा कूटने पीसनेसे फायदाहै जो ⚍ हुम्रा आवे तो कासदपनेसे, इल्म पढनेसे; सँदेशा पहुंचानेसे, भिक्षामांगनेसे फायदा है, न्याव चुकावनेसे फायदा होगा. जो ⚍ नुसुदाखिल आवे तो विद्या आदि पढनेसे फायदा होगा, जो ⚍ यह शकल आवे तो किसानपनेसे, दलालीसे अथवा दुकानसे फायदा होगा, जो ⚍ यह आवे तो कपडा बेचनेसे अथवा ज्योतिष पढनेसे अथवा सौदागरीसे फायदा होगा. जो ⚍ यह शकल आवे तो गाने बजानेसे अथवा इल्म पढानेसे फायदाहै. जो ⁞ तरीख आवे तो धोबीपनेसे या मेवा बेचनेसे अथवा जासूपनेसे फायदा होगा इति ३२॥

प्रश्न–मैंने किसी जगह आदमी भेजाहै सो वहां पहुंचाहै कि, नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके पहला घर देखै. जो अशुभ दाखिल

आवे तो नहीं पहुंचा है अभी मिला नहीं जो शुभ साबितहो तो राहबीच मुकाम किया है बहुत दिनोंमें पहुंचेगा; जो शुभ खारिज आवे तो सुखसे पहुंचगया अशुभ खारिज आवे तो तकलीफसे पहुँचा है, जो अशुभ साबित तथा अशुभ मुन्कलीव आवे तो आदमी भेजा था सो मरगया है. इति. ३३ ॥

प्रश्न--स्त्री लडके रूसके चली गई है कौन दिशामें गई ? तहां प्रस्तार बनाके सातवें घरको देखै तहां कब्जुल खारिज, लह्यान, नुसुत्खारिज ये शकल आवें तो पूर्व दिशामें गई है. जो फरहा, जमात, अतवे दाखिल, हुमरा ये आवें तो पश्चिमदिशामें गई है जो [symbol] [symbol] [symbol] ये आवें तो उत्तर दिशामें गई जो जमात, कब्जुल दाखिल, नकी उकला, ये आवें तो दक्षिण दिशामें गई है॥३४॥

प्रश्न--मेरी वस्तु खोगई है ? अथवा मैं घरके भूल गयाहूँ सो मिलेगी कि नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके बारहवें घरको देखे जो शुभ दाखिल, नुसुदाखिल और अतवेदाखिल तथा अंकीश शकल हो तो घरमेंही खो गईहै जो नकी अतवेखारिज तथा नुसुत्खारिज लह्यान ये आवें तो कहीं रास्तेमें खोयगई है. जमात, हुमरा, बयाज, इज्जतमा आवे तो गढबीच खोगई, गर्दनपर मिट्टी पडी है. फरहा, कब्जुल, खारिज, तरीख, उकला ये होंतो राह बीच तुमने निगाह नहीं रक्खी तहां खोई है इति ॥ ३५ ॥

प्रश्न--चोरने वह वस्तु धरी है ? तो प्रस्तार बनाके ७ सातवें घरको देखे जो [symbol] [symbol] [symbol] [symbol] ये आवें तो ओले आदिमें धरी है. जो [symbol] [symbol] [symbol] [symbol] ये आवें तो छतमें अथवा धरतीमें गाडी है; जो [symbol] [symbol] [symbol] [symbol] ये आवें तो पानीपार धरी है ३६॥

प्रश्न--परदेशमें जाया चाहता हूँ फायदा है कि नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके नववें घरको देखै जो [symbol] [symbol] [symbol] आवें तो गमन करना अच्छा राजी खुशीसे उलटा चला आवेगा. जो नुसुत्खारिज

तरीखा फरहा ये आवें तो मेल मिलाप करके आवे रास्तेमें कोई दोस्त मिले उससे कुछ प्राप्ति होवेगी. जो ≡ यह आवे तो गमन मत कर जानेको खतरा है. जमात तथा इज्जतमा आवे तो मत जावो फायदा नहीं होगा. तुम्हारा काम यहांही होगा जो हुमरा आवे तो मार्ग बीच खतरा है चोरके हाथ शरीरको क्लेश होगा. इति ३७

प्रश्न--मेरा कौन दिशामें जाना अच्छा है? तहां प्रस्तार बनाके नवमें घरको देखे जो ≡ ≡ ≡ ≡ ये आवें तो दक्षिण दिशासे फायदा है; जो ≡ ≡ ≡ ≡ ये आवें तो पूर्व दिशामें जाना अच्छा है जो ≡ ≡ ≡ ये आवें तो पश्चिम दिशामें फायदा है. जो ≡ ≡ ≡ ये आवें तो उत्तरदिशासे लाभ है इति. ३८॥

प्रश्न--मेरा मिलना किन लोगोंसे होयगा? तहां प्रस्तारके नवमें घरको देखे ≡ आवे तो तो बडे आदमीसे मिलाप हो जायगा जो ≡ आवे तो मित्र लोगोंसे फायदा होगा मिलाप होयगा कछु फायदा होगा. जो ≡ यह आवे तो बडे लोगोंसे मिलाप होयगा जो ≡ यह हो तो धनवंतसे मिलाप होगा. जो ≡ ≡ यह हों तो भी किसी इल्मदारसे मिलाप होगा ≡ ये....शकल आवें तो बजाजोंसे मेल होगा जो ≡ ≡ ≡ ये आवें चोरोंसे मेलमुलाकात होके फायदाहोगा. जो ≡ हुमरा आवे तो किसी हिंसकदुष्टजनसे मिलाप होगा इति ॥ ३९ ॥

प्रश्न--वह पुरुष मुझपर प्यार करता है कि नहीं ? तहाँ प्रस्तार बनाके पहले घरको देखै शुभदाखिल शकल आवे तो बहुत प्यार करता है कछु देवे भी गा. जो कुभ मुन्कलीब शकल आवे तो कभी प्यार करता है कभी नहीं करताहै और जो साबित, जमात, बयाज इज्जतमा, हुमरा आवेतो मुद्दत(बहुत दिनों पीछे)मेहरबान होवेगा. जो शुभ खारिज लह्यान नुस्रतखारिज आवे तो थोडा मेहरबान होगा जो अशुभ खारिज हो तो सच्ची प्रीति नहीं करेगा इति. ४०

प्रश्न-मेरे हाथमें क्या वस्तु है? और कैसा रंग है? तहाँ प्रस्तार बनाके पहले घरको देखे. जो ⚍ यह आवे तो श्वेत रंग कहिये ⚌ आवे तो जर्द रंग है. जो ⚎ यह आवे तो सादा नेकरंग है जो ⚏ आवे तो श्वेत रंग है जो ⚍ ⚎ ये हों तो जर्द रंग है जो ⚍ यह होतो लाल रंग है जो ⚌ ⚏ यह होतो इसवस्तुका स्याह रंग है पहले घरको देखै जो वहाँ लह्यान, हुमरा आवे तो जर्द सुफेद रंग है और मीठी तथा कीमतकी वस्तु है जो ⚍ यह आवे तो खाकी रंगहै स्वाद मीठा है जो ⚍ यह आवे तो सफेद स्याह है स्वाद खट्टा है जो ⚌ यह आवे तो मुमुकसे, याने मिला रंग है बुस्क है जो ⚏ आवे तो श्याम रंग और कडुवा स्वाद है जो ⚏ यह आवे तो स्याह रंग कीमत खुसबोई है जो कब्जुल खारिज आवे तो सुफेद तथा हरा वर्ण है जो बयाज शकल आवे तो सुफेद तथा सुगंधिवाली वस्तु है जो ⚏ यह आवे तो लालरंग है जो ⚎ यह आवे तो लाल सुफेद खानेकी वस्तु है जो ⚏ यह शकल आवे तो जर्द सुफेद मीठी कीमतकी चीज है जो तरिखा आवे तो नीली वस्तु है. इति ॥ १ ४॥

प्रश्न-खोईहुई वस्तु कहाँहै तहाँ प्रस्तार बनाके चौथे घरको देखे जो दाखिल वा साबित शकल आवे तो पृथ्वी बीच वस्तुहै और खारिज तथा मुन्कलीव होतो घरमें नहीं है इति ४२ ॥

प्रश्न-परदेशीने स्त्री कीहै कि नहीं? तहाँ प्रस्तार बनाके सातवें घरको देखे जो शुभ दाखिल आवे तो स्त्री की है जो शुभमुन्कलीव आवे तो कीहै अथवा किया चाहताहै जो शुभसाबित आवे तो स्त्री किये बहुत दिन हुए जो अशुभखारिज अथवा शुभ खारिज आवे तो नहीं कीहै बुरे हालसे है जो अशुभ मुन्कलीवआवे तो करी नहीं किया चाहताहै हाथ नहीं आतीहै जो अशुभ साबित तथा अशुभ दाखिल आवे तो वहाँ परदेशी बुरे हालसे है इति ॥४३ ॥

प्रश्न-राजा पादशाह मुझको इनाम कोई ओहदा, देवेगा कि नहीं?तहाँ प्रस्तार बनाके दशवें घरको देखे जो शुभ दाखिल आवै तो इनाम आदि देवेगा शुभ मुन्कलीव आवे तोदिया चाहता है परंतु तुझको अजमायके देगा जो अशुभ दाखिल अशुभ मुन्कलीव अशुभ साबित आवे तो किसी मुखबरने तेरी चुगली करी है जो खारिज आवे तो तेरामुरातवा या तेरी पहलेकीभी इनाम आदि खोसी जावेगी इति ॥ ४४ ॥

प्रश्न-चोर शहरमें है अथवा बाहिर निकलगया? तहाँ प्रस्तार बनाके सातवें घरको देखे जो वहाँ शुभ दाखिलआवे तो शहरमें है बयाज, इज्जतमा, हुमरा आवे तो चोर शहरमें नहीं है जो जमात आवे तो वह चोर शहरमें है जो ☰ यह शकलआवे तो चोरबुरे हालसे है राह ऊपर बैठा है जो ⚍ ⚎ ये आवें तो कहीं कथा होनेकीजगह बैठा है इति ॥ ४५ ॥

प्रश्न-गतवस्तु मिलेगी कि नहीं ? तहाँ प्रस्तार बनाके चौदहवें घरको देखै जो कब्जुल दाखिल, अतवे दाखिल आवे तो कितनेक दिन पीछे मिलेगी शीघ्रही तलाश करेगा तो नहीं मिलेगी जो कब्जुल खारिज, अतवेखारिज, लह्यान आवें तो नहीं पावे जो फरहा तरीखा आवें तथा शुभ दाखिल आवे तो पावे जो मुन्कलीव आवें तो भी न पावे. इति ॥ ४६ ॥

प्रश्न-चोर कितने हैं और किस दिशामें गये हैं ? तहां प्रस्तार बनाके सातवें घरकी शकलको देखै वह शकल प्रस्तारमें जितने घरोंमें है उतनेही चोर हैं और प्रस्तारके सोलहों १६ घरोंको देखै तिन सब शकलोंकी शून्योंको इकट्ठी कर चारका भाग देवै एक बचे तो चोर पूर्वमें गया है दो २ बचें तो पश्चिममें गया है ३ बचें तो उत्तरमें गया चार बचें तो दक्षिणमें गया. इति. ॥ ४७ ॥

कोई पूछे कि मुझको फलानेके पाससे (अमुक जनसे) कर्जा मिलेगा कि नहीं ? तहां पूछनेवालेका १--२ घर है और जिसके पाससे कर्जा लिया चाहता है उसका७-८घर जानना इनको शुभाशुभ विचार और प्रस्तारके छठे घरको देखै तहां शुभ खारिज होवे तो कर्जा देवेगा लाभ होगा. जो अशुभ खारिज आवे तो विलंब (देरीसे) देवेगा. जो दाखिल साबित होय तो कर्जा न मिले बहुत कष्ट पावे मुन्कलीव आवे तोभी कर्जा नहीं मिले. इति ॥ ४८ ॥

अथ मुष्टिप्रश्नकथनम् ।

रमल डालके प्रस्तार बनाके सातवें घरको देखै तहां जो अग्नि तत्त्वकी शकल अथवा पूर्वदिशाकी शकल होतो धातुकी वस्तु है जो वायुकी तथा पश्चिम दिशाकी शकल हो तो जीवप्रश्न बताना जो सातमें घर उत्तर दिशाकी शकलहोतो तृण, काष्ठ, फल आदि कहना यदि सातवें घर कोई दक्षिण दिशाकी वा पृथ्वीतत्त्वकी शकल हो तो मुष्टिमें पत्थर, मणि, मोती, मूंगा आदि बताना. ॥ ४९ ॥ इति मुष्टिप्रश्नः ।

अब मूक प्रश्न देखनेका विचार कहते हैं--प्रस्तार बनाके पहले घरको देखै तहाँ जो पहले घरमें दाखिल अथवा साबितशकल आवे तो उसका प्रश्न लाभका कहना माल अथवा किसी जगहकी प्राप्तिका प्रश्न कहना और किसीसे मिलनेका है अथवा उसके पाससे कोई चीज जातीरही है उसकी प्राप्ति होनेका प्रश्न कहना, जो प्रथम घर शुभ दाखिल हो तो चिंतायुक्त, पराधीन, दुःख संकट है, किसीसे कुछ कहसकता नहीं या किसी जगह जाना चाहता है मगर जाना नहीं होता, जो प्रस्तारमें पहले घर शुभ खारिजपडे तो कोई पदार्थ दूर है उसकी प्राप्ति होनेका प्रश्न है नित्य विचार करता है भली वस्तु तेरे पाससे दूर है अथवा कोई चीज है उससे

छूटना चाहता है, अशुभ खारिज हो तो द्रव्यकी चिंतादूर होनेका प्रश्न है. मैं कुछ कार्य करता हूं भला होयगा अथवा बुरा-होयगा. यह प्रश्न है अशुभ साबित हो तो शत्रुके भयका प्रश्न है वा चिंताके भय तथा बन्धनका प्रश्न कहना जो मुन्कलीव हो तो उसका प्रश्न किसी शुभकार्यके बीच है रहनेका अथवा जानेका प्रश्न है अथवा कोई भला काम है ऐसा जानना जो अशुभ मुन्कलीव हो तो शुभ चिंतायुक्त है, गढ (किला) बीच अथवा अपने घरमें सलाह करता है,कोई बनिनहीं आवती है ऐसे जानो इति॥९०॥

अब मूक प्रश्न कहनेका दूसरा प्रकार कहते हैं–कि प्रस्तार बनाके १ पहले घरकी शकलको देखै जो वह १ घरकी शकल अग्नितत्त्वकी हो तो अग्नितत्त्वही खुला हुआ हो तो उसका प्रश्न द्रव्य-संबंधी कहना और वह शकल पुनरुक्त होके प्रस्तारमें जिस घर पडी हो उसी घरका हाल कहना और जो वायुकी शकल हो वायुकी बिंदुखुली हो तो जीवसम्बन्धी प्रश्न कहना, स्त्रीशकल हो तो स्त्रीका प्रश्न कहना, पुरुष हो तो पुरुषका कहना, जलकी हो और जलतत्वका बिंदु खुला हुआ होतो खेतीका काम अथवा बाग बगीचा लगाना इत्यादि प्रश्न कहना पृथ्वीकी शकल पृथ्वीके बिंदु खुला हुआ हो तो घरका मुलकका ग्रामका पृथ्वी प्राप्त होनेका प्रश्न कहना और जितने बिंदु खुले हुये हो तो उन सब तत्वोंके प्रश्न मिलायके कहना ॥ ९१ ॥ इति मूकप्रश्नप्रकारः

अब यथाक्रमसे सोलह शकलोंके नाम, स्वरूप खारिजादिक वा द्विस्वभावादिक संज्ञा, स्त्री पुरुष विचार, दिनरात्री बलवान्, शुभाऽशुभ, दिशा, तत्व, राशि, स्वामी, चर स्थिर संज्ञा, इन सबोंका कहते हैं. लह्यान शकल ⚍ है खारिज है, द्विस्वभाव पुरुष, दिनमें बली है, शुभ है, पूर्व दिशाकी है, अग्नितत्वकी है धनराशि है, बृहस्पति स्वामी है चरसंज्ञक है ॥ १ ॥

कब्जुलदाखिल शकल ⁚ है, दाखिल है, द्विस्वभाव है,
...ी है, रात्रिमें बली है, शुभ है, दक्षिण दिशाकी है, पृथ्वीतत्त्व,
राशि सूर्य स्वामी है, स्थिरसंज्ञक है ॥ २ ॥

...ब्जुलखारिज शकल ⁚ है, द्विस्वभाव है पुरुष है, दिनमें
... अशुभ है, पूर्व दिशा, अग्नितत्व, कुम्भराशि है राहुकी है,
...क है ॥ ३ ॥

...त शकल ☰ है सावित है, स्थिर है, नपुंसक है, संध्या-
...बली है, मध्यम है दक्षिणदिशाकी है, पृथ्वीतत्त्व, मिथुन-
...बुधस्वामी है, स्थिरसंज्ञक है ॥ ४ ॥

...ा शकल ⁚ है मुन्कलीब है, चर है, पुरुष है, सन्ध्या
... बली है, शुभ, पश्चिमदिशा, वायुतत्व, तुला राशि है,
...ामी है, चरसंज्ञक है ॥ ५ ॥

...डा शकल ⁚ है मुन्कलीव है, चर है, नपुंसक है, सन्ध्या
... बली है, अशुभ है, दक्षिणदिशाकी है, पृथ्वीतत्व, मकर-
...ानिश्चर स्वामी है, चरसंज्ञक है ॥ ६ ॥

...श शकल ☰ है दाखिल है, द्विस्वभावहै स्त्री है रात्रिमें बली
... है, दक्षिणदिशा, पृथ्वीतत्व, शनि स्वामी, कुंभराशि है,
...ज्ञक है ॥ ७ ॥

... शकल ⁚ यह है साबित है, स्थिर, पुरुष, तथा
...मयमें बली है, अशुभ है, पश्चिमदिशाकी है, वायुतत्व
...ाशि और मंगल स्वामी है, स्थिर संज्ञक है ॥ ८ ॥

...त शकल ⁚ यह है. साबित है, स्थिर है, संध्यासमयमें
... उत्तरादिशाकी है जलतत्व है कर्क राशि है, चंद्रमा
... स्थिर संज्ञक है ॥ ९ ॥

...खारिज शकल ⁚ यह है, द्विस्वभाव है पुरुष है,
...ी है शुभ है पूर्व दिशा है अग्नितत्व है, सिंहराशि है
...ी है, चरसंज्ञक है ॥ १० ॥

११

तुस्तुदाखिल शकल ⁝ यह है द्विस्वभाव है, स्त्री है, रात्रिमें बली है, शुभ है, उत्तरदिशा है, जलतत्व है, मीन राशि है, बृहस्पति स्वामी है, स्थिरसंज्ञक है ॥ ११ ॥

यह ⁝ अतवेखारिज शकल है, द्विस्वभाव है, पुरुष है, दिनमें बली है, अशुभ है, पूर्व दिशा है, अग्नितत्व है, केतुकी है, चरसंज्ञक है ॥ १२ ॥

मुन्कलीव शकल ⁝ यह है, चरसंज्ञक है, नपुंसक है, सन्ध्या समयमें बली है, अशुभ है, उत्तर दिशाकी है, जलतत्व है, वृश्चिक राशि है मंगल स्वामी है चरसंज्ञक है ॥ १३ ॥

अतवेदाखिल ⁝ यह शकल है, द्विस्वभाव है, स्त्री है, [illegible] बली है, शुभ है, पश्चिम दिशा है, वायुतत्व है, वृषराशि है, [illegible] स्वामी है, स्थिरसंज्ञक है ॥ १४ ॥

इज्जतमा शकल ⁝ यह है, साबित है, स्थिर है, नपुं[illegible] सन्ध्यासमयमें बली है मध्यम है पश्चिम दिशाकी है [illegible] है, कन्याराशि है, बुध स्वामी है, स्थिरसंज्ञक है ॥ १५ ॥

तरीखा शकल ⁝ यह है, मुन्कलीव है, चर है, नपुंस[illegible] सन्ध्या समयमें बली है शुभ है, उत्तर दिशाकी है, जलत[illegible] कर्क राशि है, चन्द्रमा इसका स्वामी है चरसंज्ञक है ॥ १६ ॥

ऐसी यह सोलह शकल जाननी इनकाही सब जगह काम आता है.

इति श्रीयवनमते रमलदानियाल भाषाग्रंथ समाप्त ।
